ज्ञानपीठ-लोकोदय ग्रंथमाला, हिन्दी-ग्रंथांक——३५

# पहला कहानीकार

Pahila Kahani Kar

श्री रावी

Shri Ravi

•




भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

ज्ञानपीठ-लोकोदय ग्रंथमाला, हिन्दी-ग्रंथांक—३५

# पहला कहानीकार

Pahila Kahani Kar

श्री रावी

Shri Ravi




भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला सम्पादक और नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन, एम० ए०

प्रकाशक
अयोध्याप्रसाद गोयलीय
मंत्री, भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस



प्रथम संस्करण
१९५४
मूल्य ढाई रुपया

मुद्रक
जे० के० शर्मा
इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस
इलाहाबाद

**उनको**

जो सुन सकते हैं
और
सुनना चाहते हैं

# भूमिका

'किसके लिए ?' 'पत्नियोंका द्वीप', 'उपजाऊ पत्थर' और 'पापका पुण्य'के बाद यह 'पहला कहानीकार' मेरी लम्बी कहानियोंका पाँचवाँ संग्रह है। इतनी लम्बी कहानियोंके बदले लघु कथाएँ—उनके लिए FABLE या PARABLE के अर्थके किसी दूसरे हिन्दी शब्दकी मुझे खोज है—ही अब मैं लिख रहा हूँ; और इस संग्रहकी कहानियोंमें, दूसरे संग्रहों-की अपेक्षा, मेरी इस नव-उपार्जित 'लघु कथा'की शैली और रूपका आभास अधिक स्पष्ट मात्रामें झलक आया है। इस दृष्टिसे भी यह संग्रह मेरे पिछले प्रकाशित कहानी-संग्रहोंसे आगेकी वस्तु है।

कैलास,
सिकन्दरा–आगरा
१–३–१९५४

—रावी

# विषय-सूची

---

# पहला कहानीकार

एक समय था जब दुनियाके लोग बहुत सीधे-सादे और सत्यवादी होते थे। वे जो कुछ देखते थे, वही कहते थे और जो कुछ कहते थे वही करते थे।

एक बार एक आदमीने एक आदमीसे एक गाँवके एक आदमीके बारे-में एक बात कही। यह बात कानों-कान कई आदमियों तक पहुँच गई।

इस समाचारके कुछ और आगे बढ़नेपर लोगोंको पता लगा कि उस नामका वहाँ न कोई गाँव था, न उस नामका कोई आदमी था और न किसी आदमीने वैसा काम ही किया था, जैसा कि उस समाचारमें बताया गया था।

जिस आदमीने यह झूठा समाचार सबसे पहले फैलाया था, उसे खोज निकालनेमें कोई कठिनाई न हुई। लोग उसे पकड़कर उस देशके राजाके पास ले गये।

"इस आदमीने एक गाँवके एक आदमीके बारेमें एक बात कही है; लेकिन न तो उस नामका कोई गाँव ही है, न आदमी और न किसीने वैसा काम ही किया है, जैसा कि इसने अपनी खबरमें बताया है। अनहोनी बात कहकर इसने लोगोंको भुलावेमें डाला है। इसे उचित दण्ड मिलना चाहिए"—लोगोंने राजाके सामने उस पर यह आरोप लगाया।

"क्या तुम जानते थे कि इस नामका कोई गाँव मौजूद है ?" महाराजने अपने न्यायासनसे अपराधीसे प्रश्न किया।

"नहीं महाराज !"

"क्या तुम जानते थे कि इस नामका कोई आदमी मौजूद है ?" दूसरा प्रश्न हुआ।

'नहीं महाराज !"

"क्या तुमने किसी आदमीको वैसा काम करते देखा था, जैसा कि तुमने अपने समाचारमें बताया था ?" तीसरा प्रश्न हुआ।

"नहीं महाराज !"

"तो फिर तुमने ऐसी अनहोनी खबर क्यों फैलाई ?"

"महाराज !" अपराधीने अपनी स्थिति स्पष्ट की, "मैंने किसी बुरे कामकी नहीं, बल्कि एक अच्छे कामकी ही खबर फैलाई है—ऐसे कामकी जिसे अगर कोई करे तो उससे दूसरोंका बहुत भला हो और स्वयं उसका बहुत यश हो। उस कामको करनेके लिए कोई न कोई आदमी चाहिए था, और उस आदमीके होनेके लिए कोई न कोई गाँव भी आवश्यक था। इसलिए मैंने उस खबरके साथ आदमी और गाँवके नाम भी मनसे सोचकर जोड़ दिये थे।"

राजा असमंजसमें पड़ गया। उस दिन तक किसी भी आदमीने किसीसे कोई अनहोनी या अन-हुई बात नहीं कही थी और इस प्रकारके अपराधके लिए राजकीय दण्डके नियमोंमें कोई व्यवस्था भी नहीं थी। यह एक सर्वथा नये ढंगका अपराध था।

उचित न्यायका आश्वासन देकर राजाने लोगोंको विदा किया और अपराधीको राजकीय बन्दीगृहमें आदर और आरामके साथ रखवा दिया।

राजाने इस नये अभियोगके सम्बन्धमें राजगुरुके साथ परामर्श किया। राजगुरुके लिए भी यह एक नये ढंगका अपराध था। उन्होंने देवराज इन्द्रके सामने यह अभियोग उपस्थित किया।

देवराज इन्द्रकी आज्ञासे देवदूतोंने भूमण्डलमें पूरी छान-बीन करके अपना वक्तव्य दिया :

"पृथ्वीके वर्तमान कुल ८,३२,४८० ग्रामों-नगरोंमें ८०,१६,८०,४२१ मनुष्य इस समय रह रहे हैं और उन सबने मिलकर लेखराज महा-चौहानके रजिस्टरोंके अनुसार, अबतक ३७,१४,५५,८०,३५,१७,८२७ कर्म किये हैं। जिस गाँव, मनुष्य और कर्मकी खोज करनेकी हमें आज्ञा

दी गई थी उन तीनोंका अस्तित्व उन गाँवों, मनुष्यों और उनके अब तकके कर्मोंमें कहीं भी नहीं है।"

अभियुक्त मनुष्यका अपराध प्रमाणित हो गया। उसने सचमुच एक अस्तित्वहीन बात कही थी। मनुष्यजातिकी ओरसे यह पहला ही इतना विचित्र और भयंकर अपराध था। स्वयं देवराज इन्द्र भी नहीं जानते थे कि ऐसा भी अपराध कोई मनुष्य कर सकता है। इस अपराधका प्रभाव कितना व्यापक हो सकता है और इसका दण्ड क्या होना चाहिए, इसी सोचमें वे पड़ गये।

अपनी सहायताके लिए इन्द्रने धर्मराज यमकी ओर दृष्टि फेरी और कुछ देर तक टकटकी लगाये उनकी ओर देखते रहे; किन्तु यमराज स्वयं इस नई पहेलीकी गुत्थियोंमें उलझ गये थे और उनकी दण्ड-व्यवस्थाकी कोई भी धारा इस अपराधीपर लागू नहीं हो रही थी। लाचार वह भी गर्दन घुमाये दूसरी ओरको इस प्रकार देखने लगे जैसे उन्हें इन्द्रके देखनेकी ख़बर ही न हुई हो!

"अपराधीका अपराध गम्भीर है," देवराज इन्द्रने कहा। "उस पर कोई निर्णय देनेके पहले हमें देवगुरुका परामर्श लेना होगा।"

देवगुरु बृहस्पतिको उसी समय देव-सभामें आमंत्रित किया गया।

"आपने भूलोककी छान-बीन करा ली है," बृहस्पतिदेवने अभियोगकी सारी कथा सुन चुकनेके पश्चात् कहा, "लेकिन क्या भुवर्लोक और स्वर्ग-लोककी भी छान-बीन कराकर आपने निश्चय कर लिया है कि इन लोकोंमें भी उस नामका कोई गाँव, उस नामका कोई व्यक्ति और उस प्रकारका कोई किया हुआ कर्म नहीं है?"

देवगुरुके इस प्रश्नसे सारी देव-सभा सोच-विचारमें पड़ गई। साधारणतया मनुष्योंके कार्योंसे स्वर्ग और भुवर्लोकका कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिए था।

'अपराधमें कहे हुए नामोंका कोई गाँव, कोई व्यक्ति और कोई कर्म

स्वर्ग और भुवर्लोकमें निर्मित नहीं हुआ।" स्वर्ग और भुवर्लोकके तत्सम्बन्धी विभागोंके अधिकारियोंने उत्तर दिया।

"अधिक अच्छा हो कि आप लोग इन बातोंकी खोज एक बार और अपने लोकमें कर लें।" देवगुरुने मुसकराते हुए कहा।

देवगुरुके आदेशका पालन हुआ। अनेक कामदूत और देवदूत इस खोजके लिए छोड़ दिये गये।

अगले दिन देव-सभामें उन्होंने आकर सूचना दी कि स्वर्ग और भुवर्लोक दोनोंमें उस नामका गाँव, और उस नामका व्यक्ति विद्यमान है और उसने सचमुच उस प्रकारका कर्म किया है।

सारी देव-सभा इस समाचारसे स्तब्ध रह गई।

देवगुरुने कनखियोंसे देखते हुए एक व्यंग्यपूर्ण मुसकान उन अधिकारियोंकी ओर डाली जिन्होंने पिछले दिन विपरीत उत्तर दिया था।

"किन्तु गुरुदेव!" उन्होंने हाथ जोड़कर उत्तर दिया, "हमने तो अपने लोकोंमें वैसे किसी गाँव, व्यक्ति या कर्मका निर्माण नहीं किया।"

वृहस्पतिदेवका स्वभाव-सिद्ध सुकोमल अट्टहास देव-सभामें गूंज उठा।

"आप अकेले ही ब्रह्माके सहकारी, सृष्टिके निर्माता नहीं हैं, मनुष्य भी उनका सहकारी और आपका सहयोगी है। जिस प्रकार ब्रह्माजी अपने संकल्प-वलसे और आप लोग अपने ध्यान-वलसे रचनाके विविध रूपोंका निर्माण करते हैं, उसी प्रकार मनुष्यका भी काम है कि वह अपने कल्पना-बलसे वस्तुओंका निर्माण करे। वह आपका समकक्ष है और आपके लोकोंके निर्माणमें भी उसका प्रायः उतना ही हाथ है, जितना उसके लोकके निर्माणमें आपका। जिस मनुष्यको आप अपराधीके रूपमें अपने सामने रक्खे हुए हैं, वह मनुष्य-जातिमें ब्रह्माका विशेष पुत्र और मनुष्य-जातिका प्रधान शिक्षक है। कल्पना उसका कार्योपकरण है और कहानीकार उसका जातिवाचक नाम है। आपका अभियुक्त मनुष्य-

जातिमें पहला पूजनीय कहानीकार और ब्रह्माका सर्वप्रथम सह-निर्माता है!"

× × ×

कहते हैं कि देवताओंके और मनुष्योंके भी आगामी बृहत्तम शब्द-कोशमें 'झूठ' के अर्थका कोई शब्द नहीं है और जो कुछ भी मनुष्यके मुखसे निकल सकता है, उसका मूर्त अस्तित्व कहीं न कहीं अवश्य होता है।



# कहानीका मोल

तीन यात्री घोड़ों पर सवार देश-परदेश भ्रमण करते करते एक गाँवमें जा पहुँचे । वहाँ उनकी दृष्टि एक अत्यन्त रूपवती तरुणी पर पड़ी और वे तीनों एकदम उसपर मोहित हो गये । इस सुन्दरीको अपने साथ अपने नगरको ले चलकर उससे विवाह कर लेना उन तीनोंने तय किया ।

यह कथा बहुत पुराने युगकी तो नहीं, फिर भी एक ऐसे समयकी है, जब कि देवता लोग मनुष्यके धर्मके साथ क़दम-ब-क़दम चलनेमें कभी-कभी पिछड़ जाते थे और उनका प्रबन्ध अपर्याप्त सिद्ध होता था । यह देवताओंकी पिछड़तका ही एक समय था, क्योंकि संसारमें उस समय स्त्रियोंकी उत्पत्ति इतनी कम रह गई थी कि कई-कई पुरुषोंको मिलकर एक एक स्त्रीसे विवाह करना पड़ता था । स्पष्टतः इसमें दोष मनुष्योंका नहीं, बल्कि विधाता और उसके सहकारी देवताओंका ही था ।

ये तीनों यात्री सुन्दर और युवा थे और देशकी राजधानीके धनी-मानी नागरिक थे । ये एक ही समृद्ध परिवारके भाई-बन्द थे ।

इस सुन्दरीको अपने साथ ले चलने और विवाह करनेके लिए किस तरह राज़ी किया जाय और किस प्रकार इससे बातचीत प्रारम्भ की जाय, तीनों आपसमें विचार करने लगे । अन्तमें बड़े भाईने इस कामका ज़िम्मा अपने ऊपर लिया और उस सुन्दरीके पास जाकर बोला—

"सुन्दरी, मैं और मेरे दो और भाई तुमसे विवाह करना चाहते हैं । हम तीनों राजधानीके रहनेवाले धनी-मानी व्यक्ति हैं ।"

सुन्दरीने अपनी भवों पर बल देकर युवककी ओर देखा और कहा—

"आप मुझसे विवाह करना चाहते हैं, क्यों ? क्या आप समझते हैं कि मुझसे विवाहके इच्छुक कोई दूसरे युवक नहीं हैं ? या दूसरे युवक

आपके बराबर सुन्दर या धनी नहीं हैं ? मैंने और आपने एक दूसरेके लिए कुछ किया भी नहीं, मेरा आपका कोई परिचय भी नहीं, आपके दूसरे भाइयोंको मैंने देखा तक नहीं। इस गाँवके और आसपासके अनेक गाँवोंके जो सुन्दर युवक मुझसे इतने दिनोंसे प्रेम करते आ रहे हैं, क्या आप समझते हैं कि मुझे उनका कुछ भी ध्यान नहीं होना चाहिए ?" सुन्दरीने कुछ रूखे-से स्वरमें कहा।

"तुम्हारी इच्छा।" युवकने हताश-से स्वरमें कहा और लौट गया।

उसके असफल लौट आनेपर दूसरे भाईकी बारी आयी। सुन्दरीके पास जाकर उसने कहा—

"सुन्दरी, तुम जैसी सुन्दर तरुणी मैंने आज तक नहीं देखी थी। सच-मुच वे बड़े भाग्यवान् पुरुष होंगे, जिनसे तुम विवाह करोगी। मैं और मेरे दो भाई तुम्हारे सुन्दर रूप पर मुग्ध हैं और हम तीनों भी तुमसे विवाह करनेके अभिलाषी हैं।"

"आपमें सुन्दरताकी परख अच्छी है।" युवतीने मुसकराते हुए कहा, "क्यों न हो, आप स्वयं भी तो सुन्दर हैं। आप समझ सकते हैं, कुछ और भी युवक मुझसे प्रेम करते हैं और विवाहके इच्छुक हैं। आप कुछ दिन इस गाँवमें रहें तो मैं दूसरे युवकोंके साथ आपकी इच्छा पर भी विचार कर सकती हूँ।"

"यहाँ अधिक दिन रुकना तो हमारे लिए बहुत कठिन होगा, फिर भी मैं जाकर अपने दूसरे भाइयोंसे सलाह करूँगा।" युवकने कहा और वह भी कुछ निराश-सा ही लौट गया।

उस गाँवके बाहर जिस पेड़के नीचे ये लोग ठहरे हुए थे, वहाँ पहुँच कर उसने अपनी बात-चीत दोनों भाइयोंको सुनाई। जिस समय वह सारा हाल सुना रहा था, गाँवके कुछ नवयुवक उधरसे निकले। उनमें से दो-तीन तो इन तीनों यात्रियोंसे कहीं अधिक सुन्दर थे।

"इस गाँवमें हम लोगोंसे भी अधिक सुन्दर कुछ युवक मौजूद हैं"

तीसरे भाईने इन युवकोंको देखकर अपने भाइयोंसे कहा, "और वह लड़की निश्चय ही इनसे गहरा प्रेम करती होगी। इनकी सुन्दरताके आगे वह हमें कभी नहीं स्वीकार करेगी और हमारा यहाँ ठहरना व्यर्थ ही होगा। यद्यपि यहाँके लोगोंमें हमारे बराबर धनवान् कोई नहीं हो सकता, पर पुरुषोंके रूपके आगे धनको नवयुवती सुन्दरियाँ कभी नहीं देख सकतीं। फिर भी इस स्थानको छोड़नेसे पहिले मैं भी उस सुन्दरीसे एक बार मिल कर कुछ बात कर देखूँगा।"

इस तीसरे युवकने अपने क़ीमती वस्त्राभूषण उतारकर साधारण कपड़े पहिन लिये और दिन ढलते ही उस सुन्दरीके घर पहुँचकर द्वारपर थपकी दी। सुन्दरीने बाहर आकर द्वार खोल दिये।

"मैं एक यात्री हूँ। दिन भरका थका और भूखा-प्यासा हूँ। क्या आप मुझे एक बारका भोजन और रातमें सोनेके लिए अपने घरके बाहर-का एक कोना दे सकती हैं?"

"अवश्य दे सकती हूँ।" युवतीने आगन्तुकको एक बार सिरसे पैर तक देखकर कहा, "इसमें मेरा क्या हर्ज है! परदेशीका आतिथ्य करना तो हम सबका परम धर्म है।"

सुन्दरीने घरकी एक कोठरीमें अतिथिको आरामसे ठहरा दिया। भोजन कराते समय युवतीने अपने अतिथिका और परिचय जानना चाहा।

"मैं जातिका कत्थक हूँ और भारत देशका रहनेवाला हूँ। हमारी जातिके लोग कथाएँ सुनानेमें बहुत प्रवीण होते थे और राजदरबारोंमें कथाएँ सुना-सुनाकर उन्होंने बड़ी-बड़ी जागीरें पाई थीं। बादमें हमींमें से कुछ लोगोंने गाने-बजानेकी कलामें दक्षता प्राप्त कर ली और उनकी एक अलग शाखा बन गई। मैं अपने राज्यसे एक दूसरे राजाके दरबारमें कथा सुनाने ही जा रहा हूँ। दुर्भाग्यके चक्रसे मेरी दशा अच्छी नहीं रह गई है, पैदल ही यात्रा कर रहा हूँ। सारा पाथेय समाप्त हो जानेके कारण आज आपके घर शरण लेनी पड़ी। आप कृपा न करतीं तो वृक्षके

नीचे जागकर भूखे ही रात बितानी पड़ती।" युवकने अपना परिचय दिया।

"मेरे बड़े भाग्य कि आप मेरे अतिथि हुए। राजदरबारोंके कत्थक बड़े भाग्यसे ही हम जैसे साधारण लोगोंके घर पहुँचते हैं। धन न सही, गुणमें तो आप बहुत ऊँचे हैं। क्या आप एक-आध अच्छी-सी कहानी मुझे भी सुना सकेंगे ?"

"अवश्य, अवश्य ! आप-जैसी सुन्दर नव-युवतीको कौन ऐसा कत्थक होगा जो कहानी न सुनाना चाहे। लेकिन मेरी कहानियाँ झूठी और गढ़ी हुई ही होंगी। क्या ऐसी कपोल-कल्पित कहानियाँ सुनना आप पसन्द करेंगी ?"

"कोई हर्ज नहीं ! कहानी कल्पित होनेसे मेरा क्या हर्ज है। उस कहानीके नायक-नायिकाओंसे मुझे कुछ लेना-देना नहीं है। आपकी कहानी सुन्दर और मनोरंजक तो होगी ही, यही यथेष्ट है।"

"निस्संदेह मैं आपको एक सुन्दर और मनोरंजक-सी कहानी सुनाना पसंद करूँगा, यदि उसकी अवास्तविकताको क्षमा करें।" युवकने कहा।

"मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप मुझे वैसी कहानी अवश्य सुनायें। उसकी अवास्तविकतासे मुझे कोई असन्तोष न होगा।"

युवकने कहानी सुनानी आरम्भ की :

"फिह्यून देशकी एक सुन्दरी कन्या जब सयानी हुई तो उसे अपने लिए पतियोंकी खोज हुई। अपने पास-पड़ोसके चार-पाँच नवयुवकोंको, जो शेष दूसरोंसे अधिक सुन्दर और सुयोग्य थे, अपना पति बनानेका उसने मन ही मन निर्णय कर लिया। एक दिन चीन देशकी एक बुढ़िया अपने उड़नखटोले पर यात्रा करती-करती उसके यहाँ आकर ठहरी। उस कन्याकी सुन्दरता पर रीझकर बुढ़ियाने उसे बताया कि तुम्हारे योग्य पति तो चीन देशमें ही मिल सकते हैं। वहाँके पुरुष भी सुन्दर होते हैं और यहाँकी केवल स्त्रियाँ ही सुन्दर होती हैं। फूमाने—उस लड़कीका नाम फूमा था—कहा

कि मैंने तो अपने लिए चार-पाँच सुन्दर पति यहीं आस-पासके गाँवोंसे छाँट लिये हैं, और चीन देशके पति मुझे मिल भी कैसे सकते हैं ? बुढ़ियाने कहा "यह तुम्हारी मर्ज़ी है। अगर आस-पासके गाँवोंमें से न चुनकर तुम अपने ही गाँवमें से चार-पाँच पति पसन्द कर लेतीं तो तुम्हें और भी कम परिश्रम करना पड़ता और घर बैठे ही यह चुनाव हो जाता । लेकिन अपने ही गाँवसे पति चुनने पर वे सब इतने सुन्दर न होते, जितने कई गाँवोंसे चुनने पर हुए होंगे। और फिर तुम्हारी जैसी सुन्दर स्त्रीके केवल चार-पाँच ही पति हों, यह तो बड़ी शर्मकी बात है । हमारे देशमें तुम्हारी जितनी सुन्दर स्त्रियोंको तो आठ-आठ, दस-दस पति मिल जाते हैं। तुम अगर मेरे साथ कुछ दिनोंके लिए मेरे देशको चलो तो वहाँके पुरुषोंको भी देख सकती हो। यहाँके पतियोंको निराश किये बिना तुम कुछ थोड़े-से पति वहाँसे भी अपने लिए ला सकती हो। तुम जैसी सुन्दर स्त्रियोंमें तो साहस और उद्योग अवश्य होना चाहिए।"

"फूमाके मनमें यह बात कुछ जँच गयी और वह बुढ़ियाके साथ चीन देश-को जानेके लिए तैयार हो गई। अपने माँ-बाप और पसंद किये हुए नवयुवकों-को जल्द ही लौटनेका वचन देकर और उन्हें धीरज बँधाकर वह बुढ़ियाके साथ उसके उड़नखटोलेपर बैठकर चल दी। माँ-बापको उसने यह कह कर प्रसन्न कर लिया कि चीन देशसे मैं अपने लिए कुछ ऐसे पति लाऊँगी जो सुन्दर ही नहीं, खेती करने और रेशमके कीड़े पालनेमें भी निपुण होंगे।

"अपने देशमें पहुँचकर बुढ़ियाने फूमाको बड़े सुख-सत्कारसे रखा। फूमाने देखा कि चीन देशके पुरुष आमतौरपर फिहयूनके पुरुषोंसे अधिक सुन्दर अवश्य थे, पर अपने देशमें जिन चार-पाँच युवकोंको उसने चुना था, उनके बराबर सुन्दर कोई युवक चीन देशमें उसे दिखाई नहीं दिया।"

"तो उस बुढ़ियाने बेचारी फूमासे झूठ ही कह दिया था" अचानक कथा सुननेवाली सुन्दरी बोल उठी, "चीन देशमें फिहयूनके बराबर सुन्दर पुरुष नहीं थे ?"

"थे क्यों नहीं।" कत्थक बने हुए युवकने कहा, "थे अवश्य, लेकिन उस समय तक फूमाको उतना सुन्दर कोई पुरुष मिला नहीं था। और फिर यह तो कहानी है, कोई सच्ची बात तो है नहीं! क्या आप इसे भूल गयीं?"

"बुढ़ियाके घरके आस-पास रहनेवाले कुछ युवक फूमा पर मोहित हो गये। फिहयूनके युवकोंके मुक़ाबले चीनके युवक प्रेम करनेमें अधिक निपुण और सच्चे होते थे। जातीय स्वभावसे ही वे लोग सेवाशील, मीठा बोलने और सदैव मुसकराते रहनेवाले थे। इस स्वभावका, विशेषकर मुसकराते रहनेकी आदतका, नतीजा यह था कि उनकी सुन्दरता टिकाऊ होती थी और उनके चेहरे काफी उम्र बीतने तक भी भरे हुए और सुन्दर बने रहते थे।"

"पुरुषका मुसकराता हुआ चेहरा" श्रोता सुन्दरी बोल उठी, "मुझे भी बहुत अच्छा लगता है और अगर मुसकरानेके स्वभावसे चेहरेकी सुन्दरता टिकाऊ हो जाती हो तो और भी अच्छी बात है। यहाँके पुरुषोंमें मुसकराने-का स्वभाव बहुत कम है। क्या सचमुच कोई ऐसा देश है, जहाँके पुरुष मुसकराते ही रहते हों?"

"यह केवल एक कहानी है सुन्दरी!" कत्थक युवकने एक मुसकान भरी दृष्टि उसकी ओर डालते हुए कहा, "कहानियाँ सच नहीं हुआ करतीं। लेकिन यह बात तो बिलकुल ठीक है कि मुसकरानेके स्वभावसे सुन्दरता केवल टिकाऊ ही नहीं हो जाती, बल्कि बढ़ भी जाती है; और जिनमें मुसक-रानेका स्वभाव नहीं होता, उनके सुन्दर चेहरे भी बहुत जल्द झुर्रियोंदार और कुरूप हो जाते हैं।"

"यह ठीक जान पड़ता है" सुन्दरीने कहा, 'फिर फूमाने क्या किया?'

"फूमाने पहिले तो सोचा कि इन युवकोंकी ओर अधिक ध्यान न दे और अपने देशको लौटकर अपने पसंद किये हुए युवकोंसे ही विवाह कर ले। पर चीन देशके युवक प्रेम करनेमें बहुत सच्चे और निपुण थे और

२

प्रेम करनेकी कला भी उन्हें वहुत अच्छी आती थी। इस कलाको जानने वाला पुरुष साधारण सुन्दर होता हुआ भी जब चाहे तव स्त्रीकी दृष्टिमें विशेष सुन्दर दीख सकता है। उनमेंसे कुछ नवयुवक जो फूमासे सचमुच गहरा प्रेम करने लगे थे, फूमाको भी विशेष सुन्दर दीख पड़ने लगे। उनका प्रेम इतना गहरा था कि वे उसे उसके देशके पसंद किये हुए युवकोंसे भी अधिक सुन्दर लगने लगे।

"फूमाका चीन देशका जाना सफल हुआ।" श्रोता सुन्दरीने सन्तोष और उल्लासके स्वरमें कहा, "यह भी सम्भव है कि मुसकरानेके स्वभाव-के कारण उनकी सुन्दरता सचमुच वढ़ ही गयी हो।"

"यह तो है ही।" कथाकारने कहा, "लेकिन इससे भी बड़ी चीज उनका प्रेम था। प्रेम सुन्दरताको जगाता ही नहीं, पैदा भी कर सकता है। और फिर वे युवक वहुत अधिक नहीं, किन्तु साधारणतः काफी सुन्दर तो पहिलेसे ही थे। विना प्रेमके तो सुन्दर पुरुष भी सुन्दर नहीं दीखते रह सकते। फूमा धीरे-धीरे उन युवकोंपर मुग्ध हो गयी।"

"उन युवकोंके लिए भी यह अच्छा हुआ। जिन पर वह मुग्ध हुई वे कितने थे?" सुन्दरीने पूछा।

"विशेष रूपसे जिनपर वह मुग्ध हुई वे तीन थे। प्रेमकी कला और सचाईमें ये तीनों विशेष निपुण थे। इस कलाके जाननेवाले पुरुष स्वयं ही नहीं वल्कि स्त्रियोंको भी जवतक और जितना चाहें सुन्दर और युवा बनाये रख सकते हैं।"

"प्रेमकी ऐसी भी कोई कला होती है" सुन्दरी श्रोताने उत्सुक होकर कहा, "जिससे स्त्रियाँ अधिक समय तक सुन्दर और युवा वनी रह सकें? हमारे देशके पुरुष तो इस तरहकी कोई कला नहीं जानते।"

"बहुत कम देशोंके लोग इस कलाको जानते हैं। इस कलाको जानने वाले पुरुष सदा प्रसन्न रहते हैं और स्त्रियोंको भी प्रसन्न रखते हैं। वे स्त्रियोंका सम्मान करते हैं, कठिन कामोंमें उन्हें हाथ नहीं डालने देते; सुन्दरताको

बढ़ानेवाले लेप, औषधियाँ और आभूषण तैयार करते हैं; स्त्रियोंकी गुलामी न करके बराबरीका बर्ताव करते हैं; वे खेतों, चरागाहों और रेशम-घरोंमें अपना समय नहीं गँवाते, वल्कि स्त्रियोंके साथ मनोरंजक वातें करने, उन्हें हंसाने और उन सब तरीकोंसे जिन्हें स्त्रियाँ पसन्द करती हैं, उनसे छेड़-छाड़ करनेके लिए वहुत-सा समय निकाल लेते हैं। वे दूसरे पतियोंके साथ स्त्रियोंके प्रेम या मिलने-जुलनेमें कभी दखल नहीं देते। वे उनके सुख और आरामका सदैव ध्यान रखते हैं, उनकी इच्छाके विरुद्ध कोई काम नहीं करते और अपनी पत्नीको सुन्दर-सुन्दर पुत्र और पुत्रियाँ देनेमें कभी आलस्य नहीं करते। पत्नीके रूप और स्वभावकी कदर और प्रशंसा करना भी वे जानते हैं, और उसके सुखके लिए यथेष्ट धन कमाने और सामग्री जुटानेमें कमी नहीं रखते।"

"यह प्रेमकी कला भी वहुत अच्छी चीज़ है। यहांके सुन्दर युवकोंको भी यह कला नहीं आती। फूमा वड़ी भाग्यशालिनी थी" सुन्दरीने कुछ लम्वी-सी संतोष या असंतोषकी एक साँस लेकर कहा।

"फूमाने उन तीनों युवकोंको अपने साथ फिहयून चलने और वहाँ उनसे विवाह करलेने का निमंत्रण दिया, पर उन्होंने एक दूसरी ही बात फूमाके सामने रखी। उन्होंने फूमासे कहा 'तुम हमारे देशमें ही बस जाओ और अपने माता-पिता तथा चारों-पांचों प्रेमियोंको भी यहीं बुलाकर वसा लो और उन प्रेमियोंसे भी विवाह कर लो। चार-पांच वे और तीन हम, तुम्हारे सात-आठ पति अभी से हो जायंगे और हमलोग कुछ और भी सुन्दर और सुयोग्य पति तुम्हारे लिए जुटानेका प्रयत्न करेंगे।' चीनके इन युवकोंके पास धन बहुत था। वे जीवन-भर फूमाके इतने परिवारको अपने साथ सुख-पूर्वक रख सकते थे।"

"कितने अच्छे थे चीन देशके वे युवक!" श्रोता सुन्दरी उल्लसित स्वरमें बोल उठी, "पत्नीकी गुलामी न करने पर भी वे इतने उदार होते हैं। यहाँके पुरुष तो अपनी पत्नीके दूसरे पतियों और प्रेमियोंको भीतर ही भीतर

जलनकी दृष्टिसे देखते हैं, और उनसे सहयोग नहीं करना चाहते। चीन देशके पुरुष इतने अच्छे होते हैं !"

"लेकिन यह कहानी है !" श्रोता सुन्दरीने क्षण भर मौन रह कर, फिर निराशाभरी साँस खींचकर कहा, "और कहानियाँ सच नहीं हो सकतीं। कितना अच्छा होता यदि कहानियाँ सच हो सकती होतीं !"

"कहानियाँ तो सच नहीं हो सकतीं, लेकिन कहानियोंकी कुछ बातें सच हो सकती हैं।" कहते-कहते कत्थक युवकने सुन्दरीके एक कपोल पर लटक आयी हुई उसके केशकी एक पतली-सी लटको अपनी अंगुलियोंसे संभाल दिया।

सुन्दरीके सीनेमें एक अंगड़ाई-सी उठी और उसने एक अधूरी-सी अंगड़ाई ली।

"कौनसी बातें सच हो सकती हैं ?" उसने पूछा।

"एक तो यही कि कोई-कोई देश ऐसे हैं जहाँके पुरुष इतने अच्छे होते हैं।" युवकने कहा।

"क्या आप सचमुच किसी ऐसे देश और वहाँके रहने वाले ऐसे सुन्दर युवकोंको जानते हैं ?" सुन्दरीने पूछा।

"मैं जानता हूँ, और ऐसे देशके बिलकुल पासके ही देशका रहने वाला हूँ। लेकिन इससे आपको क्या ?" युवकने एक मोहक-सी मुसकान होठों पर लाकर पूछा।

"मैं शायद—" सुन्दरीने कुछ संकोच और आतुरताके मिले-जुले स्वरमें कहा, "शायद ऐसे देशको और वहाँके कुछ युवकोंको एक बार देखना चाहूँ।"

"तब मैं भी शायद आपकी कुछ सहायता कर सकूँ। आप अपने प्रेमी युवकोंको भी साथ ले चलना चाहेंगी ?"

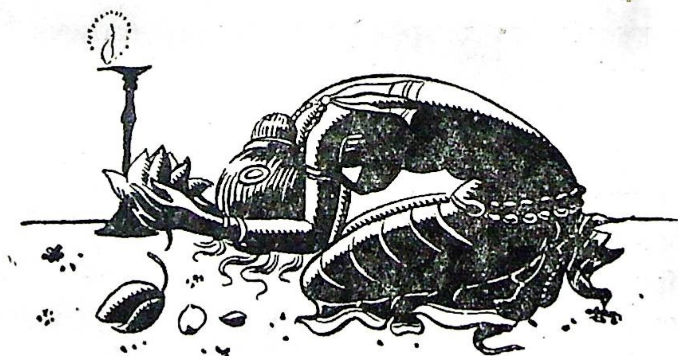
"उनकी बात बादमें देखी जायगी। मैं पाँच-छः पतियोंसे अधिक नहीं रखना चाहती। अच्छे पतियोंके चुनावमें मुझे आलस और पक्षपात नहीं करना चाहिए।"

कत्थक बने हुए युवकने अपनी कहानी, जो पूरी हो ही आई थी, पूरी की और सो गया। सुन्दरीको उस रात नींद नहीं आई।

दूसरे दिन सुबह वे तीनों यात्री उस सुन्दरीको साथ लेकर अपने देशको लौट गये। चीन देशके तथा-कथित युवकोंकी सब बातें थोड़ी बहुत इन युवकोंमें मौजूद थीं।

× × ×

मेरे कथागुरुका कहना है कि कभी बहु-पत्नी और कभी बहु-पतिके युग मानव-समाजके इतिहासमें कई बार आये-गये हैं और निकट भविष्यमें ही बहु-पत्नीका युग पुरुषोंकी कमीके कारण फिरसे आता दीखता है; परन्तु मानव-समाजने सत्यकी अपेक्षा कथा पर ही सदैव अधिक ध्यान दिया है और सत्य पर अधिक ध्यान देनेकी बारी अभी तक उसके इतिहासमें नहीं आई और न आनेकी कोई सम्भावना ही समीप दीखती है।



# आत्मदान

यह कथा अधूरी है, इसलिए मानव-समाजके आधे भाग, केवल पुरुष-वर्गके लिए ही रुचिकर और ग्राह्य हो सकती है।

किसी युगमें पृथ्वी पर एक छोटा-सा देश था, जिसमें केवल स्त्रियाँ ही स्त्रियाँ थीं। उनकी अधिष्ठात्री एक कुलदेवी थी और वे स्त्रियाँ युवा, पूर्णतया हृष्ट-पुष्ट और अमर थीं, अलबत्ता वे सभी बहुत कुरूपा थीं।

एक समय ऐसा आया कि प्राकृतिक प्रकोपोंकी मारी किसी पुरुष जातिको अपना देश छोड़कर इस स्त्री-देशमें आकर बसना पड़ा। स्त्रियोंकी कुलदेवीने उन्हें बसनेकी अनुमति दे दी। उस युगके पुरुष भी साधारणतया असुन्दर थे, पर उनमें कुछ सामान्यतया सुन्दर और कुछ थोड़ेसे विशेष सुन्दर भी थे।

कुलदेवीकी अनुमतिसे उन पुरुषोंने इन स्त्रियोंसे विवाह कर लिये। विवाहके सभी सुख और उपभोग जो आजकलके स्त्री-पुरुष जानते हैं, वे लोग भी जानते थे।

कुलदेवीने पुरुषोंको आदेश दिया:

"तुम लोग सुखपूर्वक इन स्त्रियोंसे विवाह करो। इनके संसर्गसे तुम भी अमर हो जाओगे। लेकिन इनके गर्भसे बच्चे नहीं पैदा होने चाहिए। यदि किसी दम्पतिके बच्चे पैदा हुए तो वे सदैव जुड़वाँ—एक पुत्र और एक पुत्री साथ—पैदा होंगे और उनके जन्म लेते ही उनके माता-पिताका अमरत्व जाता रहेगा। ज्यों-ज्यों ये बच्चे बड़े होंगे, माता-पिताके शरीर रोगी और क्षीण होते जायंगे और उनके युवा होते-होते माँ-बापकी मृत्यु हो जायगी। पति-पत्नीके सहवाससे साधारणतया बच्चे उत्पन्न नहीं होंगे लेकिन यदि कोई दम्पति, या उन दोनोंमेंसे एक भी, सन्तानकी कामना करेगा तो सन्तान अवश्य उत्पन्न होगी और अपनी मृत्युके वे दोनों स्वयं कारण बनेंगे।"

उस देशमें खाने-पीने और पनपनेके साधनोंकी कोई कमी नहीं थी। जीवित रहनेकी कामनाके आगे किसीने सन्तानकी कामना नहीं की। कुछ वर्ष इसी प्रकार बीत गये। भयंकर भूचालोंसे नष्ट हुए जिस देशसे बच-बचाकर यह पुरुष जाति आई थी, उसमें स्त्रियाँ भी थीं जो रूपमें साधारणतः सुन्दर और असुन्दर सभी प्रकारकी थीं। यहाँ इतने दिन बीत जाने पर कुछ पुरुषोंको धीरे-धीरे इन स्त्रियोंसे इनकी कुरूपताके कारण असन्तोष होने लगा। उन्हें लगने लगा कि उनकी पत्नियाँ कुछ सुन्दर होनी चाहिएँ। सम्भवतया ऐसा असन्तोष कुछ सुन्दर पुरुषोंके ही मनमें जागा जिन्हें अपनी पुरानी जातिकी सुन्दर स्त्रियोंकी याद थी।

लेकिन सुन्दर पत्नियाँ उस देशमें दुर्लभ थीं। उस देशको छोड़कर बाहर जानेका उनके पास कोई साधन नहीं था और न कोई जानकारी ही थी।

"मैं अपनी पत्नीके गर्भसे यदि सन्तान उत्पन्न करूँ तो हम दोनोंकी मृत्यु अवश्य हो जायगी, लेकिन हमारे बच्चे मेरे बराबर सुन्दर नहीं तो कमसे कम मेरी पत्नीके बराबर कुरूप भी नहीं होंगे। वे यदि कुछ भी सुन्दर हुए तो उन्हें देखकर मुझे बड़ा सुख होगा। इस देशमें मेरी बच्ची यहाँकी स्त्रियोंसे कुछ तो सुन्दर होगी ही। यहाँकी स्त्रियोंकी कुरूपतासे मैं ऊब उठा हूँ।" उनमेंसे एक कुछ सुन्दर पुरुषने एक बार संकल्प किया।

वह व्यक्ति साहसी, सौन्दर्य-प्रिय और प्रभावशाली था। अपनी पत्नीको भी उसने पुत्रोत्पत्तिके लिए तैयार कर लिया।

यथासमय उनके एक पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न हुई। ये दोनों बालक पितासे तो बहुत कम, लेकिन माँ की अपेक्षा कुछ सुन्दर थे। इन्हें देखकर माता-पिताने बड़ा सुख माना।

इस पुरुषने अब अपना सारा समय और शक्ति दूसरे लोगोंको पुत्रोत्पत्तिके लिए प्रेरित और प्रभावित करनेमें लगानी प्रारम्भ की। बहुत लोगोंने उसके इस घातक प्रचारका विरोध किया, पर वह अपने काममें

अड़ा ही रहा। पत्नी सहित उसका शरीर धीरे-धीरे क्षीण होने लगा और दोनोंकी मृत्युका समय निकट आ गया। अपने जीवन-कालमें उसने सुन्दर वर्गके छह और पुरुषोंको पुत्रोत्पत्तिके लिए राजी कर लिया। उसे इससे बड़ा सन्तोष हुआ। बच्चे सात वर्षके भी पूरे न हो पाये थे कि इस दम्पत्तिकी मृत्यु हो गई। कुलदेवीके आदेशसे इन बच्चोंके पालन पोषणका भार एक अन्य दम्पतिको सौंप दिया गया।

यथासमय उन छहों दम्पतियोंके भी एक-एक पुत्री और पुत्र उत्पन्न हुए और इन नये माता-पिताओंकी भी मृत्यु हो गई। इनकी मृत्युके पहिले इनके विचार और प्रचारके द्वारा एक छोटा-सा दल ऐसा बन गया था जो पुत्रोत्पत्तिके लिए अपना जीवन उत्सर्ग करनेके लिए प्रस्तुत था। इन लोगोंका विचार था कि इस प्रकार आत्म-बलिदान द्वारा उनका कुरूप समाज—विशेषकर स्त्री समाज—सुन्दर हो जायगा और आगे आने वाली पीढ़ियाँ सौन्दर्यका सुख पा सकेंगी। देशहित और लोकहितके लिए वे अपने बलिदानको अधिक नहीं मानते थे।

इन सातों परिवारोंके बच्चोंके विवाह, इनके सयाने होने पर, कुलदेवीके आदेशानुसार इन्हीं सात परिवारोंके भीतर ही किये गये। इन सात दम्पतियों-में से केवल तीनने ही पुत्रोत्पत्ति करना स्वीकार किया और शेष चार अपने देशवासियोंकी भांति अमरत्वका जीवन भोगने लगे।

यह क्रम चलता रहा। पुत्रोत्पत्तिके लिए आत्म-बलिदान करनेवालोंकी संख्याके साथ-साथ सुन्दर और कुछ अधिक सुन्दर स्त्री-पुरुषोंकी धीरे-धीरे वृद्धि होती गई। आगे चलकर सारा मानव-समाज एक तरहसे दो अलग-अलग जातियोंमें बँट गया—एक पुत्रोत्पत्तिके समर्थक और अनुयायी, और दूसरे अमरत्वके अनुगामी।

कुछ शताब्दियाँ और इसी प्रकार बीत गईं। देशके शासनकी बाग-डोर अभी अमर पुरुषोंके ही हाथमें थी, संख्यामें भी वे बहुत अधिक थे। दूसरी मर्त्य जातिके लोगोंको वे कुछ नीची दृष्टिसे देखने लगे थे और

कभी-कभी इन दोनों दलोंमें कुछ संघर्ष भी उठ खड़ा होता था। मर्त्यदलके कुछ लोग पुत्रोत्पत्तिसे विमुख होकर अमर-दलमें आ मिलते थे और अमर-दम्पतियोंके दूसरे पक्षमें आ मिलनेकी सनसनी पूर्ण खबरें तो अक्सर सुनाई दे जाती थीं। इन सबका परिणाम यह था कि पुत्रोत्पत्तिके समर्थकोंकी संख्या तेजीके साथ बढ़ रही थी और अमरजनोंकी बहुत धीमी गतिसे, क्योंकि मर्त्यजनोंकी सन्तानें ही कभी-कभी उनमें मिलकर उनकी संख्याको कुछ बढ़ा देती थीं।

दैवी विधान एक बार ऐसा हुआ कि अमर कुरूप जातिकी एक स्त्री मर्त्य-जातिके एक सुन्दर युवक पर मुग्ध हो गई। उसने अपने अमर कुरूप पतिको छोड़कर इस सुन्दर युवकसे विवाह कर लिया। उस युवकने इस कुरूपा पत्नीको कैसे स्वीकार किया, यह अभी तक एक रहस्य है। अमर जातिमें इससे बड़ी सनसनी फैली और दोनों जातियोंके बीच संघर्ष जगा और बढ़ता गया। इन दोनों जातियोंकी जन-संख्या इस समय तक बराबरी तक पहुँच गई थी। इस संघर्षका अन्त एक भयंकर लोक-युद्धमें ही हुआ। मर्त्यजातिके सभी युवा-पुरुष इस युद्धमें पराजित करके देशके बाहर निकाल दिये गये और कुछ जो पिता बनकर अपना अमरत्व खो चुके थे, मारे भी गये। सारा देश फिरसे सुन्दर पुरुषोंसे प्रायः शून्य हो गया। विजयी जातिके पुरुषोंने पराजित जातिकी सुन्दर स्त्रियोंसे बरबस विवाह कर लिये। उनमेंसे प्रायः सभीकी दो-दो पत्नियाँ हो गईं।

इन नई पत्नियोंने कुलदेवीकी शरणमें पुकार की।

कुलदेवीने सान्त्वना देते हुए आदेश दियाः—

"यह सचमुच तुम्हारे लिए संकटका समय आया है। इसे बुद्धिमत्ता पूर्वक सहन करो। तुम्हारे शरीर बन्धनमें अवश्य हैं, पर तुम्हारी कामनाएँ स्वतन्त्र हैं। धैर्य, और जहाँ तक हो सके अपने नये पतियोंसे सहयोगके साथ जीवन बितानेका प्रयत्न करो। मैं उन्हें अधिक दोषी नहीं ठहरा सकती। जो कुछ हो रहा है, दैवी-विधानके अनुसार और लोककल्याणके

लिए ही हो रहा है। धैर्य और त्यागके साथ अच्छे दिनोंकी प्रतीक्षा करो।"

इन महिलाओंने धीरे-धीरे धैर्यको ही अपना लिया। कुरूप पतियोंका संसर्ग यद्यपि इन महिलाओंके लिए अत्यन्त असह्य था फिर भी कुलदेवी-के आदेशमें उन्हें आशाकी एक झलक दिखाई दी।

इस घटनाके एक वर्षके भीतर ही सारे देशमें हाहाकार मच गया। उन सभी सुन्दर पत्नियोंने अपने नये पतियोंके संसर्गमें आते ही चुपचाप सन्तानकी कामना कर ली थी और उनकी सन्तानोंकी उत्पत्ति प्रारंभ हो गई थी। उन अमर और अमरताके अनन्य उपासक पुरुषोंकी मृत्युका सामान जुट गया था, वे पिता बनते जा रहे थे, या बननेवाले हो गये थे। कुछ पुरुषोंने क्रोधके आवेशमें आकर अपनी इन पत्नियोंको मार डालना चाहा और कुछने सचमुच ऐसा किया भी। जिन पत्नियोंके पुत्र उत्पन्न हो चुके थे उनमेंसे कुछका वध कर दिया गया, पर जिनके गर्भमें सन्तान थी वे पुत्रोत्पत्तिके समय तक अमर थीं और उनकी गर्भस्थ सन्तान भी अमर थी। कुछ भी था, पर अब किसी प्रकार भी उन पुरुषोंकी डूबती हुई अमरता बचाई नहीं जा सकती थी। सात-आठ वर्षके भीतर ही सारी कुरूप पुरुष जाति—अपनी नई सन्ततिकी इस अवस्था तक पहुँचते पहुँचते—इस संसारसे विदा हो गई। सारे देशमें सुन्दर स्त्रियों और कुरूप पुरुषोंका अभाव हो गया। देशकी जन-संख्या बहुत घट गई। शेष जनतामें प्राचीन युगकी अमर चिरयुवा कुरूपा स्त्रियाँ तथा नई पीढ़ीके किशोर बालक-बालिकाएँ ही अधिक रह गये। ये बालक अपनी माताओं और उनके सुन्दर पूर्व पतियोंके मुकाबले बहुत कम सुन्दर थे क्योंकि उनके पिता सभी कुरूप थे, फिर भी अपने पिताओं और उनकी पूर्व पत्नियोंकी अपेक्षा वे अवश्य सुन्दर थे।

यह नई पीढ़ी अभी बाल-वयकी ही थी, अतः देशका शासन-प्रबन्ध पुरानी और अमर कुरूपा स्त्रियोंके हाथमें आ गया। कछ ही दिनों बाद

इन अमर स्त्रियोंको पतियोंका अभाव अखरने लगा। इन्होंने एक व्यापक षड्यन्त्र रचा। बालक और बालिकाओंको इन्होंने अलग-अलग कर दिया और लड़कोंके नगर ही लड़कियोंके नगरसे अलग कर दिये। इस षड्यन्त्र-के अनुसार एक निश्चित दिन सभी नवयुवा लड़कियोंको देशकी पार्वत्य सीमा पर ले जाकर उन्हें देशसे बाहर कर दिया गया और उनके वापिस न आ सकनेका सुदृढ़ प्रबन्ध कर दिया गया। देशमें रोके हुए नवयुवकोंको उन्होंने बचपनसे ही शिक्षा दी कि मनुष्य अमर है, उसे अमर ही रहना चाहिए, सन्तानकी कामना एक भयंकर प्रलोभन और पाप है। उनके निकटवर्ती पूर्वज इस प्रलोभनमें पड़कर संसारसे मिट गये, किन्तु उनके आदिम पूर्वज अमरत्वके ही उपासक रहे हैं और उन्हींकी परिपाटी पर इन बच्चोंको भी चलना चाहिए।

बालकोंके मस्तिष्कमें यह शिक्षा घर कर गई। जब वे युवा हुए तो इन चिर युवा स्त्रियोंने बहुत कुछ निश्चित भावसे उनसे विवाह कर लिये।

विवाह-वर्षके बाद, देशके वार्षिक पर्व समारोह पर कुलदेवीने नये पतियोंको सम्बोधित करते हुए कहा:—

"मुझे आज अपने बच्चोंको देखकर बड़ी प्रसन्नता है। ये किसी समयके अपने पूर्वजोंकी अपेक्षा अधिक सुन्दर हैं। सुन्दर पत्नियाँ पुरुषोंका सहज-सिद्ध अधिकार है। आत्म-बलिदान ही आत्म-सृजनका साधन है। तुम्हीं लोग इसी देशमें अपने पिछले जन्मोंमें अपने पूर्वज थे और अत्यन्त कुरूप थे। पुराने शरीरोंका त्याग कर ज्यों-ज्यों तुम नये शरीर धारण करते जाओगे त्यों-त्यों वे शरीर अधिक सुन्दर होते जायंगे। मनुष्यत्वका सबसे बड़ा सुख सुन्दर पति और सुन्दर पत्नीमें है। तुममेंसे जो चाहो, पुत्रोत्पत्ति-की कामनाके लिए स्वतन्त्र हो। जो ऐसी कामना करेंगे वे मेरे अधिक प्यारे सुपुत्र होंगे।"

स्त्री-समाजमें कुलदेवीके इस आकस्मिक भाव-परिवर्तनसे तहलका मच गया, पर अब हो भी क्या सकता था। अधिकांश पुरुष कुलदेवीकी

इस इच्छाके अनुयायी बन गये। अमर पत्नियाँ भी बहुत कम ही अपने इन नये पतियोंसे मुक्त हो सकीं। कुछ ही शताब्दियोंमें उन अत्यन्त कुरूपा स्त्रियोंका भी इस संसारसे विनाश हो गया। उनकी सन्ततिका, और उनसे उत्पन्न सन्ततियोंका रूप धीरे-धीरे निखरता ही गया।

पहिले युद्धमें बहिष्कृत पुरुषों और कुरूपा स्त्रियोंके षड्यन्त्रसे निकाली हुई सुन्दर युवतियोंका परदेशोंमें संसर्ग हो जानेसे, उस देशके बाहर भी स्त्री-पुरुषोंकी संख्या बढ़ चली थी, क्योंकि अब दैवीविधानमें नये परिवर्तनके अनुसार, प्रत्येक दम्पति अपने जीते-जी पुत्र-पुत्रियोंके एकसे अधिक—तीन चार तक—जोड़े उत्पन्न कर सकता था। आगे चलकर उन्हींकी सन्ततियोंसे संसारके बहुतसे देश आबाद हो गये। ये सब देश और इनकी जातियाँ पुत्रोत्पत्ति करने वाली अतः मर्त्य और धीरे-धीरे पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुन्दर होने वाली हैं। कहते हैं कि अब भी उस प्रारम्भिक देशमें कुछ कुरूपा अमर स्त्रियाँ और कुछ थोड़ेसे वैसे पुरुष भी बसते हैं और वहाँकी कुलदेवी का यह विशेष प्रतिबन्ध है कि उस देशमें नई मानवताका कोई व्यक्ति पहुँचकर अमर और कुरूप न होने पाये।

कुरूप शरीरकी अमरता ही मनुष्यकी वास्तविक मृत्यु और आत्मदान पूर्वक शरीरका परिवर्तन ही उसकी सुन्दरता और जीवन है।



# उरोजाका असमंजस

भुवर्लोककी गन्धर्व-कन्या उरोजाने जब देखा कि उसका यौवन और रूप उसके नियन्त्रणसे बाहर निखरता ही जाता है और भुवर्लोकके समस्त काम-देश-निवासियोंकी भेंट-पूजामयी काम-आराधनाएँ उसे तृप्त नहीं कर पाईं तब उसने भूलोककी ओर दृष्टि फेरी। उसने सुन रखा था कि भूलोकके निवासी मनुष्य भी प्रायः बहुत सुन्दर और पौरुषवान होते हैं और उनमें प्रेम-आराधनाकी क्षमता काम-देशियोंसे कम नहीं होती।

भूलोकके गंगा तटवर्ती एक प्रसिद्ध तीर्थनगरको उरोजाने अपने प्रेम-व्यवसायके लिए चुना। तीर्थनगरके प्रधान मन्दिरके समीप ही एक सुविधा-जनक स्थान उसने पसन्द किया और एक अभूतपूर्व सुन्दरी षोडशी मानवी-का रूप धरकर वहाँ जा विराजी। उसका रूप और यौवन निखारकी इस सीमा पर पहुँचे हुए थे कि उन्होंने उसके शरीरको ढक लिया था और उनके सामने उसके शरीरको खोज-देखना मानव-दृष्टिके लिए कठिन था।

उरोजाका पहिला दिन प्रातःसे सायं तक, अपने रूप-पुजारियोंकी प्रतीक्षामें बीता। उसके सामनेके पथसे दिनभरमें सहस्रों मनुष्य निकले, उसके निवास-शिविरके सामनेसे निकलते समय सबने अपनी चाल धीमी की और सबने उसे आँखें भर-भर देखा। लेकिन उसकी ओर एक भी व्यक्ति नहीं मुड़ा, कोई भी उसके पास नहीं आया और किसीने भी उससे एक शब्द नहीं कहा। सबने राधाकृष्णजीके मन्दिर पर जाकर अपनी भेंट चढ़ाई और उसी राह अपने-अपने स्थानोंको लौट गये।

'भूलोकके मनुष्य तो बड़े उदासीन, नीरस और निष्ठुर जान पड़ते

हैं, उरोजाने सोचा और उसका हृदय एक दुःसह निराशा-वेदनासे भर गया। उरोजाकी वह रात करवटें वदलते उसकी आँखोंमें ही बीती।

दूसरा दिन आया। आज राधाकृष्णके पुजारियोंकी संख्या पिछले दिनसे तिगुनी थी। पुजारियोंकी सारी भीड़ प्रतीक्षामग्ना उरोजाके सामनेसे निकली। उन सबोंने पिछले दिनकी भाँति उसके सामने पहुँचकर अपनी चाल धीमी की, भर-भर आँखें उसे देखा और चुपचाप आगे बढ़ते गये।

उस दिनकी भेंट-पूजासे राधाकृष्णकी जोड़ी मालामाल हो गई। उरोजाका आँचल रीता ही रह गया।

'राधाकृष्ण—क्या ये राधाकृष्ण मुझसे अधिक सुन्दर होंगे? इनकी उपासनाके लिए सारा भूलोक टूटा पड़ रहा है। मैं उनके एक भी उपासक-को अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर सकती—बल्कि मेरे यहाँ आनेसे उनकी संख्या और भी बढ़ गई। तो फिर मुझपर किसीका तनिक भी ध्यान नहीं है? लेकिन देखते तो सभी मेरी ओर बड़े ध्यानसे हैं। इस देखनेका अर्थ तो प्रेम ही होना चाहिए। लेकिन इसका अर्थ घृणा और तिरस्कार ही होगा, जब कोई मेरे पास नहीं फटकता, मुझसे एक शब्द भी नहीं बोलता।' उरोजा ऐसे ही न जाने क्या-क्या सोचती रही, कठिन चिन्तामें डूबी रात भर तड़पती रही।

तीसरे दिन रात रहते ही राधाकृष्णके पुजारियोंका ताँता बँध गया। उरोजाका यह दिन भी वैसा ही असफल, निराश बीता। आज मन्दिरके भक्त यात्रियोंकी संख्या पिछले दिनसे नौगुनी थी।

उरोजाकी तीसरी वेदना-भरी रात प्रारम्भ होनेको ही थी कि अपने शिविर-द्वार पर किसीके आनेकी आहट उसने सुनी।

उरोजा उठकर धड़कते हुए हृदयसे बाहर आई और आगन्तुकका स्वागत किया। वह पड़ौसके एक राज्यका युवराज था, अत्यन्त रूपवान, हृष्ट-पुष्ट। उरोजाको मानो उसके प्राण मिल गये। युवराजने रत्न-

मणि-जटित अमूल्य भेंटें सुन्दरी उरोजाके सम्मुख रखकर अपना प्रेम-अभिप्राय उसके सामने रख दिया। उरोजा उसे पाकर कृतार्थ हो गई। युवराजने बताया, वह राधाकृष्णकी उपासनाके लिए नहीं, उस सुन्दरीकी आराधनाके लिए ही उस तीर्थ-नगरमें आया था। उरोजाने सन्तोषकी साँस ली, उसे अन्ततोगत्वा एक उपासक मानवपुरुष तो अपने लिए मिला।

युवराजके साथ उसका प्रेम-व्यापार चल पड़ा। धीरे-धीरे उसे यह विदित हो गया कि राधाकृष्णके पुजारी वास्तवमें उसके ही मूक पुजारी थे। दिन और रातें बीतने लगीं। तीर्थनगरके यात्रियोंकी संख्या उसी रेखात्मक अनुपातसे बढ़ती गई। युवराजके दिन राधाकृष्णकी पूजामें बीतते और रातें उरोजाकी उपासनामें। लेकिन उरोजाकी अदम्य कामनाएँ एक मानव-उपासकसे कैसे पूरी हो सकती थीं! उसे तो बहुत चाहिए थे! उसकी अतृप्त प्यास उमड़ने लगी।

एक रात, जब कि उरोजा और युवराज प्रेमालापमें निमग्न थे, एक अन्य आगन्तुकने शिविरका द्वार खटखटाया।

उरोजाने तत्काल उठकर युवराजके रोकनेसे पहिले ही, एक नई आशा और उल्लाससे धड़कते हुए हृदयको लेकर द्वार खोल दिया। आगन्तुक युवराजसे भी अधिक रूपवान और हृष्टपुष्ट एक युवक था। यह युवक उस मठका अधिकारी महन्त और मन्दिरका प्रधान पुजारी था।

"युवराज!" युवराज पर दृष्टि पड़ते ही युवक महन्तकी त्यौरियाँ चढ़ गईं और उसका कठोर स्वर गूँज उठा, "तुम यहाँ! मेरी पवित्र तीर्थ-भूमिमें यह पापाचार! निकलो यहाँसे!"

युवराजका मुँह पहिलेसे फीका पड़ चुका था। वह चुपचाप उठा और सिर झुकाये द्वारके बाहर चला गया।

उरोजा ठगी-सी देखती रह गई!

महन्तके वैभव और अधिकारके सामने युवराजका वैभव और शासन-बल कुछ भी नहीं था। बड़े-बड़े राजे-महाराजे उसके पैरों पर सिर झुकाते

थे और उसकी आज्ञापालनके लिए हाथ बाँधे खड़े रहते थ। महन्तकी एकत्रित सम्पत्ति किसी राजा-महाराजाके कोषसे कम नहीं थी।

युवराजके चले जानेके बाद उस रूपवान युवक मठाधीशने रत्न-मणियोंकी एक अतुल धन-राशि उरोजाके चरणों पर रखकर कहा, "सुन्दरी, जिस दिनसे तुम यहाँ आई हो उसी दिनसे मैं तुम्हारे रूपका पुजारी हो उठा हूँ। तुम्हारे प्रथम दर्शनके समयसे अब तकका एक-एक क्षण मेरा पहाड़-सा कटा है। दूसरे मठोंके अभ्यागत धर्माधिकारियोंसे घिरे रहनेके कारण, उनके लोक-भयसे इस समय तक मुझे अवसर नहीं मिला। अब उनके चले जाने पर, उनसे अवकाश पाते ही तुम्हारी सेवा-में उपस्थित हुआ हूँ। इस मन्दिरका अतुल धन-वैभव और मेरा सर्वस्व अब तुम्हारा ही है।"

उरोजा कुछ समझ न सकी। युवराजके प्रति मठाधीशके व्यवहारसे वह स्तब्ध रह गई थी।

"किन्तु—श्रीमन्" उरोजाने क्षणभर बाद कहा, "जिस बातका प्रस्ताव आप कर रहे हैं, वहीं तो युवराजने किया था। उसके प्रति आपके व्यवहारको देखकर मैं प्रेम-व्यवहारको पापाचार समझूँ या आपके प्रस्ताव-को देखकर उसे पुण्याचार समझूँ? आपके यहाँकी धर्मनीतिमें—"

"इतनी-सी बात" मठाधीशने कहा, "इतनी-सी बात तुम्हारी समझ-में नहीं आती? युवराजके साथ मैंने कोई अनुचित व्यवहार नहीं किया। स्वपत्नीसे भिन्न किसी अन्य रमणीसे प्रेम-व्यापार करना पुरुषके लिए पापाचार ही है, विशेषकर तीर्थस्थलमें। किन्तु मैं—मेरे लिए—इस निर्जन एकान्तमें—तुम्हारा यह रूप—" कहते-कहते मठाधीशने अपनी बाँहें उसकी ओर बढ़ा दीं और, उनके उरोजाके शरीर तक पहुँचनेके पहिले ही, उस गन्धर्व रमणीने अपना रूप समेटा और अदृश्य हो गई!

भू-मानवकी धर्मनीतिकी जटिलता और उसके पाप-पुण्यकी दुरूहता-से वह एकदम घबरा गई थी!

गन्धर्व-लोकमें पहुँचकर उसने दूसरी उत्सुक गन्धर्व-बालाओंका समाधान किया :

"भूलोकका मनुष्य जिस बातको स्वयं निस्संकोच और स्वेच्छापूर्वक करना पसन्द करता है उसे ही अपने सिवा अन्य सबोंके लिए पापाचार समझता है। वह अधिकांश सुख-साधनोंको अपने लिए पुण्य और दूसरोंके लिए पाप समझता है। वहाँकी धर्मनीति और पाप-पुण्यकी कसौटी बड़ी जटिल है, हम लोगोंका वहाँ निर्वाह नहीं हो सकता !"



# वैवाहिक-विधान

स्वर्गलोककी विधान-निर्मात्री परिषद्ने नियम बनाया था कि भूलोक पर जन्म लेनेवाली आत्माओंके लिए यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक भौतिक जन्ममें उसी आत्मव्यक्तिसे विवाह करें जिससे पिछले जन्ममें किया हो—वे अलग-अलग जन्मोंमें अलग-अलग व्यक्तियोंसे विवाह कर सकती हैं। और इसमें कोई आचारिक या नैतिक दोष नहीं है।

इस नियमके बननेके पहले विधान-परिषद्के कुछ कट्टर-पन्थी सदस्योंने इसका तीव्र विरोध किया था और इसे भ्रष्टाचार बताया था। किन्तु उनकी इच्छानुसार नियम बनानेमें सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि अलग-अलग प्रकारके कर्म-फलों और प्रवृत्तियोंके कारण प्रत्येक आत्मदम्पतिको एक ही समयमें और एक-सी परिस्थितिमें जन्म देना असम्भव था, इसलिए पृथ्वीलोकमें जन्म लेकर उनका बिछुड़ना और दूसरे आत्म-व्यक्तियोंसे ही विवाह करना अनिवार्य था। और दूसरी बात यह भी थी कि विधान-परिषद्के दूसरे दलके सदस्य इस बातको आवश्यक और श्रेयस्कर समझते थे कि भिन्न-भिन्न जन्मोंमें आत्माएँ भिन्न-भिन्न व्यक्तियोंसे विवाह कर भिन्न-भिन्न प्रकारके सम्पर्क-सम्बन्धी अनुभव और क्षमताएँ प्राप्त करें।

भूलोकमें मनुष्योंकी विधान-निर्मात्री परिषद् जब पहली बार जुटी—उसके बादसे अनेक बार उन प्रारम्भिक विधानोंमें, भूतलके अलग-अलग देशोंमें अलग-अलग प्रकारके उलट-फेर हो चुके हैं—तब विवाहका विषय आनेपर कुछ सदस्योंने प्रस्ताव रखा कि प्रत्येक पुरुष और स्त्रीको अधिकार होना चाहिए कि वह जब चाहे एक विवाह सम्बन्धका विच्छेद करके दूसरा स्थापित कर ले। ऐसा करनेसे वह भिन्न-भिन्न प्रकारके सम्पर्क-सम्बन्धी अनुभव और क्षमताएँ भी अधिक शीघ्रतासे प्राप्त कर सकेगा। इस

प्रस्तावके साथ यह भी कहा गया कि स्वर्गलोक वालोंने भी ऐसे ही विधानकी उपयोगिता स्वीकार की थी।

परिषद्के कट्टरपन्थी पण्डित-सदस्योंने इसका प्रवल विरोध किया। उन्होंने कहा कि हमारे भूलोक पर प्रत्येक व्यक्ति एक पत्नीव्रत और पतिव्रत का निर्वाह करेगा। स्वर्गलोकमें तो धर्म-कर्म कुछ रह नहीं गया। वहाँ तो अविवाहित देवताओं और अप्सराओंकी संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। हम उन भ्रष्टाचारियोंका अनुकरण क्यों करने लगे !

पण्डित-वर्गका ही विधान-परिषद्में बहुमत था। भूलोकमें प्रत्येक व्यक्तिके लिए आजीवन एक पति और एक पत्नीका नियम बना दिया गया।

ग्राह्य-अग्राह्य, शुद्ध-अशुद्ध, ऊँच-नीच, जाति-कुजातिके भेदभाव और धर्म-कर्मका उन दिनों भूलोकके चक्रवर्ती राज्यमें बोलवाला था; शासन और समाजमें पवित्र रक्त वाले पण्डितोंकी ही चल रही थी।

एक बार ऐसा हुआ कि पूर्वी गोलार्द्धकी राजधानीके एक बड़े सेठकी मृत्यु पर उसकी पतिव्रता पत्नीने उसके शवके साथ सती होनेका निश्चय किया। उसने कहा कि मैं प्रत्येक जन्ममें इन्हींको अपना पति बनाना चाहती हूँ और किसी जन्ममें किसी दूसरे पुरुषके साथ विवाह करना असह्य और अपने पतिव्रत-धर्मके विरुद्ध समझती हूँ।

कुछ लोगोंने उसे ऐसा करनेसे रोकना चाहा, किन्तु राजधानीके पण्डितोंने उसका समर्थन किया और उसके निश्चयकी स्तुति करते हुए उसे संसारकी सबसे बड़ी सती साध्वी और आदर्श एवं अनुकरणीय नारी बताया। उन्होंने कहा कि हमारे समाजकी प्रत्येक नारीको अपने पतिव्रत-बलसे इस योग्य बनना चाहिए कि वह प्रत्येक जन्ममें अपने पूर्व जन्मके पतिको वरण कर सके। भूलोकके स्त्रीत्वका यही सबसे ऊँचा उद्देश्य होना चाहिए।

सेठ-पत्नी अपने पतिके साथ जलकर सती हो गई।

इसके बादसे भूमण्डल पर सती होनेकी प्रथा जारी हो गई—यह पिछले भारतीय सती-प्रथाके युगसे बहुत-बहुत, हज़ारों बरस पहिलेकी बात है; पिछला सती-प्रथा-युग तो उस युगकी एक छाया-मात्र ही था—और भूमण्डल-की नारियाँ प्रत्येक जन्ममें उसी एक पतिको पानेकी प्रवृत्तिकी ओर अधिका-धिक संख्यामें झुकने लगीं। पण्डित-वर्गने इस प्रथाको पूरा सहयोग और प्रोत्साहन दिया।

सेठ-पत्नीके सती होनेके लगभग सौ वर्ष बाद राजधानीके प्रधान पण्डितके—जो कि पूर्व समयके प्रधान पण्डितके पौत्र थे—घर एक सुन्दरी कन्याका जन्म हुआ। वह इतनी संस्कारमयी थी कि तीन वर्षकी आयुमें ही उसने अपने पिछले जन्मका सारा हाल विस्तारपूर्वक बता दिया। आजकल भी कोई-कोई बच्चे ऐसा करते हुए आजकलके शिक्षित समाजमें पाये गये हैं। पूर्व जन्ममें यही कन्या सेठ-पत्नी थी। इस विचित्र चमत्कार-पूर्ण घटनाका विवरण राजकीय पत्रालय (रजिस्ट्रेशन डिपार्टमेंट) में भी लिखवाकर रख लिया गया। पण्डित-परिवार उस सती-साध्वी देवीको अपने घरमें पाकर बहुत प्रसन्न हुआ।

जब कन्या सयानी हुई और उसके विवाहका समय आया तब उसके पिताने अच्छे वरोंकी टटोल प्रारम्भ की।

कन्याको जब यह बात ज्ञात हुई तब उसने पिताको कहलवा भेजा कि उसके वरके लिए चिन्ता न करें, वह तो पहलेसे ही निश्चित है और अमुक नगरमें अमुक स्थानमें अमुक नामके पिताका इकलौता बेटा है।

दूत उस नगरको दौड़ाये गये। इधर विवाहके आयोजनमें बड़े समारोह-के साथ पण्डितोंकी सभा वरके आगमनकी प्रतीक्षा करने लगी।

दूतोंने एक रोग-ग्रस्त, दुबले-पतले, म्लेच्छ जातिके एक आठ वर्षके लड़केको, जो कि एक दरिद्र मांस-व्यवसायीका इकलौता बेटा था, पण्डितोंकी सभामें ला उपस्थित किया। बालकका पिता भी उसके साथ आया था।

"यह मेरी कन्याका वर कदापि नहीं हो सकता ! हटाओ इसे यहाँसे मूर्खो ! तुम किसे पकड़ लाये हो ?" पण्डितने बिगड़ कर कहा।

बालकके पिताने एक मुहरबन्द पत्र पण्डितजीके हाथमें रख दिया। पत्र पढ़ा गया। तीन वर्षकी आयुमें उस बालकने अपने पिछले जन्मका जो हाल बताया था उसका विवरण राजकीय पत्रविभाग (रजिस्ट्रेशन विभाग) में लिखवा कर रख लिया गया था; उसी विवरणकी यह राज-मुहर द्वारा प्रमाणित प्रतिलिपि थी। यह बालक पिछले जन्ममें राजधानीका वह सेठ ही था। अपने-अपने कर्मवश सेठको दरिद्री म्लेच्छ-पुत्रका और सेठ-पत्नीको राज-पण्डितकी कन्याका जन्म मिला था।

राज-पण्डितकी कन्याका एक म्लेच्छ-पुत्रके साथ विवाह—यह कैसे सहन हो सकता था ! पण्डितने अपना माथा ठोंक लिया।

यह विवाह होना चाहिए या न होना चाहिए, इसी विवादको लेकर पण्डित-सभामें दो दल हो गये। कन्याके पिताका कहना था कि यह विवाह न होना चाहिए; किन्तु कन्याने बाहर आकर वरमाला उस म्लेच्छ-पुत्रके गलेमें डाल ही दी और उसे उसके साथ जानेसे कोई रोक नहीं सका। कन्याके पिताको उन्हींके दलने जाति-च्युत करके राजपण्डित-पदसे हटवा दिया।

पण्डित-सभाके इस प्रकार छिन्न-भिन्न हो जानेसे पण्डित-वर्गका बल घट गया। विवाह-सम्बन्धी विधानमें परिवर्तनकी चर्चा सारे भूमण्डल पर तेजीसे चल पड़ी। इसका परिणाम इतना दूर-व्यापी हुआ कि सारे भू-मण्डलका साम्राज्य दो खण्डोंमें बँट गया। दोनों खण्डोंकी अलग-अलग विधान-परिषदें जुटीं और उन्होंने अलग-अलग अपने विधान बनाये और उसी समयसे भूमण्डलके आगे खण्डीकरणों और वैधानिक परिवर्तनोंके क्रमका सूत्रपात हुआ।

---

# कैशबुकके पन्ने

[जयंतकी कैशबुकके अब तकके ३१० लेखोंमेंसे, सर्वप्रथमको छोड़, सबसे अधिक महत्त्वके ३१ स्थल चुनकर यहाँ दे रहा हूँ। छपाई-की सुविधाके लिए मैंने यहाँ कैशबुकके पन्नोंका रूप कुछ बदल दिया है। आयुतिथिमें उसकी उम्रका वर्ष, महीना और दिन क्रमशः दिया हुआ है; रक़मके खानेमें रुपया, आना, पाईकी जगह वह अपने व्यवहारियों या व्यापारियोंके विचारों, भावों और कर्मोंका ऋणी या साहूकार है। ५ कर्म एक भावके बराबर है और ५ भाव एक विचारके। यहाँ मैंने सुविधाकी दृष्टिसे ही दी हुई रक़में दशमांश करके लिखी हैं, इससे तुलना-में कोई अन्तर नहीं पड़ता। जयंतका जीवन-प्रवाह उसकी कैशबुकके इन 'टीपनों' में स्पष्ट झलकता है और वह मार्मिक है। उसकी आयुके साथ उसके जीवनमें आनेवाले भावों और विचारोंका मिलान करनेसे दीखता है कि जीवन भावुक और प्रवाहपूर्ण ही नहीं, विचारशील और किसी ऊँचे लक्ष्यके लिए नियंत्रित भी है। उसके प्रारम्भिक चौदह वर्ष-के लेखे—यानी घटनाएँ—तो ठीक उन्हीं तिथियोंके हैं, लेकिन उन लेखों-की भाषा तब की है, जब उसने लिखना सीख लिया था। १४ सालकी आयुके बाद उसके जीवनमें एक उतार-सा दीखता है, लेकिन वह सम्भवतः उतार नहीं है।

ऐसी कैशबुकों और डायरियोंमें मेरी विशेष दिलचस्पी है। आपने भी कुछ लोगों पर कुछ एहसान किये होंगे और कुछके एहसान लिये होंगे। क्या आप भी जयंतकी तरहका उनका कोई हिसाब-किताब रखते हैं ?

—रावी]

आय नाम और विवरण व्यय

१—आय : आयुतिथि ५–२–११, महत्त्व-संख्या १२.

वि.भा.क.

३–४–४ मा

बारह दिनसे मेरा बुखार नहीं उतर रहा। मेरी तीन दिनकी अनुनय-विनय पर पसीजकर मा ने आज मुझे मोतीचूरके दो लड्डू खिला दिये हैं। तीन दिन हुए टोकरी भर लड्डू सन्दूकमें लाकर रक्खे गये हैं। तभीसे मेरा इन्हीं पर जी लगा था। इस पर पिता जी ने मा को बहुत डाँटा है। मा ने कहा—"मुझसे लड़केका मन नहीं तोड़ा जाता, उसे कहाँ तक तरसाऊँ। लड्डू नहीं नुक़सान करेंगे।"[1] पिताजीने इसपर भी उन्हें बहुत डाँटा है और वह बहुत रोई हैं।

२—आय : आयुतिथि ५–८–१०, महत्त्व-संख्या १०.

४–४–१ पंचमा : कहार

मुझे विश्वास न था, लेकिन पंचमाको पूरा विश्वास था कि मैं अपने दरवाज़ेसे फेंककर अपना लकड़ीका गेंद दूर सामनेवाले पेड़ तक पहुँचा सकता हूँ। उसके हौसला दिलाने पर मैंने गेंद उधर फेंका और वह सचमुच उस पेड़ तक पहुँच गया। अपनी शक्तिके परिचय पर मेरे आनन्दका ठिकाना न रहा और मैं पंचमाका बहुत कृतज्ञ हुआ।

---

[1]उस दिन से मेरा बुखार उतर गया था।

३—आय : आयुतिथि ६–१–२२, महत्त्व-संख्या १५.

२–४–४ पिताजी

पिताजीने मुझे कोठरीमें बन्द करनेकी सजा दी थी। रोते-रोते मैं भूखा कोठरीमें सो गया। किवाड़ खोलकर पिताजीने मुझे छातीसे लगाकर बहुत प्यार किया और मेरे भूखे सो जाने पर बहुत पछताये। मुझे आज मालूम हुआ कि पिताजी बुरे नहीं हैं और वह मेरी ज़िद पर ही मुझे सजा देते हैं और फिर भी बराबर प्यार करते रहते हैं।

४—आय : आयुतिथि ७–१–२६, महत्त्व-संख्या २२.

२–२–१ बहनजी

आज झूला झूलते समय बहनजीने, जो मुझसे तीन साल बड़ी हैं, मेरी आँखें बन्द कराकर मुझे भगवान्के दर्शन कराये।[1]

५—आय : आयुतिथि ७–७–७, महत्त्व-संख्या २१.

२–२–२ ज़हीर : मित्र और सहपाठी

स्कूल जाते हुए आज ज़हीरने एक पैसेकी भुनी शकरकन्द खरीदी है और उसमेंसे आधी मुझे दी है। मैंने मनमें ज़हीरकी बहुत तारीफ़ की है और तय किया है कि मैं भी अपने पैसोंकी चीज़ ज़हीरको और दूसरे दोस्तोंको बाँटकर खाया करूँगा।

---

[1]बड़े होने पर मालूम हुआ कि वह भगवान्के दर्शन नहीं थे, बल्कि आँखें दबानेसे हरएकको ऐसी रंगबिरंगी रोशनी दिखाई दे जाती है।

१—व्यय : आयुतिथि ७–१०–१२, महत्त्व-संख्या १.

पंडित रामलाल ६–३–४

यह मुझे स्कूलमें पढ़ाते हैं। यह मुझे बहुत मारते हैं। मैं इनसे बहुत डरता हूँ। कल इन्होंने एक दूसरे लड़केके क़सूर पर मुझे मारा था। आजसे मैं स्कूल नहीं जाऊँगा और धूपमें बैठ-बैठकर बुख़ार बुला लूँगा। पंडितजी पर आज मुझे बहुत ग़ुस्सा आ रहा है। वह मर जायँ तो अच्छा हो।

२—व्यय : आयुतिथि ७–११–१२, महत्त्व-संख्या ३.

रामशंकर : सहपाठी ४–४–२

यह बहुत बदमाश लड़का है। मेरी चीज़ें चुरा लेता है और झूठी शिकायतें करता है और पिटवाता है। आज मैंने भी उसकी स्लेट चुराकर अपने बस्तेमें रख ली है।

६—आय : आयुतिथि ८–२–८, महत्त्व-संख्या २४.

२–१–३ नबीबख़्श : सहपाठी

यह मेरे दर्जेमें है और मुझसे ६ साल बड़ा है। वह मेरी बड़ी सहायता करता है। मेरे लिए अक्सर सुखाये हुए बेर स्कूलमें लाता है। दोपहरको जब मैं स्कूलसे घर लौटता हूँ तो रास्तेमें एक टूटा-फूटा भूतका घर पड़ता है। जब और कोई लड़का मेरे साथ नहीं होता तो बेचारा नबीबख़्श मुझे इस भूतघरके आगे तक पहुँचा जाता है। आज उसने मुझे एक ऐसा मन्त्र[1] बताया है, जिसे पढ़कर फूंक देनेसे भूत

[1] मंत्र यह है—दिखा दे या इलाही वह मदीना कैसी बस्ती है ;
जहाँ पर रात-दिन मौला तेरी रहमत बरसती है।

टूटी-फूटी दीवारके भीतर गड़ जाता है। मैं आज स्कूलसे अकेला घर आया हूँ और भूतके घरके सामने खड़े होकर मैंने उस मन्त्रको पढ़कर फूंक मारी है। भूत ज़रूर आज मर गया होगा। न भी मरा हो तो अब मुझको उसका बिलकुल डर नहीं है। दूसरे लड़कोंके रास्तेमें अगर कोई भूत पड़ते होंगे तो मैं अब उन लड़कोंको भी उनके घर तक पहुँचा आया करूँगा। नबीबख़्शको मैं हमेशा अपना बड़ा भाई जैसा मानूँगा।

७—आय : आयुतिथि ८–११–८, महत्त्व-संख्या ७.

६–४–१ रम्भा : बछिया

यह बछिया मुझे बहुत प्यारी लगती है। वह है भी बेहद सुन्दर। मैं बहुत दिनोंसे उसके साथ खेलता आया हूँ। आज मैंने उसके गलेमें बाँहें डालकर उसे बहुत चूमा। वह मुझे बहुत देर तक अपनी बड़ी-बड़ी सुन्दर आँखोंसे देखती रही और मेरा मुँह अपनी जीभसे चाटती रही।

३—व्यय : आयुतिथि ८–११–८, महत्त्व-संख्या ५.

भाभी ०–३–१

जब मैं रम्भाको प्यार कर रहा था तो भाभीने मेरी बहुत हँसी उड़ाई और मुझे उससे छुड़ाकर घसीट ले गईं। उन्हें इसका बहुत पाप पड़ेगा। उन्हें ज़रा भी तमीज़ नहीं है।

८—आय : आयुतिथि १०–२–१२, महत्त्व-संख्या २५.

२–०–४ जमना : पड़ोसी, ड्राइवर

चार दिनसे जमनाके मोटरघरके सामने घंटों बैठकर

ललचाई आँखोंसे उसका मोटर देखा करता था। आज उसने मुझे मोटर पर बिठाकर सारी बस्तीकी सैर कराई। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं हवासे भी ज्यादा तेज़ उड़ रहा हूँ और जल्द ही बहुत बड़ा आदमी होनेवाला हूँ। मैंने सोचा—पिताजी और तहसीलदार साहब रास्तेमें पैदल जाते हुए मिल जाएँ तो बहुत अच्छा हो, मैं मोटर रुकवा दूँ और उनसे कहूँ—'आप लोग पैदल क्यों चलते हैं, आइए मेरी मोटर पर बैठ जाइए।'

९—आय : आयुतिथि १४–१–२८, महत्त्व-संख्या १३.
३–३–४ प्रेमा

इसके बराबर सुन्दर लड़की दुनियामें नहीं है। पिछले साल ठीक आजकी ही तारीख़में इसे मैंने पहले-पहल देखा था। तबसे मुझे इस लड़कीसे प्रेम हो गया है। प्रेमके साथ-साथ और भी न जाने क्या हो गया है। मुझे उसकी याद कभी नहीं भूलती। खाना, खेलना और अच्छी-अच्छी कहानियाँ पढ़ना सभी कुछ मुझे नापसन्द हो गया है। मैंने ज़िद करना बिलकुल छोड़ दिया है। मुझे कोई भी बात अच्छी नहीं लगती। कभी-कभी रात-रात भर नींद नहीं आती। कभी तो अकेलेमें घंटों आँसू बहते रहते हैं। जी चाहता है, वह मिल जाय तो उसे कसकर लिपटा लूँ और फिर कभी न छोड़ूँ और कुछ न करूँ। दुनियामें मुझे उसके सिवा और कुछ नहीं चाहिए। अब मुझसे जो कोई मेरी जो भी चीज़ चाहे ले जाय। मैं सिर्फ़ अपना कत्थई कोट किसीको नहीं दे सकता। वह अक्सर कत्थई रंगकी साड़ी पहनती है और इसीलिए मैंने यह कत्थई रंगका कोट बनवाया है। पिताजी हर महीने दो-तीन दिनके लिए इस शहरमें आते हैं और मामाजीके मकानमें ठहरते हैं। मैं उनके साथ

आता हूँ। मामाजीके मकानके सामने ही प्रेमाका घर है। ऊपरके कमरेसे अक्सर उस मकानकी छत पर और कभी-कभी नीचे सड़क पर मैं उसे देखता हूँ। कल रात दो महीने बाद मैं शहरमें आया हूँ। मामीसे मालूम हुआ कि उसे तीन दिनसे बुख़ार आ रहा है। उसे अबकी वार छत पर नहीं देख पाऊँगा, यह सोचकर मुझे रातभर नींद नहीं आई। लेकिन आज सवेरे आठ बजे ही वह उस छत पर आकर बैठ गई। गरमी और धूप वहुत थी। लेकिन वह मेरे ऊपरवाले कमरेकी खिड़कीके सामने अपनी छत पर बैठी ही रही। धूप और बुख़ारसे उसका मुँह लाल हो रहा था, पसीना चू रहा था, लेकिन वह बैठी ही रही। उसे शायद मालूम है कि उसे देखना मुझे अच्छा लगता है। शायद उसे भी मुझे देखना अच्छा लगता है। लेकिन उसने मुझे आज ज़्यादा वार देखनेकी कोशिश नहीं की और मुझे ही अपने आपको जी भरकर देखने दिया। हम दोनों एक दूसरेको एक साथ तो नहीं देख सकते। एक साथ देखनेमें आँखसे आँख मिल जाती है और झिझक मालूम होती है। उसने आज मुझपर कितनी बड़ी दया की। इसमें आज उसे कितना कष्ट उठाना पड़ा। उसका वह बुखार, धूपसे लाल और इतना कोमल मुँह! उसकी मा जब उसे कुछ कहती हुई ले गई, तभी वह वहुत बे-मनसे गई। ८ बजे की आई वह सवा ग्यारह बजे नीचे गई। मेरे लिए उसकी कृपा और त्यागकी कोई हद नहीं है।

४—व्यय : आयुतिथि १४–२–०, महत्त्व-संख्या ६.

राहगीर ०–२–४

भागती हुई भैंसकी चपेटसे मकानके नीचे सड़क पर

इस परदेशी राहगीरको गहरी चोट आ गई थी। वह बेहोश हो गया था और सिरसे बहुत खून बहा था। मैंने दौड़कर पड़ोसके अस्पतालसे कम्पाउंडरोंको बुलाकर इसे अस्पताल पहुँचाया और अस्पतालमें दो घंटे उसके पास रहा। ये ढाई तीन घंटे मैं ऊपरके कमरेकी खिड़की पर बैठकर प्रेमाको देखने-में लगा सकता था। प्रेमा ऊपर अपनी छत पर ही थी और अगर मैं इस घायल आदमीके लिए दौड़ न आता तो बराबर छत पर ही रहती। कम्पाउंडरोंको लानेके लिए मैं गजराजको भेज सकता था और घायलकी पट्टी बँध जानेके बाद मैं उसे अकेला छोड़कर या विनोदको उसके पास बिठाकर वापस आ सकता था। लेकिन दुखीकी सेवा भी तो करनी ही चाहिए। मेरे हाथ रखनेसे उसे सिरमें जितना आराम मिल रहा था, उतना और किसीसे नहीं मिलता। वह मुझे बहुत अच्छा आदमी जान पड़ता था।

१०—आय : आयुतिथि १४–२–०, महत्त्व-संख्या १.

९–०–१ राहगीर

दो घंटे बिस्तर पर लेटनेके बाद वह घायल राहगीर एकदम उठ खड़ा हुआ। वह मुसकराया, जैसे उसे कोई चोट ही न आई हो। उसने मुझे खींचकर सीनेसे लगा लिया। मुझे बहुत ही अच्छा लगा। थोड़ी देरको मैं सब कुछ उस सुखमें भूल गया, लेकिन एकदम मुझे प्रेमाकी याद आ गई। मेरी बन्द की हुई आँखोंसे आँसू बह चले। राह-गीरने मेरी ठोढ़ी उठाकर और सिर पर हाथ फेरकर सिर्फ़ दो शब्द कहे—'आँखें खोलो।' मैंने आँखें खोल दीं। प्रेमा-का रंज मेरे मनसे एकदम न जाने कहाँ चला गया। वह एक

आता हूँ। मामाजीके मकानके सामने हीं प्रेमाका घर है। ऊपरके कमरेसे अक्सर उस मकानकी छत पर और कभी-कभी नीचे सड़क पर मैं उसे देखता हूँ। कल रात दो महीने बाद मैं शहरमें आया हूँ। मामीसे मालूम हुआ कि उसे तीन दिनसे बुखार आ रहा है। उसे अबकी बार छत पर नहीं देख पाऊँगा, यह सोचकर मुझे रातभर नींद नहीं आई। लेकिन आज सवेरे आठ बजे ही वह उस छत पर आकर बैठ गई। गरमी और धूप बहुत थी। लेकिन वह मेरे ऊपरवाले कमरेकी खिड़कीके सामने अपनी छत पर बैठी ही रही। धूप और बुखारसे उसका मुँह लाल हो रहा था, पसीना चू रहा था, लेकिन वह बैठी ही रही। उसे शायद मालूम है कि उसे देखना मुझे अच्छा लगता है। शायद उसे भी मुझे देखना अच्छा लगता है। लेकिन उसने मुझे आज ज़्यादा बार देखनेकी कोशिश नहीं की और मुझे ही अपने आपको जी भरकर देखने दिया। हम दोनों एक दूसरेको एक साथ तो नहीं देख सकते। एक साथ देखनेमें आँखसे आँख मिल जाती है और झिझक मालूम होती है। उसने आज मुझपर कितनी बड़ी दया की। इसमें आज उसे कितना कष्ट उठाना पड़ा। उसका वह बुखार, धूपसे लाल और इतना कोमल मुँह! उसकी मा जब उसे कुछ कहती हुई ले गई, तभी वह बहुत बे-मनसे गई। ८ बजे की आई वह सवा ग्यारह बजे नीचे गई। मेरे लिए उसकी कृपा और त्यागकी कोई हद नहीं है।

४—व्यय : आयुतिथि १४–२–०, महत्त्व-संख्या ६.

राहगीर ०–२–४

भागती हुई भैंसकी चपेटसे मकानके नीचे सड़क पर

इस परदेशी राहगीरको गहरी चोट आ गई थी। वह बेहोश हो गया था और सिरसे बहुत खून बहा था। मैंने दौड़कर पड़ोसके अस्पतालसे कम्पाउंडरोंको बुलाकर इसे अस्पताल पहुँचाया और अस्पतालमें दो घंटे उसके पास रहा। ये ढाई तीन घंटे मैं ऊपरके कमरेकी खिड़की पर बैठकर प्रेमाको देखनेमें लगा सकता था। प्रेमा ऊपर अपनी छत पर ही थी और अगर मैं इस घायल आदमीके लिए दौड़ न आता तो बराबर छत पर ही रहती। कम्पाउंडरोंको लानेके लिए मैं गजराजको भेज सकता था और घायलकी पट्टी बँध जानेके बाद मैं उसे अकेला छोड़कर या विनोदको उसके पास बिठाकर वापस आ सकता था। लेकिन दुखीकी सेवा भी तो करनी ही चाहिए। मेरे हाथ रखनेसे उसे सिरमें जितना आराम मिल रहा था, उतना और किसीसे नहीं मिलता। वह मुझे बहुत अच्छा आदमी जान पड़ता था।

१०—आय : आयुतिथि १४–२–०, महत्त्व-संख्या १.

९–०–१ राहगीर

दो घंटे बिस्तर पर लेटनेके बाद वह घायल राहगीर एकदम उठ खड़ा हुआ। वह मुसकराया, जैसे उसे कोई चोट ही न आई हो। उसने मुझे खींचकर सीनेसे लगा लिया। मुझे बहुत ही अच्छा लगा। थोड़ी देरको मैं सब कुछ उस सुखमें भूल गया, लेकिन एकदम मुझे प्रेमाकी याद आ गई। मेरी बन्द की हुई आँखोंसे आँसू बह चले। राहगीरने मेरी ठोढ़ी उठाकर और सिर पर हाथ फेरकर सिर्फ़ दो शब्द कहे—'आँखें खोलो।' मैंने आँखें खोल दीं। प्रेमाका रंज मेरे मनसे एकदम न जाने कहाँ चला गया। वह एक

बार और मुसकराया। वह अबकी मुझे बहुत तन्दुरुस्त और कम उम्रका जान पड़ा। वह धीरे-धीरे अस्पतालके कमरेसे बाहर हो गया। मैं उसके पीछे न जाने क्यों न जा सका। अस्पतालवालोंने उसकी बहुत खोज की, लेकिन वह नहीं मिला।

११—आय : आयुतिथि १४–२–१, महत्त्व-संख्या २.

८–४–१ **प्रेमा**

आज प्रेमाका शहर छोड़कर अपने घर आया हूँ। चलते समय वह कुछ दूर-दूर मेरे पीछे-पीछे ताँगेके अड्डे तक आई थी और जब मैं ताँगे पर बैठ गया था तो सड़क किनारेके अमरूदके बाग़में एक अमरूदके पेड़से लिपटकर फूट-फूटकर रोई थी। आज मुझे पक्का विश्वास हुआ कि वह मुझसे बेहद प्रेम करती है और इस प्रेममें वह घुल रही है। आज घर पहुँचकर वह शायद रोते-रोते मर जायगी। मर गई तो वह स्वर्गमें जायगी या नरकमें ? लेकिन मा-बापकी आज्ञाके बिना जो लड़कियाँ अपने मनमें किसी ग़ैर लड़केसे प्रेम करती हैं, वे मरनेके बाद ज़रूर नरकमें जाती होंगी। अगर वह नरकमें गई तो.....ओह ! मैं यह नहीं होने दूँगा। लेकिन मैं कर भी क्या सकता हूँ ? तो फिर मैं उसे अपने आपसे प्रेम नहीं करने दूँगा। मैं उसके सामने अब कभी नहीं जाऊँगा। मेरा मन कहता है, वह आजके रोनेमें मरेगी नहीं। ज़रूर पहले भी वह ऐसे कई बार रोई होगी। मैं उसके सामने नहीं जाऊँगा तो उसे दुःख नहीं लगेगा। फिर उसके मा-बाप उसका कहीं ब्याह कर देंगे। मैं भी बड़ा होकर किसी कम सुन्दर लड़कीसे ब्याह कर लूँगा। मेरा और प्रेमाका ब्याह

नहीं हो सकता; क्योंकि वह मुझसे साल भर बड़ी है और उसकी बिरादरी भी दूसरी है। मेरे साथ ब्याह करना धर्म और मा-बापोंके ख़िलाफ़ होगा। और कहीं ब्याह हो जाने पर वह पूजा-पाठ करके मेरे प्रेमके पापको दूर कर लेगी। तब नरकका डर न रहेगा। जिसमें धर्मको और मा-बापके दिलोंको चोट लगे, ऐसा काम पाप नहीं तो और क्या होगा? अब तक मैंने अपने दुःखमें प्रेमाके दुःखको सोचा ही नहीं। यह मेरी भूल थी। अब मैं उसे भूल जाऊँगा। लेकिन प्रेमाका दिल तो कमज़ोर होगा। फिर भी धीरे-धीरे सब ठीक हो जायगा।

१२—आय : आयुतिथि १४–८–२८, महत्त्व-संख्या १६.

२–४–२ भाई

भाई और चाचाजीके परिवारोंके बीच एक हफ़्तेसे लड़ाई होकर बोलचाल बन्द हो गई है। चाची-चाचासे न बोलना और उनके प्यार का उत्तर न देना मेरे लिए असम्भव है, हालाँकि एक महीनेसे, जबसे पिताजी नहीं रहे, मैं भाईके हिस्सेमें आया हुआ हूँ। इस लड़ाईके विरोधमें मैंने दो दिनसे तीन फ़र्लांग दूरके जंगलमें निराहार वनवास लिया है। आज भाईने तपोवनमें मुझे घेरकर कहा—'चल, घर चल, तेरी ख़ातिर मैं चाची-चाचाके पैर छुऊँगा और माफ़ी माँगूँगा। मेरे आँसुओंसे भाईकी गोद और भाईके आँसुओंसे मेरा सिर भीग गया।

१३—आय : आयुतिथि १५–२–११, महत्त्व-संख्या १९.

२–३–० भगवती : मित्र और सहपाठी

भगवतीके बराबर मेरा कोई दोस्त नहीं है। मेरी

बार और मुसकराया। वह अबकी मुझे बहुत तन्दुरुस्त और कम उम्रका जान पड़ा। वह धीरे-धीरे अस्पतालके कमरेसे बाहर हो गया। मैं उसके पीछे न जाने क्यों न जा सका। अस्पतालवालोंने उसकी बहुत खोज की, लेकिन वह नहीं मिला।

११—आय : आयुतिथि १४–२–१, महत्त्व-संख्या २.

८–४–१ **प्रेमा**

आज प्रेमाका शहर छोड़कर अपने घर आया हूँ। चलते समय वह कुछ दूर-दूर मेरे पीछे-पीछे ताँगेके अड्डे तक आई थी और जब मैं ताँगे पर बैठ गया था तो सड़क किनारेके अमरूदके बाग़में एक अमरूदके पेड़से लिपटकर फूट-फूटकर रोई थी। आज मुझे पक्का विश्वास हुआ कि वह मुझसे बेहद प्रेम करती है और इस प्रेममें वह घुल रही है। आज घर पहुँचकर वह शायद रोते-रोते मर जायगी। मर गई तो वह स्वर्गमें जायगी या नरकमें ? लेकिन मा-बापकी आज्ञाके बिना जो लड़कियाँ अपने मनमें किसी ग़ैर लड़केसे प्रेम करती हैं, वे मरनेके बाद ज़रूर नरकमें जाती होंगी। अगर वह नरकमें गई तो.....ओह ! मैं यह नहीं होने दूँगा। लेकिन मैं कर भी क्या सकता हूँ ? तो फिर मैं उसे अपने आपसे प्रेम नहीं करने दूँगा। मैं उसके सामने अब कभी नहीं जाऊँगा। मेरा मन कहता है, वह आजके रोनेमें मरेगी नहीं। ज़रूर पहले भी वह ऐसे कई बार रोई होगी। मैं उसके सामने नहीं जाऊँगा तो उसे दुःख नहीं लगेगा। फिर उसके मा-बाप उसका कहीं ब्याह कर देंगे। मैं भी बड़ा होकर किसी कम सुन्दर लड़कीसे ब्याह कर लूँगा। मेरा और प्रेमाका ब्याह

नहीं हो सकता; क्योंकि वह मुझसे साल भर बड़ी है और उसकी बिरादरी भी दूसरी है। मेरे साथ व्याह करना धर्म और मा-बापोंके ख़िलाफ़ होगा। और कहीं व्याह हो जाने पर वह पूजा-पाठ करके मेरे प्रेमके पापको दूर कर लेगी। तब नरकका डर न रहेगा। जिसमें धर्मको और मा-बापके दिलोंको चोट लगे, ऐसा काम पाप नहीं तो और क्या होगा? अब तक मैंने अपने दुःखमें प्रेमाके दुःखको सोचा ही नहीं। यह मेरी भूल थी। अब मैं उसे भूल जाऊँगा। लेकिन प्रेमाका दिल तो कमज़ोर होगा। फिर भी धीरे-धीरे सब ठीक हो जायगा।

१२—आय : आयुतिथि १४–८–२८, महत्त्व-संख्या १६.

२–४–२ भाई

भाई और चाचाजीके परिवारोंके बीच एक हफ़्तेसे लड़ाई होकर बोलचाल बन्द हो गई है। चाची-चाचासे न बोलना और उनके प्यार का उत्तर न देना मेरे लिए असम्भव है, हालाँकि एक महीनेसे, जबसे पिताजी नहीं रहे, मैं भाईके हिस्सेमें आया हुआ हूँ। इस लड़ाईके विरोधमें मैंने दो दिनसे तीन फ़र्लांग दूरके जंगलमें निराहार वनवास लिया है। आज भाईने तपोवनमें मुझे घेरकर कहा—'चल, घर चल, तेरी ख़ातिर मैं चाची-चाचाके पैर छुऊँगा और माफ़ी माँगूंगा। मेरे आँसुओंसे भाईकी गोद और भाईके आँसुओंसे मेरा सिर भीग गया।

१३—आय : आयुतिथि १५–२–११, महत्त्व-संख्या १६.

२–३–० भगवती : मित्र और सहपाठी

भगवतीके बराबर मेरा कोई दोस्त नहीं है। मेरी

उसकी जान-पहचान अभी आठ महीनेकी ही है। फिर भी मन बहुत मिल गया है। उसकी सलाह मुझे बहुत अच्छी लगती है। हम दोनोंको दुनियामें बड़े काम करने हैं। आज हम दोनोंने बैठकर अपने जीवनोंका उद्देश्य निश्चित किया है। वह जगदीशचन्द्र बोससे भी बड़ा साइंटिस्ट बनेगा और मैं दयानन्द सरस्वतीसे भी बड़ा उपदेशक।

१४—आय : आयुतिथि १५–४–२८, महत्त्व-संख्या ८.
६–३–२ **जेम्स एलेन**

जेम्स एलेनकी एक पुस्तक आज समाप्त की है और दूसरी शुरू की है। मेरे जीवनके विकासमें मेरे लिए जो पथ-प्रदर्शन अपनी पुस्तक-द्वारा जेम्स एलेनने किया है, उसके लिए आज पहली बार मुझे एक मरे हुए व्यक्तिका कृतज्ञ होना पड़ा है। मेरी श्रद्धाके दो फूल क्या उस स्वर्गवासी परोपकारी महापुरुष तक पहुँच सकेंगे !

१५—आय : आयुतिथि १६–८–२५ महत्त्व-संख्या ६.
७–२–० **गोखार : एक पहाड़**

गोखारसे मुझे प्रेम हो गया है। इसकी चोटी पर पहुँचते ही मैं ऊँचे भावों और विचारोंसे भर जाता हूँ, जैसे इस चोटीके पास ही कहीं इनका स्रोत है। आज मैंने इस गिरि-शिखरकी उस चट्टानको बाँहोंमें भरकर अनेक बार चूमा है और मुझे ऐसा लगा है कि गोखारगिरिकी भी एक आत्मा है और यह विशाल पर्वत उस आत्माका एक सुन्दर सुकुमार शरीर है, जो मेरी बाँहोंमें पूरा समा सकता है और मेरी आत्मा गोखारकी आत्मासे बहुत बड़ी है।

५—व्यय: आयुतिथि १८–४–२२, महत्त्व-संख्या ४.

कलावती २–४–१

यह पड़ोसकी एक खराब औरत है। बहुत लोग इसके यहाँ आते-जाते हैं। मुझे अक्सर यह हँसकर देखती है। आज उसने इशारेसे मुझे बुलाया भी है। तबसे मेरा मन बहुत खराब हो रहा है। ऐसे बुरे विचारको रोकना बहुत कठिन है।

१६—आय : आयुतिथि १९–८–८, महत्त्व-संख्या २०.

२–२–४ उमा

डेढ़ घंटेकी परिचिता इस सुन्दरी नवयुवा बालिकाके मीठे चुम्बनोंका मुझे जीवन भर ऋण मानना चाहिए। उनमें मिली हुई मिठास और तृप्ति मेरी इस नई प्यासके लिए कुछ समयको काफ़ी होगी। क्या मैं उसके लिए कभी कुछ कर सकूंगा ?

१७—आय : आयुतिथि २०–८–५, महत्त्व-संख्या २३.

२–२–० प्रोफ़ेसर झा

पिछली रात इस नये शहरमें अपरिचित प्रोफ़ेसर झा के घर शरण लेनी पड़ी है। उन्होंने मुझे बातोंमें लगभग सारी रात जगाया है। आज सुबह चाय पर बैठे हुए उन्होंने मेरी पीठ पर हाथ रखकर कहा—'तुम्हारे पास साधन है, समाजके लिए तुम बहुत कुछ कर सकते हो, तुम्हें करना होगा। मैंने तुम्हें खोज निकाला है।' समाजके लिए अपनी उपयोगिता और कर्त्तव्यका ज्ञान और उसके लिए संचित अपने सामर्थ्यका परिचय और सक्रियताके लिए एक नई गतिकी

प्रेरणा मुझे आज पहले-पहल प्रोफ़ेसर झाके शब्दोंसे मिली है।

१८—आय : आयुतिथि २१–४–१२, महत्त्व-संख्या १७.

२–३–४ दिवाकर : मित्र, डाक्टर

दिवाकरके हाथों आज मैंने एक कठिन रोगसे पुनर्जीवन पाया है। आज मैंने उन्हें मेरी आत्मा और मनसे ध्यान हटाकर मेरे शरीर पर ही अपना ध्यान और शक्ति एकाग्र करते देखा है। शरीर-चिकित्सककी सफलता और देवत्व-का रहस्य आज मैंने डाक्टर दिवाकरकी स्थिर आँखोंमें देखा है। इसके पहले उदासीनताके अवसरों पर मित्र दिवाकरसे मैंने मित्रताके जो पाठ सीखे हैं, उनके लिए मेरी अगली मैत्री भावनाएँ सदैव ऋणी रहेंगी।

१९—आय : आयुतिथि २२–२–१०, महत्त्व-संख्या ९.

५–४–१ विश्वम्भरनाथ

यह एक सहृदय साहित्यप्रेमी धनिक हैं। पिछले सप्ताहसे एक कठिन विपत्तिमें फँस गया हूँ। कई जगह गया, किसीने झूठ-मूठको भी सहानुभूति नहीं दिखाई। आज विश्वम्भरजीने जिस सहानुभूतिसे मेरी कथा सुनी है और सहायताका जो वचन दिया है, उस 'वचनमात्र' के लिए मैं उनका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। मेरी सहायता मेरे अपने बाहु-बलकी चीज़ होनी चाहिए, उनकी कोठीसे निकलकर मुझे ऐसा लगा है। अगर विश्वम्भरजी अपने वचनका पालन न कर सके—जैसा कि उनके दो-एक परिचितोंने मुझे अभी बताया है—तो क्या मैं उनकी आजकी कृपासे उऋण हो जाऊँगा ?—कभी नहीं !

२०—आय : आयुतिथि २२–५–१२, महत्त्व-संख्या १८.

२–३–३ माधवराव

मेरा इनका सम्पर्क अधिक नहीं है। मेरे रिश्तेदारके मित्र होनेके नाते यह मेरे आदरणीय हैं और मुझपर कुछ स्नेह रखते हैं। मेरे एक मित्रकी दूकानमें कल रात चोरी हो गई है। उनका हाथ पहलेसे ही तंग है। मेरे इन मित्रकी चर्चा और उस पर मेरी चिन्ताकी भनक माधवरावजीके कानमें पड़ने पर उन्होंने पाँचसौका एक चेक मेरे हाथमें देते हुए कहा—'यह उन्हें दे दीजिए, दूकान सम्हलनेपर जब हो सकेगा अदा कर देंगे। आपके मित्र जैसे मेरे मित्र।'

२१—आय : आयुतिथि २२–१०–५, महत्त्व-संख्या १४.

३–३–१ जगदीश

जगदीश एक बड़े मिल-मालिकका लड़का है। आज उसने मुझे घेरकर कहा—"मैं तुम्हें अपने नये कारखानेमें साझीदार बनाऊँगा—तुम्हें यह मानना ही पड़ेगा, तुम पर मेरा विश्वास है।" जगदीशने आज मेरा एक नया रूप और नया महत्त्व मुझे दिखाया है। मुझे अपनी ऊँची ईमानदारी और लौकिक व्यवहारकुशलताका ज्ञान आज जगदीशने कराया है। जो महत्ता वह दूसरोंमें खोजता है, वह उसमें मौजूद है। आज उसने, मानो संसार भरकी ओरसे जो सम्मान मुझे दिया है, उसे मुझे जीवन भर निभाना होगा। दिवाकर से मैंने जो पाया है, जगदीशके हाथों उसे बढ़ाना होगा।

२२—आय : आयुतिथि २३–०–१, महत्त्व-संख्या ३.

८–२–१ मीनू भाई

कल सड़कपर मेरे एक साथीने इनसे मेरा परिचय कराया था और उस दो मिनटके परिचयके बाद अपनी कार स्टार्ट करते हुए इन्होंने मुझसे कहा था—"हमारे घरमें आना कभी, चाय पियोगे तो चाय भी पिलवायेंगे। कल शाम आ सकोगे?" मैंने स्वीकृति दे दी थी और आज उनकी कोठी पर पहुँचने पर उन्होंने 'आओ, भाई, तुम आ गये' कहकर मेरा स्वागत किया और अपनी एक आलमारीके दोनों पल्ले खोलते हुए कहा—"यह बहुत दिनसे तुम्हारा इन्तज़ार कर रही है। जो किताब पसन्द आये, ले सकते हो।" उनके 'भाई' कहनेमें मुझे एक अपूर्व स्थायित्व जान पड़ा और लगा कि सचमुच वह और उनकी अलमारी न जाने कबसे मेरा इन्तज़ार कर रही है। एक पुस्तक उनसे आज ले आया हूँ और अब तक उसे आधी पढ़ चुका हूँ। इस पुस्तकने मुझे अपने जीवनको समझने और जीनेके लिए एक नया और अमिट प्रकाश दिया है।

६—व्यय : आयुतिथि २३–३–२६, महत्त्व-संख्या २.

<u>गोपीनाथ</u> ५–४–२

ज़रा-सी बात पर चिढ़कर इसने अब बात-बातमें मेरा अपमान और मेरे कामोंमें रुकावट डालना शुरू कर दिया है। मुझे हानि पहुँचानेके लिए यह स्वयं भी बड़ेसे बड़ा कष्ट सहनेके लिए तैयार है। न जाने इसने मुझसे कहाँका वैर निकाला है। पचास रुपये महीनेकी तरक्की पर इसने बाहर जाना इसीलिए नामंजूर कर दिया है कि बाहर पहुँचकर यह मुझे नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा। आज सुबह मेरे प्रशंसक मित्र उमाचरनके पिताने मुझसे जो अनुचित प्रश्न

किये हैं और उमाचरनने मेरे पास आने-जानेकी जो मजबूरी बताई है वह गोपीनाथ की ही ज़हरीली करतूतका नतीजा हो सकता है। उमाचरनका विछोह गोपीनाथके पहुँचाये नुक़सानोंमें मेरा सबसे बड़ा नुक़सान है। आज सारे दिन मेरा दिल गोपीनाथके लिए क्रोधमें जलता रहा है।

२३—आय : आयुतिथि २३–३–२७, महत्त्व-संख्या ११.
४–०–० गोपीनाथ

गोपी बाबूके सम्पर्कने मुझे अपने क्रोधी स्वभावको पहचानने दिया है, मेरे क्रोधको उभारकर क़ाबूमें लानेका मुझे अवसर दिया है। उन पर जो-जो दोष मैंने लगाये हैं, उनमेंसे कुछ ग़लत भी हो सकते हैं। हो सकता है, उमाचरन या उसके पिता तक गोपीबाबूकी पहुँच ही न हो, अपना तबादला उन्होंने किसी और वजहसे पसन्द न किया हो। अपनी मूर्खता अब मेरी समझमें आ रही है। अपने शब्दों या कामोंसे नहीं तो अपने कठोर विचारोंसे ज़रूर मैंने उनकी क्रोधाग्निको भड़काया है। विचारोंकी क्रिया और प्रभावके सम्बन्धमें तो मैं काफ़ी पढ़ और समझ चुका हूँ। गोपी बाबूने सचमुच मुझे इस व्यायाममें डालकर मेरा बड़ा उपकार किया है। मैं अपने स्नेह और सहानुभूतिके भावोंसे उन्हें शान्त करनेका प्रयत्न करूँगा। गोपीबाबूने मेरे लिए नादान दुनियाका प्रतिनिधित्व किया है। मुझे गोपी बाबूके बहाने ऐसी दुनियासे बरतना सीखना चाहिए।

२४—आय : आयुतिथि २३–७–२३, महत्त्व-संख्या ५.
७–४–१ राय अमरनाथ

राय अमरनाथ कुछ दिनोंसे मेरे आदरणीय और मित्र हैं। आज उन्होंने बातोंमें कहा—"मैं तुम्हारा हर क़सूर माफ़ कर सकता हूँ। तुम्हारे मनमें उठनेवाली हरएक भली-बुरी बात सुन सकता हूँ, तुम्हारे हर सवालका जवाब देनेको तैयार रह सकता हूँ। एक बार मैंने तुम्हें इसके 'योग' समझ लिया है और अब तुम्हारी कोई भी कमी, कमज़ोरी या बुराई मुझे तुम्हारे लिए उस लिहाज़से डिगा नहीं सकती, जिसे बनाये रखना मैं इंसानियतका अटल 'कर्त्तव्व' समझता हूँ। तुम्हारी कोई भी खराबी तुम्हारी ज़िन्दगीका 'इस्थाई' अंग नहीं हो सकती।" रायसाहबमें मैंने आज एक ऐसा सुलझा हुआ और आदरणीय व्यक्ति पाया है, जिससे सहारा लेकर मैं समाजसे मित्रताके प्रयोग करके कुछ आवश्यक पाठ तैयार कर सकता हूँ।

२५—आय : आयुतिथि २३–११–२६, महत्त्व-संख्या ४.

८–१–० **घासवाला लड़का**

बाग़के बाहरी लान पर बैठा मैं विचारमग्न लिख रहा था। एक घास खोदनेवाले आठ सालके लड़केने अपना घासका गट्ठर मेरे सामने पटककर कहा—'बाबू, ज़रा इसे देखे रहना, मैं अभी आता हूँ' और चला गया। दस मिनट बाद वह लौटा और अपना गट्ठर सम्हालते हुए मुसकराकर बोला—"लो बाबू, अब खूब सोचना और लिखना, मैं यह चला।" और वह उस खुले मैदानमें **दो-चार क़दम चलकर ही एकदम विलीन हो गया।** मेरे सोचने और लिखनेके लिए उसने मुझे एक नई विचारधारा दी है, जिसके बिना मेरा सोचना बिलकुल अधूरा था। उसके गट्ठरकी तरह अब मुझे अपने

सभी छोटे-बड़े, परिवार, पड़ोस और सड़कके कर्त्तव्योंकी भी रखवाली करनी है और अपनी ऊँची विचारधाराओं और कर्त्तव्योंमें उन्हें बाधक नहीं, बल्कि उनका ही एक आवश्यक विस्तार समझना है।

| | |
|---|---|
| | २१—२—४ |
| | शेष धन ९६—०—१ |
| ११७—३—० | ११७—३—० |

---

[नोट—-इसी कैशबुकका आगेका एक पन्ना बतलाता है कि प्रेमा; राहगीर, गोखार, मीनू भाई, गोपीनाथ और घासवालाके साथ उसका लेन-देन पहलेका भी है और रम्भा, राहगीर, उमा, जगदीश, मीनू भाई और राय अमरनाथके साथ उसका लेन-देन आगे भी चलेगा। इस नोट-का ध्यान रखकर उन विवरणोंको पढ़नेसे वे कुछ और भी प्रकाश डालते हैं—-रावी]

राय अमरनाथ कुछ दिनोंसे मेरे आदरणीय और मित्र हैं। आज उन्होंने बातोंमें कहा—"मैं तुम्हारा हर क़सूर माफ़ कर सकता हूँ। तुम्हारे मनमें उठनेवाली हरएक भली-बुरी बात सुन सकता हूँ, तुम्हारे हर सवालका जवाब देनेको तैयार रह सकता हूँ। एक बार मैंने तुम्हें इसके 'योग' समझ लिया हैं और अब तुम्हारी कोई भी कमी, कमज़ोरी या बुराई मुझे तुम्हारे लिए उस लिहाज़से डिगा नहीं सकती, जिसे बनाये रखना मैं इंसानियतका अटल 'कर्त्तव्य' समझता हूँ। तुम्हारी कोई भी खराबी तुम्हारी ज़िन्दगीका 'इस्थाई' अंग नहीं हो सकती।" रायसाहबमें मैंने आज एक ऐसा सुलझा हुआ और आदरणीय व्यक्ति पाया है, जिससे सहारा लेकर मैं समाजसे मित्रताके प्रयोग करके कुछ आवश्यक पाठ तैयार कर सकता हूँ।

२५—आय : आयुतिथि २३–११–२६, महत्त्व-संख्या ४.

८–१–० घासवाला लड़का

बाग़के बाहरी लान पर बैठा मैं विचारमग्न लिख रहा था। एक घास खोदनेवाले आठ सालके लड़केने अपना घास-का गट्ठर मेरे सामने पटककर कहा—'बाबू, जरा इसे देखे रहना, मैं अभी आता हूँ' और चला गया। दस मिनट बाद वह लौटा और अपना गट्ठर सम्हालते हुए मुसकराकर बोला—"लो बाबू, अब खूब सोचना और लिखना, मैं यह चला।" और वह उस खुले मैदानमें **दो-चार क़दम चलकर हो एकदम विलीन हो गया।** मेरे सोचने और लिखनेके लिए उसने मुझे एक नई विचारधारा दी है, जिसके बिना मेरा सोचना बिलकुल अधूरा था। उसके गट्ठरकी तरह अब मुझे अपने

सभी छोटे-बड़े, परिवार, पड़ोस और सड़कके कर्त्तव्योंकी भी रखवाली करनी है और अपनी ऊँची विचारधाराओं और कर्त्तव्योंमें उन्हें बाधक नहीं, बल्कि उनका ही एक आवश्यक विस्तार समझना है।

| | |
|---|---|
| | २१–२–४ |
| | शेष धन ९६–०–१ |
| ११७–३–० | ११७–३–० |

---

[नोट——इसी कैशबुकका आगेका एक पन्ना बतलाता है कि प्रेमा; राहगीर, गोखार, मीनू भाई, गोपीनाथ और घासवालाके साथ उसका लेन-देन पहलेका भी है और रम्भा, राहगीर, उमा, जगदीश, मीनू भाई और राय अमरनाथके साथ उसका लेन-देन आगे भी चलेगा। इस नोटका ध्यान रखकर उन विवरणोंको पढ़नेसे वे कुछ और भी प्रकाश डालते हैं——रावी]

# विश्व-कथा

कथा इतिहास-युगके पहले किसी पुराण-युगकी है ।

सागरके एक छोटेसे द्वीपके किनारे उस दिन एक जहाज आकर रुका और दो नवयुवक क़ैदियोंको उतार कर वापस लौट गया ।

ये दोनों नवयुवक तत्कालीन चक्रवर्ती सम्राट्के राजकुमार थे एक लड़ाईमें एक अधीनस्थ विद्रोही राजा-द्वारा वन्दी बनाकर ये राजकुमार इस निर्जन वन्य द्वीपमें पशुओंका आहार बननेके लिए छोड़ दिये गये थे । वन्दी राजकुमारोंकी अपने हाथों हत्या करना शत्रु दलके विश्वासके अनुसार अधार्मिक था, और उससे कठिन दैवी विपत्तियोंके उनपर आ पड़नेकी आशंका थी ।

कई दिनके भूखे-प्यासे, दुर्बल-शरीर ये राजकुमार भटकते-भटकते एक झोंपड़ेके समीप जा पहुँचे । द्वीपके उस भागमें कन्दमूल फल-जैसी भी कोई खाने योग्य वस्तु उन्हें नहीं दिखाई पड़ी थी । इस झोंपड़ेमें किसी मनुष्यके होनेकी कल्पनासे उनके हृदयोंमें आशाका संचार हो गया ।

आगे बढ़कर उन्होंने झोंपड़ेका द्वार खटखटाया ।

एक अत्यन्त रूपवती तरुणीने भीतरसे आकर द्वार खोल दिया । उन सुन्दर राजकुमारोंको देखते ही वह उनपर मुग्ध हो गई । बड़े स्नेह-सत्कारके साथ उन्हें भीतर ले जाकर उसने बिठाया । झोंपड़ेमें कोई दूसरा व्यक्ति नहीं था । अतिथियोंका परिचय पाकर उसने अपना भी संक्षिप्त वृत्तान्त वताया । वह रूत देशकी एक कन्या थी । उसके पिता गुप्त विद्याओंके एक बड़े साधक थे । उन्होंने किसी कारणवश अपनी दो स्त्रियोंको इस निर्जन द्वीपमें बसा रखा था । यह तरुणी इस झोंपड़ीमें रहती थी और

उसकी दूसरी बहन द्वीपके मध्य भागमें एक सुन्दर विशाल महलमें रहती थी।

'आप हमें नहीं मिलतीं तो हमारा जीवन ही समाप्त हो जाता। हम आपके अत्यन्त कृतज्ञ हैं। लेकिन हम पाँच दिनसे भूखे हैं। क्या आप पहले हमें कुछ खानेको दे सकेंगी?' बड़े राजकुमारने अधीर होकर कहा।

'तरुणीका मुख उदास हो गया। खानेको तो इस झोंपड़ीमें कुछ नहीं है; यहाँ आसपास भी खाने योग्य कोई वस्तु नहीं है। मैं स्वयं कुछ खाती-पीती नहीं हूँ। [1]मेरे पिताने मुझे एक फूल दे रखा है। उसे सूंघनेसे ही मेरे शरीर-निर्वाहका आवश्यक काम चल जाता है। मुझे सन्देह है, वह फूल आपकी भूख नहीं मिटा सकेगा। आप चाहें तो मेरी बड़ी बहनके महलमें जा सकते हैं। उसके पास खाद्य पदार्थकी कमी नहीं है। वह कुरूपा और कर्कश स्वभावकी होते हुए भी आपको खानेको अवश्य देगी। लेकिन वह फिर आपको मेरे पास नहीं आने देगी। सुन्दरीने विवश भावसे कहा।

"न आने देगी तो न सही, भोजन हमारी पहली आवश्यकता है।" बड़े राजकुमारने छोटे भाईका हाथ पकड़कर उठाते हुए कहा।

तरुणीने फूल लाकर अतिथियोंके सामने प्रस्तुत किया। दोनोंने उसे सूंघा। इससे उन्हें कुछ थोड़ी-सी ताजगी-सी अवश्य मिली, पर

---

[1]यह इस युगके लिए भी कोई असंभव कल्पना नहीं है। योरपमें बवेरिया (कानर्स रिड्थ) की साध्वी थैरसा न्यूमैन और भारतमें बंगालके बियूर ग्रामकी तपस्विनी गिरि बाला बिना कुछ खाये पिये वर्षोंसे—संभवतः इन पंक्तियोंके लिखते समय भी—जीवित हैं। ये दोनों अपने शरीरके लिए पोषक तत्त्व सीधे सूर्यके जीवन तत्त्वसे लेती हैं। देखिये अमरीकाके बंगाली योगी परमहंस योगानन्द लिखित आत्म-कथा।—लेखक।

उनकी क्षुधा और निर्बलता दूर नहीं हुई। फूलसे शरीरके लिए आवश्यक पोषण ले सकनेका अभ्यास उन्हें नहीं था।

"तब फिर" उसी बड़े राजकुमारने चलनेके लिए खड़े होकर कहा, "भूखसे मर जानेके पहले हमें जंगलमें घूमकर खाने योग्य किसी वस्तुकी खोज करनी ही चाहिए। निरुद्यम बैठे रहकर मर जाना तो पाप है।"

लेकिन छोटा राजकुमार उस सुन्दरीके प्रेमपाशमें भरपूर जकड़ गया था। अपने बड़े भाईकी प्रकृतिसे विपरीत वह प्रेमी और सौन्दर्यपूजक स्वभावका था। उसने उस सुन्दरी कुटीरस्वामिनीको छोड़कर भाईके साथ जाना स्वीकार नहीं किया। बड़ा राजकुमार अकेला ही चला गया।

बड़ा राजकुमार बड़ी बहनके महलमें जा पहुँचा। कुमारकी प्रार्थना पर, कुछ सोचकर, उसने उसे खिला-पिला कर अपने महलमें ही दूसरे नौकरोंके बीच रख लिया। उस महलकी स्वामिनीके असुन्दर रूप और कठोर स्वभावसे राजकुमारको घृणा अवश्य हुई, पर जीवनका प्रश्न यहीं हल होता था। वह वहीं रुक गया। राजकुमार खेती-विज्ञानको अच्छी तरह जानता था। महलकी आसपासकी विस्तृत भूमिमें अन्न और फलोंकी खेतीका काम उसके सुपुर्द कर दिया गया। कुछ ही वर्षोंमें भाँति-भाँतिके अन्न और मीठे फलोंकी उपजसे वहाँकी भूमि लहलहा उठी।

छोटा राजकुमार उस तरुणीके प्रेममें इतना आसक्त हो गया था कि उसे किसी अन्य वस्तुकी इच्छा ही न रह गई थी। वह तरुणी भी उसपर हृदयसे निछावर हो चुकी थी। लेकिन यह प्रेम प्रसंग अधिक दिन नहीं चल सका। उस फलकी सुगन्धने राजकुमारका अधिक दिन तक साथ नहीं दिया और वह धीरे-धीरे क्षीण होकर कुछ ही दिनोंमें परलोकको प्रस्थान कर गया।

बड़े राजकुमारको यद्यपि खाने-पीनेकी कमी नहीं थी, फिर भी उसने इतना अधिक परिश्रम किया कि उसका शरीर भी शीघ्र ही टूट गया और छोटे भाईकी मृत्यु के कुछ ही दिन बाद वह भी मर गया।

उधर सम्राट् अपने पुत्रोंके लिए अत्यन्त व्यग्र थे। शत्रुको पराजित कर जब उसके अधिकारमें भी उन दोनोंका पता नहीं चला तब देश-विदेशमें उनकी खोज होने लगी। जिस समय इस द्वीपमें उनके आदमी पहुँचे उस समय तक दोनों कुमार मर चुके थे। सारा समाचार सम्राट्के पास पहुँचा। वह अत्यन्त पीड़ित हुए।

गुप्त विद्याकी सहायतासे उन्होंने दोनों राजकुमारोंका समाचार परलोकसे भी प्राप्त कर लिया। उन दोनोंको उन्होंने फिर शीघ्र ही अपने पुत्रोंके रूपमें जन्म लेनेके लिए बाध्य किया। इन दोनोंके अतिरिक्त पहले भी उनके और कोई पुत्र नहीं था। वही दोनों राजकुमार महलोंमें फिर पैदा हो गये। दोनोंके रूप भी पहले जन्मके रूपसे बहुत कुछ मिलते-जुलते थे। बड़ा राजकुमार अबकी बार भी बड़ा था।

दोनों कुमार सयाने हुए। सम्राट्ने अपनी मृत्युसे पूर्व यथा समय राज्यके दो भाग करके उसे दोनों राजकुमारोंको सौंप दिया। सम्राट्की मृत्यु होते ही दोनोंने अपने-अपने राज्यकी बागडोर सँभाल ली।

परलोक-निवासके समय छोटे राजकुमारने अपनी प्रेमकी साधना और प्रवृत्ति और बड़ेने कृषिका कौशल एवं प्रवृत्ति इतनी अधिक जमा ली थी कि उनके पास दूसरी रुचि और समाईके लिए अवकाश ही नहीं रह गया था। देवताओंको यह वरदान देना पड़ा था कि छोटे कुमारके प्रभावसे केवल प्रेम ही फूले-फलेगा, और बड़ेकी छायामें केवल धन-धान्य की ही बहुलता होगी। इन वरदानोंमें उनकी पूर्व जन्मकी सहचरी और स्वामिनीका भी तान्त्रिक प्रभाव था।

बड़े राजाका देश तेजीके साथ भाँति-भाँतिके धान्यों और खाद्य वनस्पतियोंसे लहलहाने लगा। ऊसर भूमि भी उपजाऊ हो उठी। पहले देशमें अन्नकी कुछ कमी भी पड़ जाया करती थी, किन्तु अब वह इतनी अधिकतासे उत्पन्न होने लगा कि उसकी खपत कठिन हो गई। अतिरिक्त अन्न और फलोंकी भाँति-भाँतिकी सुरा बनने लगी। सुरा निर्माण

विभागमें अधिक से अधिक अन्न खपाया जा सकता था। खूब अन्न उत्पन्न किया जाने लगा और शराबोंका प्रचार बढ़ चला। इस समृद्धिके होते हुए भी उस राज्यके लोग एक दूसरेके प्रति उदासीन होने लगे। पारस्परिक प्रेमकी याचना उनके हृदयोंसे घटने लगी। स्त्री-पुरुषोंका पारस्परिक आकर्षण विलीन होने लगा। सन्तानोत्पत्ति भी एक भार कार्य समझा जाने लगा। राज्यकी जनसंख्या धीरे-धीरे घट चली। कृषिकी कला और विज्ञान लोगोंकी सर्वप्रथम रुचिका विषय बन गया।

छोटे राजाकी प्रजाका ह्रास दूसरे प्रकारसे, किन्तु और भी तेजीके साथ होने लगा। राज्यमें अन्नकी पैदावार घटने लगी। प्रेमकी प्रवृत्तिने उग्र रूप धारण कर लिया। केवल प्रेम और सेवाकी भावनासे प्रेरित होकर वे लोग खेती बारीका भी काम थोड़ा-बहुत करते थे, किन्तु कृषिकी देन उनके हाथोंसे निकलती जाती थी। भोजनके अभावमें लोग तेजीसे मरने लगे। कुछ ही शताब्दियोंमें भूतलका यह आधा खंड निर्जन हो गया। राजामें चूँकि पुष्प-गन्धके द्वारा जीवित रहनेकी शक्ति इस जन्ममें आ गई थी—और उसकी पूर्व जन्मकी प्रणयी, वही चिरयौवना सुन्दरी पत्नी रूपमें उसके साथ रह रही थी—इसलिए वह अपने छोटेसे गन्ध-जीवी परिवारके साथ जीवित रहा।

बड़े राजाकी प्रजा भी यथोचित प्रजननके अभावमें दूसरी प्रजाके विनाशकालसे तीन गुने समयमें समाप्त हो गई। इस बड़े राजाने अत्यन्त प्रबल सुराओंके योगसे एक ऐसा रसायन तैयार कर लिया था कि उसके प्रयोगसे उसका शरीर अत्यधिक कालके लिए अमर और अजर हो गया था।

भूलोकके सभी निवासियोंकी स्वर्गलोकमें भीड़ हो गई। वहाँ सूक्ष्म शरीरोंमें उन्हें खाने-पीनेकी कोई आवश्यकता नहीं थी, इसलिए प्रेम प्रवृत्ति वाले मनुष्योंका जीवन अत्यन्त सुख और गहरे प्रेम-सम्पर्कोंमें बीतने लगा। कृषि प्रवृत्तिवालोंको चूँकि एक दूसरेसे कोई लगाव नहीं था इसलिए वे

सब अलग-अलग रहकर कृषि-विज्ञानके अध्ययन और खोजोंमें तन्मय रहने लगे। स्वभावतया, दोनों प्रकारके व्यक्तियोंको स्वर्गलोकके दो अलग-अलग प्रदेशोंमें बसाया गया। कृषि-प्रवृत्ति वाले एक ही स्वर्ग खंडमें रहते हुए भी एक दूसरेसे पृथक् थे।

भूलोकके जीवन-विकासके ईश्वरीय विधानको किस प्रकार आगे बढ़ाया जाय, यह देवताओंकी चिन्ताका विषय बन गया। प्रेम-प्रवृत्ति वाले व्यक्तियोंको संसारमें पुनः जन्म देना व्यर्थ था, क्योंकि भूलोकके जीवनका मुख्य आधार अन्न है। यह जाति वहाँ पनप नहीं सकती थी। कृषि प्रवृत्तिवालोंके भी संसारमें अधिक टिकनेकी आशा नहीं थी। आवश्यक प्रजननकी प्रेरणा यदि थोड़ी बहुत उनमें जगाई भी जा सकती थी तो बच्चोंकी सम्हाल और पालन-पोषणका कष्ट उठानेके लिए उन्हें तैयार करना असम्भव था। कुछ ही शताब्दियोंमें उनके पुनः स्वर्गमें ही डेरा आ जमानेकी पूरी सम्भावना थी। फिर भी भूलोकको जीवन ये ही लोग दे सकते थे।

इस जातिके बीच पारस्परिक प्रेम उत्पन्न करनेके जब देवताओंके सभी प्रयत्न विफल हो गये तब उन्हें एक नई युक्ति सूझी। प्रेम प्रवृत्तिवाली जातिके इनसे मिलने-जुलनेका मार्ग उन्होंने खोल दिया। उस प्रेम जातिके व्यक्ति इस कृषि जातिके व्यक्तियोंके सम्पर्कमें आते ही इन पर भी मुग्ध होने लगे, यद्यपि इस दूसरी जातिके लोगोंने उदासीनता ही दिखाई। आपसमें तो इस जातिका प्रेम करना असम्भव था, क्योंकि दो व्यक्तियोंके बीच किसीकी ओरसे भी कोई आकर्षण नहीं था, किन्तु दूसरी प्रेम जातिके सम्पर्कसे धीरे-धीरे कृषि जाति वालोंमें भी प्रेमकी प्रवृत्ति कुछ-कुछ जागने लगी और वे भी अपने इन प्रेमियोंकी ओर आकृष्ट होना सीखने लगे— आखिर प्रेमका अंकुर रक्खा तो सारी मानव जातिमें ही गया था।

स्वर्ग लोकमें ही कुछ काल तक इस प्रेम प्रयोगको चलानेके बाद देवताओंने दोनों जातियोंमेंसे कुछ व्यक्तियोंको भूलोकमें भेजा और उन्हें

विभागमें अधिक से अधिक अन्न खपाया जा सकता था। खूब अन्न उत्पन्न किया जाने लगा और शराबोंका प्रचार बढ़ चला। इस समृद्धिके होते हुए भी उस राज्यके लोग एक दूसरेके प्रति उदासीन होने लगे। पारस्परिक प्रेमकी याचना उनके हृदयोंसे घटने लगी। स्त्री-पुरुषोंका पारस्परिक आकर्षण विलीन होने लगा। सन्तानोत्पत्ति भी एक भार कार्य समझा जाने लगा। राज्यकी जनसंख्या धीरे-धीरे घट चली। कृषिकी कला और विज्ञान लोगोंकी सर्वप्रथम रुचिका विषय बन गया।

छोटे राजाकी प्रजाका ह्रास दूसरे प्रकारसे, किन्तु और भी तेजीके साथ होने लगा। राज्यमें अन्नकी पैदावार घटने लगी। प्रेमकी प्रवृत्तिने उग्र रूप धारण कर लिया। केवल प्रेम और सेवाकी भावनासे प्रेरित होकर वे लोग खेती बारीका भी काम थोड़ा-बहुत करते थे, किन्तु कृषिकी देन उनके हाथोंसे निकलती जाती थी। भोजनके अभावमें लोग तेजीसे मरने लगे। कुछ ही शताब्दियोंमें भूतलका यह आधा खंड निर्जन हो गया। राजामें चूँकि पुष्प-गन्धके द्वारा जीवित रहनेकी शक्ति इस जन्ममें आ गई थी—और उसकी पूर्व जन्मकी प्रणयी, वही चिरयौवना सुन्दरी पत्नी रूपमें उसके साथ रह रही थी—इसलिए वह अपने छोटेसे गन्ध-जीवी परिवारके साथ जीवित रहा।

बड़े राजाकी प्रजा भी यथोचित प्रजननके अभावमें दूसरी प्रजाके विनाशकालसे तीन गुने समयमें समाप्त हो गई। इस बड़े राजाने अत्यन्त प्रबल सुराओंके योगसे एक ऐसा रसायन तैयार कर लिया था कि उसके प्रयोगसे उसका शरीर अत्यधिक कालके लिए अमर और अजर हो गया था।

भूलोकके सभी निवासियोंकी स्वर्गलोकमें भीड़ हो गई। वहाँ सूक्ष्म शरीरोंमें उन्हें खाने-पीनेकी कोई आवश्यकता नहीं थी, इसलिए प्रेम प्रवृत्ति वाले मनुष्योंका जीवन अत्यन्त सुख और गहरे प्रेम-सम्पर्कोंमें बीतने लगा। कृषि प्रवृत्तिवालोंको चूँकि एक दूसरेसे कोई लगाव नहीं था इसलिए वे

सब अलग-अलग रहकर कृषि-विज्ञानके अध्ययन और खोजोंमें तन्मय रहने लगे। स्वभावतया, दोनों प्रकारके व्यक्तियोंको स्वर्गलोकके दो अलग-अलग प्रदेशोंमें बसाया गया। कृषि-प्रवृत्ति वाले एक ही स्वर्ग खंडमें रहते हुए भी एक दूसरेसे पृथक् थे।

भूलोकके जीवन-विकासके ईश्वरीय विधानको किस प्रकार आगे बढ़ाया जाय, यह देवताओंकी चिन्ताका विषय बन गया। प्रेम-प्रवृत्ति वाले व्यक्तियोंको संसारमें पुन: जन्म देना व्यर्थ था, क्योंकि भूलोकके जीवनका मुख्य आधार अन्न है। यह जाति वहाँ पनप नहीं सकती थी। कृषि प्रवृत्तिवालोंके भी संसारमें अधिक टिकनेकी आशा नहीं थी। आवश्यक प्रजननकी प्रेरणा यदि थोड़ी बहुत उनमें जगाई भी जा सकती थी तो बच्चोंकी सम्हाल और पालन-पोषणका कष्ट उठानेके लिए उन्हें तैयार करना असम्भव था। कुछ ही शताब्दियोंमें उनके पुन: स्वर्गमें ही डेरा आ जमानेकी पूरी सम्भावना थी। फिर भी भूलोकको जीवन ये ही लोग दे सकते थे।

इस जातिके बीच पारस्परिक प्रेम उत्पन्न करनेके जब देवताओंके सभी प्रयत्न विफल हो गये तब उन्हें एक नई युक्ति सूझी। प्रेम प्रवृत्तिवाली जातिके इनसे मिलने-जुलनेका मार्ग उन्होंने खोल दिया। उस प्रेम जातिके व्यक्ति इस कृषि जातिके व्यक्तियोंके सम्पर्कमें आते ही इन पर भी मुग्ध होने लगे, यद्यपि इस दूसरी जातिके लोगोंने उदासीनता ही दिखाई। आपसमें तो इस जातिका प्रेम करना असम्भव था, क्योंकि दो व्यक्तियोंके बीच किसीकी ओरसे भी कोई आकर्षण नहीं था, किन्तु दूसरी प्रेम जातिके सम्पर्कसे धीरे-धीरे कृषि जाति वालोंमें भी प्रेमकी प्रवृत्ति कुछ-कुछ जागने लगी और वे भी अपने इन प्रेमियोंकी ओर आकृष्ट होना सीखने लगे—आखिर प्रेमका अंकुर रक्खा तो सारी मानव जातिमें ही गया था।

स्वर्ग लोकमें ही कुछ काल तक इस प्रेम प्रयोगको चलानेके बाद देवताओंने दोनों जातियोंमेंसे कुछ व्यक्तियोंको भूलोकमें भेजा और उन्हें

पहले बड़े राजकुमारके उपजाऊ भूखंडमें ही जन्म दिया। वहाँ अन्नकी कमी नहीं थी किन्तु लोगोंके बीच प्रेम और उदासीनताका संघर्ष बहुत दिनों तक चलता रहा। एक ओर प्रेममें घुलनेवालों और दूसरी ओर प्रेमीकी उपेक्षा करने वालोंकी कहानियोंमें ही उस युगका इतिहास लिखा जा सकता है। ज्यों ज्यों दिन बीतते गये और नई पुरानी आत्माओंके बार-बार पृथ्वी पर जन्म होते गये त्यों-त्यों यह संघर्ष घटता गया। कृषि जातिके लोगोंमें प्रेम करनेकी और प्रेम-जातिके लोगोंमें कृषि करनेकी क्षमता धीरे-धीरे आने लगी। छोटे राजकुमारने अपने राज्यका अधिकांश भाग बड़े भाईके राज्यमें सम्मिलित कर दिया और जन-संख्या सारे भूतल पर फैलने लगी। प्राय: सभी भूखण्ड उपजाऊ होने लगे। प्रेम-जातिके व्यक्तियोंके प्रभावसे संसारमें कला, ज्ञान और आध्यात्मिक शक्तियोंका भी विकास होने लगा।

गुप्त पुराणोंके कथनके अनुसार भूलोकके वर्तमान निवासी अनेक राष्ट्रों और राज्योंमें बँटे हुए अभी बड़े कृषिप्रवृत्तिवाले राजकुमारके शासनमें है, और छोटे राजकुमारका निवास अपने छोटेसे परिवारके साथ भूतलके एक अत्यल्प-ज्ञात, अनुपजाऊ भूखंडमें है। सम्पूर्ण मानव जातिका लगभग तीसवाँ भाग इस समय भूतल पर सशरीर विद्यमान है। प्रेम-प्रवृत्ति और कृषि-प्रवृत्तिके लोग अभी तक निश्चित रूपमें अलग-अलग जातियोंमें आन्तरिक रूपमें बँटे हुए हैं और उनकी आध्यात्मिक अथवा भौतिक रुचियोंको सूक्ष्म दृष्टिसे देखकर पहचाना जा सकता है। पहले प्रकारके व्यक्ति अध्यात्मवादी और दूसरे प्रकारके भौतिकतावादी हैं। यह ठीक है कि संसारका जीवन कृषि प्रवृत्तिवालोंके बल पर ही चल रहा है, किन्तु उनके प्रेरक आन्तरिक रूपमें, प्रेम-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति ही हैं। प्रेमके बिना संसारमें जीवनका स्थायित्व असम्भव है। प्रेम-व्यक्तियोंका प्रभाव धीरे-धीरे कृषि-व्यक्तियोंके हृदयोंमें घर करता जा रहा है। जब यह प्रभाव पूर्ण-रूपसे व्याप्त हो जायगा तब, किसी दूरातिदूर युगमें

संसारमें न अन्नकी उपज होगी और न उसकी आवश्यकता ही रहेगी। सारे भूतल पर छोटे राजकुमारका शासन हो जायगा और मानवताका निवास-ग्रह इतना सूक्ष्म हो जायगा कि स्वर्ग उसी पर उतर आयेगा।

यह सब होगा अथवा हो सकता है या नहीं, मैं कुछ नहीं कह सकता; किन्तु कुछ दूरदर्शी वैज्ञानिकों और दार्शनिकोंका अभी भी यही मत है कि अन्नकी अपेक्षा प्रेम मनुष्यके लिए अधिक आवश्यक है और अन्नके अभावमें किसी सम्भावित साधन-द्वारा मानव जीवन स्थिर भी रह सकता है, किन्तु प्रेमके अभावमें उसका विनाश निश्चित है।



# माया-यन्त्र

पावक और अंगिरा नामके दो देवता एक बार कुछ अधिक सोमरस पी गये। सोमरसकी मात्रा कुछ इतनी अधिक हो गई कि उनकी सुध-बुध उनके बसमें न रही और उसी नशेकी मस्तीमें वे भूलोककी सैरको निकल पड़े।

पृथ्वीके जिस नगरमें वे पहुँचे, वहाँके लोगोंने उनके सुन्दर और तेजस्वी रूपोंसे आकृष्ट होकर उन्हें चारों ओरसे घेर लिया।

"हम स्वर्गलोकके निवासी देवता हैं और सैरके लिए यहाँ तक चले आये हैं।" उन्होंने लोगोंके प्रश्नके उत्तरमें बताया।

पृथ्वीके निवासी उन दिनों सुखी और अपनी परिस्थितियोंमें सन्तुष्ट थे और उन्हें पृथ्वीके बाहर किसी अन्य वस्तु या परिस्थितिके अस्तित्वका अनुमान न था, लेकिन इन देवताओंको देखकर उनका जिज्ञासापूर्ण कुतूहल जाग उठा था और वे इस नये स्वर्गलोक और वहाँके निवासियोंके बारेमें सभी बातें जान लेना चाहते थे। वैसे, देवताओंकी ओरसे प्रबन्ध और प्रतिबंध था कि भूलोकके मनुष्योंको स्वर्गलोकके सम्बन्धमें कोई कुतूहल-जनक और व्यावहारिक जानकारी अभी न दी जाय; लेकिन चूंकि ये दोनों देवता कुछ अधिक पिये हुए थे, इसलिए इन्हें इस प्रतिबंधका ध्यान न रहा और इन्होंने मनुष्योंके प्रश्नोंपर, स्वर्ग लोकका, वहाँके निवासियों और वहाँकी सुख-सुविधाओंका यहाँ तक कि पृथ्वीसे स्वर्गलोक तकके मार्गका भी सारा भेद उनके सामने खोल दिया। इतना ही नहीं, लोगोंके अनुरोधपर इन देवताओंने अपने दैवी बलसे स्वर्गकी राहमें पड़नेवाले सातों फाटकोंकी चाबियाँ भी उसी समय गढ़ कर लोगोंके हाथमें थमा दीं।

यह सब करकरा कर ये दोनों देवता नशेमें झूमते-झामते स्वर्गलोककी

ओर लौट पड़े। पावक और अंगिरासे पहले ही भूलोकके कुछ तेज-दम मनुष्य उन चावियोंके सहारे स्वर्गलोकमें जा पहुँचे।

उन्हें देखते ही सारे स्वर्गलोकमें सनसनी फैल गई। भूलोकके ये मनुष्य यहाँ कैसे! इन्हें तो अभी नीचे, भूलोकमें ही रह कर अपने जीवन और शक्तियोंका विकास करना चाहिए था, इनके यहाँ आनेसे तो स्वर्गलोकमें बड़ी गड़बड़ी मच जायगी। इन्हें स्वर्गलोकके सुदृढ़ फाटकोंकी चावियाँ कहाँसे मिलीं? आशंकाओंसे भरे हुए ऐसे ही प्रश्न देवताओंके मस्तिष्कोंमें घुमड़ पड़े।

देवराज इन्द्रको इसकी सूचना मिली, वह भी चिंतित हो उठे।

मनुष्योंके सामने किसने यह असामयिक रहस्योद्घाटन किया है, इसका पता लगाते देर न लगी। राजकीय देवदूतोंने पावक और अंगिराकी कलाइयोंमें स्वर्गीय सोनेके सुन्दर कड़े पहनाकर देवराजके दरबारमें उपस्थित किया।

इन दोनों देवताओंपर क्या बीती, यह कहकर मैं इनका कोप-भाजन बननेका साहस नहीं कर सकता; लेकिन इस कहानीके पाठक मनुष्य (और देवता भी, जो कि पहलेसे ही यथेष्ट समझदार हैं) अब इतने समझदार हो गये हैं कि उस सबका बहुत कुछ ठीक-ठीक अनुमान कर सकते हैं।

न्याय क्रियासे निवृत्त होनेके पश्चात् देवराज इन्द्रने इस नई विपत्ति की रोकथामकी ओर ध्यान दिया।

"मनुष्योंको तो अभी अपने लौकिक बल-वैभवकी कामनाओं और स्वार्थ-सिद्धियों-द्वारा अपने भौतिक व्यक्तित्वको सुदृढ़ बनाना चाहिए और उन्हींमें उनका सारा ध्यान बँटा रहना चाहिए। यदि अभीसे वे लोग स्वर्गकी ओर आकृष्ट हो जायंगे तो उनकी भी शिक्षा पूरी न हो पायगी और उनके असामयिक स्वर्गारोहणसे हमारे कामोंमें भी बड़ा विघ्न पड़ेगा। स्वर्ग-पथकी जो चावियाँ भूलोकवासियोंको पावक और अंगिराने दे दी हैं उन्हें हम, अपने दान-सम्बन्धी नियमोंके अनुसार, अब वापस

५

नहीं ले सकते। ऐसी दशामें हमें मनुष्योंका स्वर्ग-प्रवेश रोकनेका कोई उपाय जल्द ही सोच निकालना चाहिए।" इन्द्रने अपने दैव-दरवारको सम्वोधित करके कहा।

देवताओंने अपनी-अपनी रायें देनी आरम्भ कीं।

"स्वर्ग-मार्गके फाटक वदलवा देने चाहिए। इससे मनुष्योंके साथ आई हुई चावियाँ वेकार हो जायँगी।" एकने कहा।

"जिस नगरके लोगोंके हाथ हमारी चावियाँ आ गई हैं उन्हें स्वर्गपुरीके एक उपनगरमें स्थान देकर वसा लेना चाहिए। न वे लोग भूलोकको लौटने पायेंगे और न दूसरे मनुष्योंके यहाँ आनेका क्रम जारी रहेगा।" एक दूसरे देवताका सुझाव था।

"स्वर्गलोककी वस्ती यहाँसे हटाकर कहीं दूर वसा ली जाय, जहाँ तक मनुष्य न पहुँच सकें।" तीसरेने राय दी।

इसी प्रकार तरह-तरहकी रायें चलती रहीं।

सभा अभी किसी निर्णय पर नहीं पहुँची थी कि एक घवराये हुए देवदूतने दरवारमें प्रवेश किया।

"महाराज! मनुष्योंने अपने लोकमें वड़े-वड़े कारखाने खोलकर ठीक वैसी ही चावियाँ ढालनी आरम्भ कर दी हैं। उनका विचार है कि जितने मनुष्य भूतल पर रहते हैं, उतनी ही चावियाँ वना डालेंगे, जिससे प्रत्येक मनुष्यके पास सातों चावियोंका एक-एक गुच्छा हो जाय और वह जव चाहे स्वर्गमें आ सके।"

इस समाचारसे देवताओंके हाथ-पैर और भी फूल गये, उनके माथे पसीनेके पानीसे तर हो गये और वह पानी भूतलके ऊपर घने वादलके रूपमें घिरा दीखने लगा।

"आप लोग चिन्ता न करें" दरवारकी पिछली पंक्तिमें बैठे हुए कूट-कर्मा नामके एक देवताने खड़े होकर कहा, "मनुष्योंको पृथ्वी लोकमें रोकनेका प्रवन्ध मैं कर लूँगा। इस कामका ठेका मुझे दे दिया जाय।"

कूटकर्मा स्वर्गलोकका एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक आविष्कारक और व्यापारी ठेकेदार था और इसके कौशल पर देवताओंको बहुत विश्वास था।

मनुष्योंको पृथ्वीलोक पर रोकनेका ठेका उसे दे दिया गया। इसके लिए उसने साठ अरब द्राविष ('द्राविष' सम्भवत: स्वर्गलोकका एक बड़ा सिक्का होता है) मांगे और वह रकम उसे तुरन्त दे दी गई।

कूटकर्माने ग्रामोफोनके साउन्ड बाक्स-जैसे यन्त्रकी एक दो-मुखी जोड़ी बनाई। एक विशेष आकारकी वस्तुको सामने लाने पर उस यंत्रके पहले मुखसे आवाज निकलती थी—"यह नहीं हो सकता" और दूसरे मुखसे आवाज निकलती थी—"इसे फिर देखेंगे।"

आवश्यक संख्यामें इन यन्त्रोंकी जोड़ियाँ तैयार हो जाने पर कूटकर्माने एकरात भूलोकके लगभग सभी मनुष्योंकी छातियोंमें, उनके सोते समय, वह यंत्र जड़ दिया। जो लोग कारखानोंमें दिन-रात काम करके उन चाबियोंको बना रहे थे, उनकी छातियोंमें वे यन्त्र नहीं जड़े जा सके।

उधर उस नगरके कारीगरोंने बहुत बड़ी संख्यामें ऐसी चाबियाँ, उनका व्यवसाय करनेके लिए गढ़ लीं।

जब वे कारीगर उन चाबियोंको लेकर लोगोंके पास बेचने गये तो उन्हें बड़ा ही निराशाजनक अनुभव हुआ।

चाबीकी उपयोगिता और आवश्यकता बताकर ज्यों ही वे किसी सम्भावित ग्राहकके सामने चाबियोंका गुच्छा निकालते, वह तुरन्त कह उठता—"यह नहीं हो सकता।"

वास्तवमें उस आकार-प्रकारकी चाबियोंका प्रतिबिम्ब पड़ते ही उसकी छाती पर लगाया हुआ वह यन्त्र ही ये शब्द बोल उठता था और यदि सीधा प्रतिबिम्ब न पड़नेके कारण ये शब्द उससे न निकलते तो, तिरछा प्रतिबिम्ब पड़नेपर "इसे फिर देखेंगे" शब्द उस यन्त्रके दूसरे मुखसे निकल पड़ते। वह यन्त्र चाबियोंके आकारसे सम्बधित कुछ ऐसी ही कारीगरीसे बनाया गया था। इस यन्त्रके निर्माणमें कुछ ऐसे मायावी बलका भी प्रयोग किया

गया था जिससे प्रत्येक मनुष्य यही समझता था कि यह उसकी व्यक्तिगत आवाज ही है, और भीतरसे इच्छा होते हुए भी अपनी इस पहले कही वातको पलटनेका साहस वह नहीं करता था।

चावियोंके निर्माता कारीगरोंको मनुष्योंकी इस 'प्रवृत्ति' से वड़ी निराशा हुई और कुछ दिनोंकी असफलताओंके पश्चात् उन्होंने अपना प्रयत्न छोड़ दिया।

मनुष्योंकी अगली पीढ़ियोंमें यह अतिरिक्त यन्त्र मनुष्य शरीरका एक परंपरागत अनिवार्य-सा अंग वन गया और लोग इसकी आवाजको ही निर्विवाद अपनी आवाज समझने लगे। स्वर्गलोकमें मनुष्योंके अतिक्रमणका कोई भय न रह गया।

आगे चलकर देवताओंने इन निर्मित चावियोंको अध्यात्म ग्रन्थोंके रूपमें और उस वक्ष-जटित यन्त्रको मनुष्यके पार्थिव मस्तिष्कके एक जोड़-के रूपमें परिवर्तित कर दिया और उसे उसके वक्षसे हटाकर सरमें जड़वा दिया।

कहते हैं कि देवताओंका यह प्रतिवन्ध अव कुछ टूटने लगा है और लोग स्वर्गलोक और उसकी चावियोंकी ओर कुछ ध्यान देने लगे हैं। फिर भी, अभी ऐसे ही लोगोंकी संख्या अधिक है जो परलोकवादी, स्वर्गकी चावी रखनेवाले अध्यात्म ग्रन्थोंकी वात सामने आने पर बोल उठते हैं—"यह नहीं हो सकता" या "इसे फिर देखेंगे।"

कभी जाँच करके आप भी देखिये, आपके मस्तिष्क या वक्षमें तो यह यन्त्र जड़ा हुआ नहीं है।

---

# अर्थ-मन्त्री

लोकावत राज्यका राजा सौरपाल अत्यन्त बुद्धिमान और लोकप्रिय था।

राजकोषकी स्थायी आय राज्यकी चतुर्थांश भूमिकी कृषिसे—यह चतुर्थांश भूमि राज्यकी, तथा तीन चौथाई भूमि प्रजाजनकी सम्पत्ति होती थी—और शेष प्रजाजनके इच्छित दानसे होती थी। इस इच्छित दानका प्रबन्ध इस प्रकार था: हर पाँचवें वर्ष राजा राज्यके प्रत्येक नगर और ग्रामके दौरेके लिए एक दानपत्र लेकर निकलता था। राजाका आदेश था कि प्रत्येक देशवासी उस पात्रमें यथाशक्ति दान डालें, साथ ही यह भी आदेश था कि यदि कोई व्यक्ति इतना निर्धन है कि वह राज्यके पंचवर्षीय लोक-सम्मेलनमें सम्मिलित होनेके लिए आवश्यक मार्ग और एक जोड़ी नये वस्त्र नहीं जुटा सकता तो वह तदर्थ उस दान-पात्रमें से पाँच रजत-मुद्राओंसे लेकर पांच स्वर्ण-मुद्राएँ तक निकाल ले। लोग उस दान-पात्र-में दान डालते थे और कुछ ऐसे भी दीन-निर्धन प्रजाजन होते थे जो आदेशा-नुसार उसमें से कुछ निकाल लेते थे। इस लेन-देनके पश्चात् जो धन राजकोषमें पहुँचता था वह प्रायः कृषिकी आयके बराबर ही हो जाता था। राज्यमें और किसी प्रकारका कोई कर नहीं था। राजाकी यह पंचवर्षीय यात्रा नौ मासकी होती थी—यात्राके अन्तमें गोदावरी-तटके एक विस्तृत मैदानमें वह पंचवर्षीय मेला लगता था और राज्यके प्रत्येक परिवारका कम-से-कम एक सदस्य इस मेलेमें अवश्य पहुँचता था। मेले-में राजाकी ओरसे सारी प्रजाका भर-पूर सत्कार किया जाता था और बड़ा आनन्द समारोह रहता था।

गोदावरीके तटवर्ती मैदानमें राज्यका पंच-वर्षीय सम्मेलन जुड़ा हुआ

था। एकत्र किये हुए धनका कोष खोला गया। रजत और स्वर्ण-मुद्राओंके साथ उस कोषमें एक ताम्र-मुद्रा भी निकली। राजकीय दान-पात्रमें आई हुई यह ताम्र-मुद्रा एक अभूत-पूर्व बात थी। जो इतना निर्धन है कि केवल एक ताम्र-मुद्रा ही राजकोषको दे सकता है उसने सम्मेलन-में आनेके लिए वस्त्र और मार्गका व्यय दान-पात्रमेंसे अवश्य लिया होगा, फिर इस ताम्रमुद्राके डालनेका क्या अर्थ ? सम्मेलनके निमित्त बसे हुए अस्थायी नगरमें डोंडी पिटवाई गई कि जिस व्यक्तिने दान-पात्रमें ताम्र-मुद्रा डाली हो वह राजदरबारमें उपस्थित हो।

दूसरे दिन राजाज्ञानुकूल नये वस्त्र लपेटे हुए एक दुबला-पतला, क्षुधा-जर्जरित अधेड़ व्यक्ति दरबारमें उपस्थित हुआ।

"आपने दान-पात्रमें ताम्र-मुद्रा डाली थी ?" राजाने उसे खड़ा पाकर पूछा।

"महाराज !" उसने हाथ जोड़कर स्वीकार किया।

"और आपने वस्त्र और मार्ग-व्ययके लिए दान-पात्रमें से कुछ लिया भी था ?" राजाने दूसरा प्रश्न किया।

"महाराज !" उसने दूसरी बात भी स्वीकार की।

उसी दिनसे राजाने उस व्यक्तिको अपने मन्त्रियोंमें अर्थ-मन्त्रीके पद पर नियुक्त कर दिया।

दूसरे दरबारियोंको राजाके इस चुनाव पर बड़ा आश्चर्य हुआ और उनमें अनेक असन्तुष्ट भी हो गये, और किसीने तो प्रकट रूपमें इस पर आपत्ति भी की।

राजाने इस आपत्तिका उत्तर दिया, "इसका निर्णय आप लोग अगले पंचवर्षीय धन-संग्रहका परिणाम देखकर करें तो अधिक अच्छा हो।"

पाँच वर्ष बीत गये और अगले धन-संग्रहके पश्चात् लोक-सम्मेलन उसी प्रकार जुड़ा।

एकत्र धनका कोष खोला गया। अबकी बार उसमें सोने-चाँदीकी

मुद्राएँ कम और ताम्र-मुद्राओंका ही ढेर अत्यधिक था। एकत्र धनका योग लगाया गया —वह पिछली बारसे पाँच गुना था।

सभी दरबारी आश्चर्य-चकित रह गये।

महाराज मुसकराये। सभी दरबारियोंको लक्ष्य करके उन्होंने कहा—

"अबकी बार असाधारण धन-संग्रहका कारण आपमेंसे कोई बता सकते हैं।"

सब चुप रहे।

महाराजने नये अर्थ-मन्त्रीको आदेश दिया कि वे इसका भेद बतायें।

नये अर्थ-मन्त्रीने कहा—

"मैंने प्रजाजनको आदेश भेज दिया था कि कोई भी व्यक्ति अपने सामर्थ्यसे अधिक दान-पात्रमें दान न डाले। फलतः जो लोग संकोच या प्रदर्शन-भावसे प्रेरित होकर अपनी समाईसे अधिक धन देते थे उन्होंने अपनी समाई भर कुछ कम ही धन दिया है, और अधिकांश प्रजाजन जो केवल कुछ ताम्र-मुद्राएँ ही दे सकनेकी समाईके कारण इस दान-यज्ञमें पहले भाग नहीं लिया करते थे, अबकी बार इसमें स्वच्छन्द-भावसे अपना सहयोग दे सके हैं। लोग पहले केवल लेना और न लेना ही ठीक-ठीक जानते थे, अब राज्यके प्रति अपने अनिवार्य कर्तव्य और उत्तरदायित्वको समझकर सहज भावसे देना भी सीख गये हैं।"

नये अर्थ-मन्त्रीकी सफल बुद्धिमत्ता दरबारियोंको स्वीकार करनी पड़ी।

---

# सुखके साथी

स्वर्गलोकमें देवताओंके राजा इन्द्रका दरबार लगा हुआ था। पृथ्वीलोकसे आई हुई एक महान् मनुष्यकी आत्माने उसी समय उस दरबारमें प्रवेश किया।

इन्द्रने उस मनुष्यात्माका यथोचित स्वागत किया और उसे आदर-पूर्वक एक अच्छे आसन पर बिठाया।

जो मनुष्यात्माएँ इस योग्य होती हैं कि पृथ्वीलोकमें अपना जीवन पूरा करके शरीर त्यागते ही सीधे स्वर्ग लोकमें पहुँच सकें उनकी देवताओंमें बहुत बड़ी महिमा मानी जाती है और उन्हें बहुत आदर मानके साथ लिया जाता है। ऐसी मनुष्यात्माओंसे देवताओंको इस पृथ्वीलोकके सम्बन्धमें बहुत-सी नई और उपयोगी बातें ज्ञात होती हैं और उस जानकारीके सहारे वे इस लोकका प्रबन्ध अधिक अच्छाईके साथ कर पाते हैं।

"कहिये महात्मन्!" राजा इन्द्रने बड़ी उत्सुकताके साथ उस मनुष्यात्मा से पूछा, "हमारी प्रिय भूलोककी मनुष्यजातिके सम्बन्धमें जो भी कुछ आप विशेष बात बता सकते हों उसे सुननेके लिए यहाँ उपस्थित सभी देवता उत्सुक हैं। आपने संसारमें बहुत साधनापूर्ण और सफल जीवन बिताया है; मानवजातिके सम्बन्धमें आपकी अनुभवी सम्मति हम लोगोंके लिए विशेष महत्त्वकी वस्तु होगी। मनुष्य-जातिने तो अब तक बहुत कुछ अपना विकास कर लिया होगा!"

"मनुष्य-जातिके सम्बन्धमें"—मनुष्यात्माने कुछ रूखेसे स्वरमें उत्तर दिया, "भूलोकके मनुष्य तो विकासमें बहुत पिछड़े हुए हैं। वे बहुत स्वार्थी हैं और एक दूसरेके केवल सुखके ही साथी हैं। दुःखमें कोई किसीका पूछनेवाला नहीं। मैंने एक बड़े समृद्ध और सुखी परिवारमें जन्म लिया था। बचपनसे जवानी तकके दिन मैंने सोने-चाँदीसे खेल कर बिताये।

उन दिनों मित्रों, परिचितों और नातेदारोंका दल मुझे चौबीस घंटों घेरे रहता था। उनके हृदयोंसे मेरे लिए स्नेह-सम्मान उमड़ा पड़ता था। प्रत्येक व्यक्ति मेरे एक बूंद पसीनेकी जगह अपने शरीरका सारा रक्त बहानेको तैयार था। मैं भी उनके सेवासत्कारमें कोई बात उठा नहीं रखता था। लेकिन मेरे दिन पलटे। धीरे-धीरे मैं कंगाल और फिर दाने-दानेको मोहताज हो गया। एक एक करके सभी मित्र और सम्बन्धी मुझसे विमुख हो गये। मेरी हवेली जो पहले रंग-रलियोंसे गुलज़ार रहती थी, अब कौवों और चमगीदड़ोंका वसेरा बन गई। पुराने साथियोंकी उदासीनता इतनी बढ़ गई कि माँगने और गिड़गिड़ाने पर भी किसीने सहानुभूति न दिखाई। मुझे मनुष्योंसे घृणा और संसारसे वैराग्य हो गया। मैंने भगवान्में मन लगाया और कठिन साधना की। उसी साधनाका यह फल है कि आज मैं आप लोगोंके बीच उपस्थित हूँ। लेकिन मनुष्यके सम्बन्धमें आप पूछते हैं तो मेरी निश्चित और सच्चाई पर तुली हुई राय यह है कि मनुष्य सुखका साथी है, वह स्वार्थी और घृणाके योग्य है।"

यह सुनकर देवसभामें सन्नाटा छा गया। बहुतसे देवताओंको बड़ी निराशा हुई। उन्हें आशा थी कि मनुष्य जातिके सम्बन्धमें कुछ अच्छी आशाजनक बातें सुनेंगे।

लेकिन राजा इन्द्रके होंठोंमें एक दबी हुई मुसकान झलकी और दूसरे ही क्षण उन्होंने गम्भीर, उदास-सी मुद्रा बना कर कहा :

"महात्मन्, आपकी सम्मति यथार्थ ही हो सकती है। उसके लिए हम आपके कृतज्ञ हैं। हाँ, हम मनुष्य जातिकी इस बुराईको दूर करनेका और भी तत्परताके साथ प्रयत्न करेंगे।"

सभा विसर्जित होनेके पश्चात् इन्द्रने धर्मराज यमको एकान्तमें बुलाकर कहा :

"इस मनुष्यात्माके संग घृणा, संकीर्णता और अहंकारके ज़हरीले कीटाणु लगे आये हैं। यदि यह कुछ समय तक भी और यहाँ टिक गया

तो स्वर्ग लोकका वातावरण इन कीटाणुओंके विषसे दूषित हो जायगा और देवताओंका स्वास्थ्य संकटमें पड़ जायगा। इसलिए आप जल्दसे जल्द इसे भूलोकमें दोबारा जन्म देनेका प्रबन्ध कीजिये।"

धर्मराजके साथ इस सम्बन्धमें कुछ और वार्ता-सलाह करनेके बाद अन्तमें इन्द्रने कहा :

"और देखिये, इसके संचित भले और बुरे कर्मोंमेंसे बुरे कर्मोंका कुछ अधिक और अच्छे कर्मोंका कुछ कम ही अंश इसे अगले जन्ममें भोगनेके लिए दीजिएगा।"

"सो तो है ही।" धर्मराजने कहा, "ऐसा किये बिना तो इस मनुष्यका कल्याण हो ही नहीं सकता।"

धर्मराजके सहायक लिपिका-दलने बड़ी सरगर्मीके साथ दौड़धूप करके उस मनुष्यात्माके लिए उपयुक्त परिस्थितियोंके बीच शीघ्र ही जन्म-का प्रबन्ध कर दिया।

मानव-समाजके एक नीच-निर्धन परिवारमें उसे जन्म दिया गया। उसका बचपन बड़े कष्ट और निरादरकी दशामें बीता। लेकिन युवावस्थाके आरम्भसे ही उसके दिन पलट गये। अपने परिश्रम और पूर्व जन्मकी साधना-शक्तिके सहारे वह धीरे-धीरे एक बड़ा धनपति सेठ बन गया। लेकिन इसके साथ ही उसके पूर्वजन्मके घृणा और अहंकारके संस्कार भी जाग उठे; उसकी प्रकृति निर्मम और कठोर हो गई। उसके पास अतुल धन-सम्पत्तिके होते हुए भी लोग उसके पास फटकना तक नापसन्द करने लगे। जो कुछ लोग उससे मिलते भी वे स्वार्थ-वश हृदयमें घृणा और शब्दोंमें दिखावटी सम्मान लिये हुए। धीरे-धीरे अनुभवोंके पकनेपर उसे लगने लगा कि वह समाजसे बहिष्कृत है; कोई उससे प्रेम नहीं करता। वह अपने जीवनमें एक सूनेपन, एक दुखःदायी अभावका अनुभव करने लगा। जो थोड़ेसे अच्छे कर्म उसे इस जन्ममें प्रारब्ध कर्मके रूपमें भोगनेके लिए दिये गये थे और जिनके द्वारा ही वह निर्धनसे धनवान बन सका

था उन्हीं अच्छे कर्मोंके प्रभावसे उसके हृदयमें अब घृणाके बदले कुछ यह चिन्ता होने लगी कि किस प्रकार वह लोगोंको अपनी ओर आकृष्ट करके उनका स्नेह-सम्मान प्राप्त करे। लेकिन चूँकि उसके बुरे कर्म ही इस जन्ममें प्रबल थे इसलिए वह इस दिशामें कुछ कर नहीं सका और अपने अभावको धनसे प्राप्त होनेवाले नाच-रंग और भोग-विलासके द्वारा पूरा करनेका प्रयत्न करने लगा। मनुष्यका साथ और मनुष्यका प्रेम उसे जीवन भर प्राप्त न हो सका और उन्हीं विषयोंमें अपने जीवनके अन्तिम दिनोंको डुबाये हुए एक दिन वह इस संसारसे विदा हो गया।

भूलोक और स्वर्गलोकके बीच भुवर्लोकमें उसे बहुत कालतक रुकना पड़ा। मनुष्यके प्रति घृणा और मानवीय प्रेमके अभावके और भी कड़वे—हज़ार गुना कड़वे—अनुभवसे भुवर्लोकमें उसे हुए। उसे ऐसा लगता रहा कि वह उसी पृथ्वी लोकमें रह रहा है, सब लोग आपसमें प्रेम-व्यवहार करते हैं लेकिन उसकी ओर कोई भी ध्यान नहीं देता। उसका हृदय उनके लिए कभी असह्य घृणासे भी भर उठता और साथ ही कभी-कभी उनके प्रेम-व्यवहारके लिए उसका मन छटपटाने भी लगता। उसकी यह मानसिक पीड़ा पागलपनकी सीमा तक पहुंच गई। अन्तमें धीरे-धीरे उसे जान पड़ने लगा कि लोगोंकी इस उदासीनतामें दोष उसका ही है। उसने ही पहले उनसे घृणा करके उन्हें अपने प्रति उदासीन बनाया है। इस विचार-परिवर्तनसे उसे कुछ शांति मिलने लगी। धीरे-धीरे लोग उससे सहानुभूति और स्नेह भी करते जान पड़ने लगे। अब उसके हृदयकी घृणा क्षमा और प्रेममें तेजीके साथ बदलने लगी और उसका दृष्टिकोण बहुत उदार हो गया।

एक दिन अचानक उसने अपने आपको स्वर्गलोकमें राजा इन्द्रके दरबारमें पाया।

अबकी बार इन्द्रने सब देवताओं समेत खड़े होकर उसका विशेष आदर सम्मानके साथ स्वागत किया।

"कहिए महात्मन्" अबकी बार भी राजा इन्द्रने उससे वही पहले वाला प्रश्न किया," मनुष्य जाति और भूलोकके सम्बन्धमें अबकी बार आप क्या समाचार लाये हैं।"

"महाराज" मनुष्यात्माने उत्तर दिया "मनुष्यजाति बड़ी तेज़ीके साथ आगे बढ़ रही है। भूलोकके प्रारम्भिक युगमें मनुष्य एक दूसरेका साथ देना बिलकुल नहीं जानता था। वह न सुखमें दूसरेका साथ देता था, न दुःखमें। अब उसने एक श्रेणी आगेका पाठ सीख लिया है। वह सुखमें दूसरोंका जी खोलकर साथ देने लगा है। आगे चलकर वह दुःखमें भी दूसरोंका साथ देना सीख जायगा। यही प्रगति रही तो मनुष्य-लोकमें देव-लोककी सभी सुख-सुविधाएँ धीरे-धीरे प्रस्तुत हो जायेंगी।"

"मनुष्य सुखमें दूसरोंका साथ देने लगा है, इसमें भला मनुष्य जातिके कौनसे हित और विकासका लक्षण है ? हित तो तब होता जब वह दुःख-में दूसरोंका साथ देने लगता" एक देवताने प्रश्न किया।

"दुःख बटानेसे आधा होता है, सुख बटानेसे चौगुना होता है। सुख-की बढ़तीका मार्ग यही है कि उसे बटाने वाले लोग मिलें। बिना दूसरोंके बटाये मनुष्यका सुख सुख ही नहीं रह सकता। मनुष्यको सुख बटाने वालोंका भी उतना ही कृतज्ञ होना चाहिए जितना दुःख बटाने वालोंका।" मनुष्यात्माने उत्तर दिया।

देवताओंने उस मनुष्यात्मासे स्वर्गलोकमें ही रहनेका बहुत आग्रह किया, लेकिन उसे अपनी मनुष्यजातिसे इतना अधिक प्रेम हो गया था और वह उसकी कुछ ऐसी विशेष सेवा भी करना चाहता था कि अधिक दिन स्वर्गलोकमें रुकना उसने पसन्द नहीं किया। सुना है कि उसने संसारमें फिरसे जन्म ले लिया है और प्रेम तथा सेवाका सन्देश उसके जीवनके प्रत्येक कार्यसे झरता रहता है और उसके प्रेमियों तथा प्रियजनोंका क्षेत्र बहुत बड़ा है।

---

# जल-नगरी

एक राजाका राज्य बहुत समृद्ध और उसकी प्रजा बहुत सुखी थी। राजाका दरबार लगा हुआ था और उस दिन सारे देशसे आये हुए क्षेम-दूतोंकी दरबारमें पेशी थी। क्षेमदूत राज्यके उन कर्मचारियोंका नाम था जो सारे देशमें घूम कर प्रजाके दुःख-सुखकी सूचनाएँ एकत्र करके राज-दरबारमें पहुँचाते थे। महीनेमें एक दिन उन सबको दरबारमें उपस्थित होना पड़ता था।

"महाराज, प्रजामें किसीको भी कोई दुख नहीं है। प्रजाका बच्चा-बच्चा सुखी और प्रसन्न है। इस महीने एक भी दुःखी व्यक्ति सारे राज्यमें ढूँढ़ने पर भी नहीं मिला।" क्षेमदूतोंके प्रधानने दरबारमें खड़े होकर कहा।

महाराज मुसकराये और दरबारके दूसरे कामोंमें लग गये।

कला, कौतूहल और विज्ञानके साधनोंकी उस राज्यमें कोई कमी नहीं थी। जिस सुन्दर झीलके किनारे वह राजधानी बसी हुई थी, उस झीलके भीतर राजाने एक बहुत सुन्दर नगर बनवाया। सुन्दर-सुन्दर भवन, सड़कें, बाग़, बग़ीचे और हाट-बाट सभी कुछ उस नगरमें थे। जलके भीतर वैज्ञानिक उपायोंसे काफ़ी हवा और रोशनी उस नगर तक पहुँचानेका प्रबन्ध किया गया था। तीन महीनेके भीतर यह नगर बनकर तैयार हो गया। इस जल-नगरीमें लगभग दो लाख व्यक्तियोंके आरामसे बसनेकी गुंजाइश थी।

राजधानीके बहुतसे लोग इस जल-नगरीमें बसनेके लिए उत्सुक हो गये। कुछ ही दिनोंमें वह नगरी खचाखच आबाद हो गई। उस नगरीमें बसनेवालोंको एक ख़ास तरहका चर्म-कवच पहनकर जाना पड़ता था, जिससे पानीके लगातार सम्पर्कसे उनके शरीरकी चमड़ी गले नहीं।

आँखोंपर एक खास तरहका चश्मा--जिससे पानी आँखोंमें न जाय--और इसी तरह नाक और कानोंपर आवश्यक झिल्लियाँ उन्हें पहननी पड़ती थीं और ज़बानपर एक ख़ास तरहका रोग़न लगाना पड़ता था जिससे पानीके भीतरकी कुछ कड़वी और ज़हरीली चीज़ें उसपर असर न करें। उस जल-नगरीमें बसनेवालोंको स्वतंत्रता थी कि जब चाहें ऊपर अपने राजधानी वाले घरोंमें आकर रहें। जल-निवासका कुतूहल कुछ जल-विहार-प्रिय लोगोंको इतना बढ़ा कि उन्होंने अपना अधिक समय वहीं बिताना पसन्द किया और धीरे-धीरे वहाँके निवासी बन गये।

कुछ बरस बीतने पर राजाने एक बार क्षेम-दूतोंकी पेशी वाले दरबारमें आज्ञा दी कि कुछ क्षेमदूत जलनगरीमें जाकर वहाँके लोगोंकी ख़ैर-ख़बर लायें। क्षेमदूतोंके प्रधानने बारह क्षेमदूत इस कामके लिए नियुक्त कर दिये।

अगले महीने दरबारमें वे बारहों क्षेमदूत भी उपस्थित हुए। उन्होंने जल-नगरीके सम्बन्धमें अपने-अपने वक्तव्य दिये। कुछने कहा कि वे सभी लोग पूर्ण 'सुखी और संतुष्ट हैं'। कुछने कहा कि उनमेंसे कुछ लोग सुखी हैं और कुछ दुखी भी हैं, और यह कहकर उनके कुछ दुःख-कष्ट गिना भी दिये। इन दूसरे प्रकारके क्षेमदूतोंको कुछ लोग जल-नगरीमें ऐसे दीख पड़े थे जिनके कान, नाक, आँख, मुँह या टाँगोंमें यथेष्ट हवा या प्रकाश न लगनेके कारण कुछ रोग, पीड़ाएँ या दुर्बलताएँ उत्पन्न हो गई थीं और वे उन कष्टोंसे दुखी थे।

इन वक्तव्योंको सुनकर महाराजने कहा, "आप लोगोंकी सूचनाओंमें मतभेद है। मैं जलनगरीके सम्बन्धमें सच्ची जानकारियाँ चाहता हूँ। आप लोग फिर वहाँ जायें और अगले महीने वहाँके सच्चे समाचार लाकर मुझे दें।"

महाराजके इस असन्तोषसे क्षेमदूतोंका प्रधान मन-ही-मन बहुत

लज्जित हुआ। अबकी बार वह स्वयं उन बारह क्षेमदूतोंके साथ जल-नगरीमें गया।

अगले महीनेके दरबारमें उपस्थित होकर क्षेमदूतोंके प्रधानने कहा, "महाराज, जलनगरीके सभी निवासी अत्यन्त दुखी हैं।"

महाराज मुसकराये। "क्या आप सब लोगोंकी अबकी बार यही राय है ?" उन्होंने दूसरे क्षेम-दूतोंको लक्ष्य करके पूछा।

"नहीं महाराज !" एक क्षेमदूत ने कहा, "मुझे तो ऐसे बहुतसे लोग वहाँ मिले जो पूर्णतया सुखी और सन्तुष्ट हैं। महाराज चाहें तो दरबारमें बुलाकर स्वयम् उनके मुँहसे ही सुन सकते हैं। ऐसे दो सहस्र व्यक्तियोंकी सूची मैं स्वयं वहाँसे लिख लाया हूँ।"

चार-पाँच और भी क्षेमदूतोंने इस दूसरे क्षेमदूतकी बातका समर्थन किया।

महाराजकी भवों पर असन्तोषके बल पड़ गये। "आप लोग फिर जाइए और सच्ची सूचना, एकमत होकर अगले महीनेके दरबारमें प्रस्तुत करनेका प्रयत्न कीजिए।"

"अवश्य महाराज, अगली बार हम अवश्य एकमत होकर सच्ची सूचना महाराजकी सेवामें उपस्थित कर सकेंगे।" प्रधान क्षेमदूतने अविचलित भावसे कहा।

सभी दरबारी जलनगरीके सम्बन्धमें सच्ची बातें जाननेको उत्सुक थे। वे सभी इस सम्बन्धमें अनिश्चयमें पड़े हुए थे। जलनगरीके सभी लोग दुखी हैं, प्रधान क्षेमदूतकी यह बात उन्हें बहुत अविश्वसनीय जान पड़ी।

अगले मासके दरबारमें वे सब क्षेमदूत उपस्थित हुए। दरबारियोंको यह देखकर बड़ा आश्चर्य और कुतूहल हुआ कि जल-नगरीके लिए नियुक्त सभी क्षेमदूत—उनके प्रधानको छोड़कर—पूरा जल-परिधान पहने हुए ही आये थे।

"महाराज, हम सभी अबकी बार एकमत होकर सूचना लाये हैं कि

जल-नगरीके सभी लोग दुःखी हैं।" प्रधान क्षेमदूतने कहा और सभी दूसरोंने उसका समर्थन किया।

दरबारियोंका आश्चर्य और कुतूहल और भी बढ़ गया। महाराज मुसकराये। "हमारे दरबारी दुःख-कथाको सुननेके लिए उत्सुक हैं। अबकी बार आप लोग, जान पड़ता है, बहुत गहरी छानबीन करके यह समाचार लाये हैं!" महाराजने कहा।

"नहीं महाराज!" उन बारहोंमेंसे एक क्षेमदूतने कहा, हमलोग तो अबकी बार जलनगरीमें गये भी नहीं। वास्तवमें तो हमें पहली यात्रामें ही सूझ जाना चाहिए था कि जलनगरीके सभी लोग दुःखी हैं।

महाराजने सभी दरबारियों पर एक खोजपूर्ण दृष्टि डाली। सभीके मुखों पर आश्चर्य और अनिश्चयकी हवाइयां उड़ रही थीं।

'प्रधान क्षेमदूतने अबकी बार हमें कामसे तो छुट्टी दे रखी थी, लेकिन इस जल-परिधानको बराबर पहने रहनेका आदेश दे दिया था। इस परिधानका बन्धन ही कौन-सी कम मुसीबत है! न इससे हम पूरी तरह देख सकते हैं, न सुन सकते हैं, न स्वाद और सुगन्ध ले सकते हैं, न खुल कर चल फिर ही सकते हैं। जल-नगरीके दूसरे सुखों-दुखोंमें वहाँके लोग इस आवश्यक, स्थायी दुःखको भूले रहते हैं, लेकिन सबसे बड़ा दुःख तो यही है, और यह यहाँ सबके साथ सदैव लगा हुआ है।" उसी दूसरे क्षेमदूतने कहा।

"आप जल-नगरीकी पहली सचाई ढूँढ़ लाये और आगे और भी सचाइयोंकी खोज करेंगे" महाराजने कहा, "लेकिन जैसी यह सचाई जल-नगरीके बारेमें मालूम हुई है, क्या वैसी ही कोई सचाई हमारे इस सारे राज्यके सम्बन्धमें भी सच नहीं हो सकती? क्या यह सम्भव नहीं कि राज्यके क्षेमदूतोंने सारी प्रजाके सुखी होनेका जो समाचार पिछली बार दिया था वह भी ऐसे ही किसी तरह ग़लत हो?"

राज्य भरके उपस्थित क्षेम-दूतों और दरबारियोंमेंसे किसीने इस बातका उत्तर न दिया। दरबारमें सन्नाटा छाया रहा।

भगवान बुद्धकी बताई, संसारकी चार महान् वास्तविकताओंमें 'दुःख या क्लेश' भी एक वास्तविकता है। शरीरके बन्धनमें बँधना ही एक सुनिश्चित क्लेश है।



# नई पूजा

ऋषिवर कीलालका आश्रम बस्तीसे दूर नहीं था। पड़ोसके गाँवके लड़के वहाँ तक खेलने आ जाया करते थे। कीलाल ऋषिका छोटा पुत्र र्हमिष इन ग्रामीण बालकोंके आकर्षणका विशेष केन्द्र था। ६ वर्षकी आयुमें ही वह इतना मेधावी और सर्वप्रिय हो गया था कि उस गाँवके सभी बालक उसके स्नेही सखा बन गये थे। कीलाल ऋषि अपने पुत्रकी ऐसी प्रवृत्तिसे बहुत प्रसन्न और आशान्वित थे।

बालक र्हमिषका बाह्य और आन्तरिक अध्ययन द्रुत गतिसे चल रहा था। वह पूरे १४ वर्षका भी नहीं होने पाया था कि देवगुरु बृहस्पतिने उसे अपने स्वर्गलोक स्थित आश्रममें विशेष अध्ययनके लिए बुला भेजा। कीलाल ऋषिने सहर्ष बृहस्पति देवके आदेशका पालन किया। भूलोक सम्बन्धी एक विशेष कार्यभारको सँभालनेकी तैयारीके लिए उन्होंने र्हमिषको उसके पास भेज दिया। र्हमिषके ग्रामवासी सखाओंने ही नहीं, गाँवके सभी नर-नारियोंने भी रुँधे हुए कंठ और भरी हुई आँखोंसे बालक र्हमिषको विदा दी। उसका विछोह उनके लिए सचमुच अत्यन्त दुःसह था।

गुरुदेव बृहस्पतिके आश्रममें चौदह वर्ष तक सक्रिय अध्ययनके पश्चात् ऋषिकुमार भूलोकमें अपने पिताके आश्रममें लौट आया। अनेक सिद्धियों-शक्तियोंसे सम्पन्न ऋषिकुमारकी गणना अब देव-ऋषियोंमें कर दी गई थी और पृथ्वीका भार सम्हालनेका काम, पूरे एक मन्वन्तर युगके लिए उसे सौंपा गया था। दूसरे ग्रहों-नक्षत्रोंके साथ पृथ्वीका ठीक सन्तुलन, पृथ्वीके सागरों, महासागरों, भूधरों और भूखंडोंकी ठीक व्यवस्था और उसमें समय-समय पर आवश्यक हेर-फेर आदिका काम उसके सुपुर्द था।

वह आवश्यकतानुसार पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि या आकाश तत्त्वके रूप धारण कर सकता था और इच्छा मात्रसे ही अपने शरीरको अणुसे भी छोटा और हल्का या पर्वतराजसे भी बड़ा और भारी बना सकता था।

र्हमिष कब, किस प्रकार अपने इन कार्योंका संचालन करता था, यह जन-साधारणकी दृष्टि और समझसे बाहरकी बात थी। फिर भी उन्हें उसकी ऊँची शक्तियोंका पता था। वह पूर्ववत् सुन्दर, सुकुमार मानवशरीरधारी होकर अपने पिताके आश्रममें रहता था और अपने पूर्व परिचित सखा-स्नेहियोंसे मिलने-जुलने और उनका सहृदय सत्कार करनेका अब भी थोड़ा-बहुत अवकाश निकाल लेता था।

देवलोकसे लौटते ही उसने अपने बालपनके सभी सखाओंको एकत्रित किया और कहा:

"पृथ्वीलोककी कुछ विशेष सेवाके लिए यद्यपि देवताओंने मुझे एक महत्त्वपूर्ण पदका अधिकार दिया है और उस सेवाके लिए कुछ विशेष सिद्धियां-शक्तियाँ भी प्रदान की हैं, फिर भी तुम लोगोंके लिए मैं तुम्हारा वही स्नेही र्हमिष हूँ। मैं तुम्हारे स्नेहभावका वैसा ही कृतज्ञ हूँ और अपनी सीमाके भीतर तुमसे वही नाता निभाना चाहता हूँ। तुम लोग निस्संकोच बताओ कि मैं तुम्हारी क्या सेवा कर सकता हूँ।"

र्हमिषके ये सभी साथी युवा हो चुके थे। स्नेहके साथ-साथ उसके तेज बलके आगे एक श्रद्धा-सम्मान-जनित भयकी ही भावना भी उनके हृदयोंमें र्हमिषके लिए जाग उठी थी।

"हम—हमें आप अपने कृपा-पात्र भक्तों, पुजारियोंमें स्थान दिये रहिये, यही आपकी हमारे ऊपर सबसे बड़ी कृपा होगी।" उनमेंसे कुछ-ने कहा।

"आपके सामने हम हैं ही किस योग्य! आप हमें अपना अनुचर सेवक समझिए। आप ही हमारे रक्षक और पालक पोषक हैं।" कुछ दूसरोंने उत्तर दिया।

"हम तो आपके द्वारके भिखारी हैं, भगवन्! जिस वस्तुकी आवश्यकता होगी, आपसे ही माँगेंगे। हमारे कोई बड़े भाग्य ही जगे थे जो हमने आपके आश्रमकी समीपवर्ती भूमिमें जन्म लिया और बचपनसे ही आपकी छत्रछायामें पले।" तीसरे प्रकारके सखाओंने निवेदन किया।

र्हमिषके बचपनके सभी साथी अपनी-अपनी बात कह चुके थे और र्हमिष उन्हें अपना सहृदय स्वीकृतिपूर्ण उत्तर दे चुका था कि उसकी दृष्टि कुछ दूर हटकर बैठे हुए एक युवक पर पड़ी।

"मित्रायु!" र्हमिषने उसे नामसे सम्बोधित करते हुए स्निग्ध स्वरमें कहा "तुम कैसे चुपचाप बैठे हो? तुम भी कुछ कहो।"

"मैं भी कुछ कहूँ?" युवकने अकस्मात् सावधान हो कर कहा—"इसमें कहनेकी बात ही क्या है। मुझे बड़ी प्रसन्नता और बड़ा गौरव है कि मेरा एक मित्र इतनी ऊँची गति और महत्त्वपूर्ण पद पर पहुँचा है। फिर भी मैं जैसा पहले तुम्हारा मित्र था वैसा ही अब भी हूँ। इसमें नई, कहने-सुननेकी बात क्या है?"

'पहले जैसा मित्र!' सभी उपस्थित युवकोंने आश्चर्यचकित दृष्टिसे मित्रायुकी ओर देखा और उसकी धृष्टता और मूर्खताकी बात सोचते रह गये। कहाँ र्हमिष और कहाँ मित्रायु! यह अब भी र्हमिषकी मित्रताका दम भरता है। मित्रायु तो अपने साथियोंमेंसे ही अधिकांशसे निम्नतर स्थितिका युवक था।

र्हमिषने मित्रायुकी ओर भी उसीं स्वीकृतिपूर्ण दृष्टिसे देखा और तत्पश्चात् सत्कार-पूर्वक सबको बिदा दी।

दिन बीत चले। र्हमिष देवके प्रति उनके इन साथियोंकी श्रद्धा-भक्ति जागती गई। गाँवमें ही सीमित न रह कर उसके भक्तों, सेवकों और याचकोंकी संख्या सारे भूमंडल पर तेजीसे बढ़ गई। उसकी पूजा उपासनामें उन्होंने कोई कमी नहीं छोड़ी; र्हमिषने भी उनकी सभी माँगोंको पूरा किया। र्हमिषकी गणना भूलोकके प्रमुख देवताओंमें होने लगी। पृथ्वी-

की बहुत बड़ी, लगभग दो तिहाई जन-संख्या उसे ही अपना इष्टदेवता मान कर पूजने लगी।

पृथ्वीके निवासियोंके लिए सृष्टिके चार पदार्थोंमें से तीन—पुण्य, बल और वैभव (अथवा धर्म, अर्थ और काम) के भंडार हर्मिषके हाथमें ही थे। दैवी योजनाके अनुसार हर्मिषका यह कर्तव्य था कि वह पृथ्वीके मनुष्योंको इन पदार्थोंसे यथायोग्य इस प्रकार भरा पूरा रखे कि पृथ्वी अपने निश्चित मार्ग पर सुख गतिसे आगे बढ़ती जाय।

जगह-जगह हर्मिष देवके पूजा-मन्दिर बन गये। प्रातः सायं लोग इन मन्दिरोंमें एकत्रित होकर उसकी स्तुति और प्रार्थना करने लगे। भक्तजन प्रार्थना करते—"भगवन्, हमें पुण्य दीजिये।" सेवक जन प्रार्थना करते–"भगवन् हमें अपने बल का सहारा दीजिये जिससे हम अपने मनोरथ पूरे कर सकें।" और याचक जन प्रार्थना करते "भगवन्! हमें हमारे इच्छित वैभव प्रदान कर कृतार्थ कीजिये।"

भूलोकके पुण्य, बल और वैभव—धर्म, अर्थ और काम—का भंडार धीरे-धीरे घट चला, क्योंकि इन पदार्थोंके याचकों और व्यय-कर्त्ताओंकी माँग बहुत बढ़ चली थी। उन लोगोंने बड़ी बेरहमीसे इन पदार्थोंका व्यय प्रारम्भ कर दिया था और अपने लिए अपने पौरुषसे इनका उत्पादन बिल्कुल बन्द कर दिया था। भूलोकके शेष एक तिहाई व्यक्तियोंके लिए इन पदार्थोंकी कमी पड़ने लगी। और हर्मिषकी चिन्ता बढ़ने लगी।

हर्मिष देवके संकेतों पर भी भक्तों, सेवकों और याचकोंने अपनी माँगें बन्द नहीं कीं। उन्होंने कहा, "आप सर्वसमर्थ हैं। आपका भण्डार कभी घट सकता है? ऐसी निरादरपूर्ण बातकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। हम आपके अत्यन्त भक्त हैं। हम जो चाहेंगे, आपसे ही लेंगे, हमें और कुछ करनेकी आवश्यकता नहीं। आपकी सर्व-समर्थता और सर्व-सम्पन्नतामें सन्देह करके हम अपने भक्त पदको और आपके भगवन्त पदको कभी नहीं लजायेंगे।"

हर्मिष देव किसी याचकको खाली नहीं लौटा सकते थे। धीरे धीरे पृथ्वीके तीनों पदार्थोंका भण्डार रीता होने पर आ गया। हर्मिषने दूसरे लोकोंके भंडारपतियोंसे ऋण रूपमें कुछ पदार्थ माँगे पर उन्होंने भू-वासियोंकी प्रवृत्तिको देखकर ऋण देनेसे इन्कार कर दिया। उन्होंने सहानुभूतिपूर्ण खेदके साथ कहा कि इस ऋणकी अदायगीकी उन्हें कोई आशा नहीं और ऐसे जोखिमका काम वे नहीं कर सकते।

हर्मिष देवका शरीर तेजीसे आते हुए संकटकी चिन्तामें घुलने लगा।

उस साँझ हर्मिष देवके आश्रममें, पूजा-वेलामें भक्तों, सेवकों और याचकोंकी भीड़ लगी थी। लोग अपनी-अपनी प्रार्थनाएँ उपस्थित कर रहे थे। हर्मिषका मुख आज विशेष रूपसे म्लान था।

सहसा उस भरी सभामें हर्मिषके बालपनके साथी मित्रायुने प्रवेश किया। वह वर्षों बाद आज अपने गाँवको लौटा था।

"भगवान् हर्मिष देवका मुख आज इतना चिन्तित, उदास क्यों है—मैं इसका कारण जान सकता हूँ?" मित्रायुने हर्मिष देवसे सीधा प्रश्न किया।

"मेरी चिन्ताकी बात क्या पूछते हो मित्रायु! आज तुम बहुत दिन बाद आये हो। तुम भी अपनी अभीष्ट वस्तुएँ माँगो—पुण्य, बल, वैभव।"

"मैंने बचपनसे आपसे कभी कोई वस्तु नहीं माँगी। मैंने तो सखा भाव प्रारम्भसे निभाया है, यही अब भी मेरे मनमें है। आपके पुण्य, बल और वैभवका भण्डार अक्षय, अनन्त है तो हुआ करे, मुझे उसमें से कुछ लेनेका कभी भी ध्यान नहीं है। मित्रके नाते मैं तो स्वयं अपना ही पुण्य, बल और वैभव—वह कितना ही नगण्य हो—आपकी भेंट करता हूँ। कहते-कहते मित्रायुने अंजलि बाँध कर अपने दोनों हाथ उसकी ओर बढ़ा दिये।

हर्मिषका चेहरा दमक उठा, वहाँके वातावरणमें एक बिजली सी दहक उठी। पुण्य, बल और वैभवकी तीन पतली धाराएँ भूलोकके पदार्थ भंडारोंमें जा मिलीं और उनकी प्रगतिसे सारे लोकोंमें एक सिहरन-सी

दौड़ गई। दूसरे लोगोंने भी तीनों पदार्थोंकी मोटी-मोटी धाराएँ भूलोकके भंडारमें प्रवाहित कर दीं।

मनुष्योंने देव-ऋणकी अदायगी प्रारम्भ कर दी, यह समाचार सूक्ष्म विद्युत्-गतिसे उन सबके पास पहुँच गया था और लोकहितके लिए अब उन्हें अपने-अपने कोषोंसे ऋण देनेमें कोई आशंका नहीं रह गई थी।

भूलोकका रीता पदार्थ-भंडार भरकर अन्तरिक्षमें उमड़ चला। सारी प्रकृति आह्लादसे थिरक उठी। मानव पुत्रोंमेंसे एक और देव-वर्ग तक उठ आया था !

पृथ्वीकी गति-विधि सुधर गई। देवगुरु भगवान् बृहस्पतिने मित्रायुका हर्मिषके उत्तराधिकारीके रूपमें तिलक कर दिया।

अनुमान है कि जब मित्रायु भूलोकके हर्मिषपदका भार सम्हालेगा तब उसके भक्त मित्र-रूपमें ही उसकी पूजा करेंगे।



# साहित्यिक भूतसे भेंट

जमना तटके जिस ग्राम-आश्रममें मैं रहता हूँ वहाँसे सिकन्दराका पुराना रेलवे स्टेशन ३ मील दूर है। गाड़ी पहले कभी इस छोटे-से रेलवे स्टेशनपर रुकती थी, पर आजकल यह टूटा हुआ है। शामकी सैरके लिए मैं उस ओर कभी नहीं जाता हूँ, पर उस दिन उधर ही निकल गया था।

घूमता हुआ जिस समय मैं रेलकी पटरीके पास पहुँचा, दिल्लीकी ओर-से पंजाब मेल आकर उसी समय मेरे समीप ही रुक गया। सिकन्दराका स्टेशन वहाँसे करीब डेड़ फर्लांग आगे था। जो डिब्बा मेरे सामने रुका, उसमेंसे एक हृष्ट पुष्ट युवक नीचे उतरा और गाड़ी चल दी। युवकके हाथमें केवल एक चमड़ेकी अटैची थी।

"क्यों मिस्टर", युवकने मेरे पास पहुँचकर बड़ी बेतकल्लुफीसे मेरे कन्वे पर हाथ रखकर कहा, "आप पढ़े-लिखे आदमी मालूम पड़ते हैं, फिर भी जान पड़ता है, पासके ही किसी गाँवमें रहते हैं।"

मैंने अपने गाँवका नाम उसे बता दिया।

"वहीं मुझे चलना है। आपके गाँवमें कुछ भूत भी रहते हैं?"

"भूत!" मैंने कुछ चौंककर युवकको पाँवसे सिर तक देखा, "शायद कुछ रहते हों। मेरा तो किसीसे परिचय नहीं है। आप उन्हींमेंसे किसीके रिश्तेदार जान पड़ते हैं।"

युवक खिलखिलाकर हँस पड़ा।

"मैं समझ रहा हूँ, आप ही मिस्टर रावी हैं, जो पत्र-पत्रिकाओंमें कुछ लेख-वेख, कहानियाँ-वहानियाँ लिखा करते हैं।"

"जी हाँ" मैंने सहजभावसे कहा, यद्यपि उनके ये शब्द मुझे अशिष्ट और निरादरपूर्ण-से लगे।

"तब आपने हिन्दी काफ़ी पढ़ी ही होगी।"

"मैंने हिन्दी नहीं पढ़ी तो क्या आपने मेरे लेख-वेख, कहानियाँ-वहानियाँ, बंगला या तामिल भाषाकी पत्र-पत्रिकाओंमें देखी हैं ?" मैंने इस पढ़े-लिखे और सभ्य दीखनेवाले युवकके मूर्खतापूर्ण प्रश्नसे कुछ खीझ कर कहा।

"हिन्दी जाननेवाले लोग जानते हैं कि भूत शब्दका अर्थ होता है, जीव, प्राणी। भाषा टीकावाली गीतामें लिखा है—कृष्ण भगवान् कहते हैं कि जो मुझे सब भूतोंमें विद्यमान देखता है...आदि-आदि। इस प्रकार सब मनुष्य भी भूत ही हुए। तब फिर आपने यह कैसे कहा कि आपके गाँवमें कोई भूत नहीं है या आपका किसीसे परिचय नहीं है ?"

"मैं समझा। अबकी बार मैंने ही अपने उस साथीकी कमरको हाथसे लपेटते हुए कहा 'आप कोई साहित्यिक भूत हैं। अहोभाग्य कि आपके दर्शन हुए।"

"अब आप समझे ! मैं एक साहित्यिक ही भूत हूँ और एक साहित्यिक ही भूतके—यानी आपके—ही पास आया हूँ, एक साहित्यिक ही कामसे।"

"आजका दिन मेरा अच्छा है। आपने मुझे चिट्ठी लिखी होती, मैं स्टेशन पर आपको लेनेका कुछ प्रबन्ध करता। खैर, पहले अपना परिचय तो दीजिए।" मैंने उत्सुक होकर कहा।

"स्टेशन पर लेनेके लिए चिट्ठी क्यों लिखता जब कि गाड़ीको साढ़े पाँच घंटे लेट आना था और आगरा स्टेशनसे ढाई मील पहले इस जगह रुकना था, जहाँ आपकी हाज़िरीका प्रबन्ध था ?"

वह रुका। मैंने पहली बार उसे कुछ संदिग्ध, आश्चर्यकी दृष्टिसे देखा। "और परिचय देनेसे पहले" वह कहने लगा "परिचयसे पहले मुझे आपसे उस आवश्यक कामकी बात कहनी है, जिसके लिए मैं आया हूँ।"

"ऐसी मुसीवतकी बात है तो कहिए, पहले कामकी ही बात कह डालिए।" मैंने कहा।

"मैं आपको कहानी लिखनेके लिए एक ज़रूरी प्लाट देने आया हूँ।"

"तब तो आप सचमुच एक ऐसी बड़ी मुसीवतके मारे आये हैं कि अपना नाम तक बतानेका आपमें दम नहीं है। आपने ख़ुद ही उस प्लाट पर कहानी क्यों नहीं लिख ली ?" मैं उसका किसी-न-किसी तरह कुछ मज़ाक़ बनाना चाहता था।

वह मुसकराया। 'मैं भी लेखक हूँ, यह आपने ठीक ही समझा। लेकिन अगर मैं अपने प्लाटों पर कहानियाँ स्वयं लिखा करूँ तो दिन भरमें एक कहानीसे अधिक नहीं लिख सकता। मेरा नियम यह है कि मैं दिन भरमें कम-से-कम बीस प्लाट सोचता हूँ और उन्हें बीस लेखकोंको दे देता हूँ। मैं एक 'सीनियर ग्रेड' का लेखक हूँ।"

युवकने मेरी ओर एक पैनी दृष्टि डाली। वह गम्भीर हो उठा था। मुझे भी गम्भीर होना पड़ा।

"पहले आप यह वताइए कि जो कुछ आप लिखते हैं उसका कुछ उद्देश्य भी, और उसके वीच कोई निश्चित सिलसिला भी होता है।" उसने पूछा।

"यह प्रश्न ज़रा टेढ़ा है। इसकी छान-बीन तो घर बैठकर इतमीनान-से बात करने पर होगी।"

"पर बैठने और इतमीनान मनानेकी फ़ुर्सत आपके पास हो सकती है, और आपके साथ छान-बीन करनेसे नतीजा भी कठिनाईसे ही कुछ निकल सकता है इसलिए मुझे स्पष्ट शब्दोंमें ही अपनी बात कह देनी चाहिए। उसने कहा।

"कहिए, कहिए मैं तो उसका स्वागत करता हूँ।"

"अपने लेखोंमें आप हमेशा यह उद्देश्य सामने रखिए कि आपको पाठकोंके सोचनेके लिए कोई न कोई अधिक अच्छी बात, अनुभव करनेके

लिए कोई न कोई अधिक अच्छी भावना आपको देनी है और इसका अन्तिम ध्येय यह है कि उन्हें कोई न कोई अधिक अच्छा काम करनेके लिए प्रेरित करना है—वह काम बेहतरीकी किसी भी दिशा, किसी भी क्षेत्र और किसी भी विषयका काम हो सकता है।"

"मेरा यही उद्देश्य रहता है और प्रायः सभी भले-मानस लेखकोंका यही उद्देश्य रहता है।" मैंने अप्रभावित भावसे कहा।

"नहीं रहता भाई साहब, प्रायः नहीं रहता।" उसने उत्तेजित स्वरमें कहा।

"आपको कोई अच्छी या सरस बात सूझती है, आप उसे दिलचस्प शैलीमें लिख डालते हैं, स्वान्तःसुखाय या पाठकोंकी वाहवाहीके लिए, और अखबार वालोंसे पैसा कमानेके लिए उसे छपने भेज देते हैं। यह ऐसा ही है जैसे कारीगर खूबसूरत गुब्बारे बनाये, उन पर सुन्दर-सुन्दर चित्र बनाये, अच्छे-अच्छे उपदेश और कारआमद नुस्खे भी उन पर लिख दे और फिर उन्हें अपने सिरके ऊपर हवामें यों ही छोड़ दे। वे गुब्बारे जिन कुछ लोगोंके हाथ लगेंगे वे उनसे कुछ लाभ तो अवश्य उठाएंगे, पर उस कारीगरकी कारीगरी बहुत कुछ उद्देश्यहीन ही कही जायगी। आप लिखते हैं, लेकिन लिखते समय आप अपने पाठकोंको और पाठकों पर अभीष्ट प्रभावको भूले रहते हैं।"

"किसी एक विचारधाराके हिसाबसे आपका यह दृष्टिकोण ठीक हो सकता है, लेकिन आम तौर पर कलाका तक़ाज़ा तो यही है कि जो कुछ लिखा जाय उसके भावमें ही इतना तन्मय हो जाया जाय कि पाठकों और प्रभावोंकी ओर ध्यानका अवकाश न रहे," मैंने कहा।

"यह ठीक है" उसका स्वर विशेष कोमल हो गया, "लेकिन जिस एक विचारधारामें चलनेवाले आप और मैं दोनों हैं उसके अनुसार हमें लिखते समय पाठकों और उन पर अभीष्ट प्रभावों पर बराबर दृष्टि रखनी चाहिए। आपके लिखे हुए विचार कहाँ, किस वेगसे, किन लोगोंपर

जाकर क्या काम करते हैं—इसका पूरा चित्र आपके सामने रहना चाहिए। ऐसा करनेसे आपके विचारोंको आपकी पूरी प्रेरक प्राण शक्ति मिलेगी। पाठ्य विचारोंके मुक़ाबले पाठकोंका महत्त्व आपके लिए अधिक होना चाहिए।"

"आपका यह दृष्टिकोण मेरे लिए विचारणीय है इसमें मुझे बहुत कुछ तथ्य दीखता है।" मैंने स्वीकार किया।

"आप चमत्कारोंमें विश्वास करते हैं।" अचानक उसने नया प्रश्न उठाया।

"अगर आप कोई दिखा सकें।"

"यह तरस खानेकी बात है कि आमतौर पर लोग चमत्कारोंमें विश्वास नहीं करते, और इससे भी अधिक तरस खानेकी बात यह है कि बहुतसे लोग उनमें विश्वास करते हैं।" उसने गम्भीर भावसे कहा।

"आपका मतलब ?"

"आम तौर पर लोग अपने आस-पास घटनेवाले चमत्कारोंकी ओरसे आँखें बन्द किये रहते हैं, उन्हें देख-सुन कर भी उनकी ओर ध्यान न देते हुए उन पर विचार करनेसे कतराते हैं। ये लोग तरसके क़ाबिल हैं लेकिन कुछ लोग ऐसे हैं जो चमत्कारोंको देख-सुन कर उन पर मनमाने मूर्खतापूर्ण ढंग पर विश्वास करते हैं और उन्हें अपनी समझ और शक्तिसे बाहरकी बातें समझ कर उनसे डरते हैं। ऐसे लोग और भी अधिक दयाके पात्र हैं। चमत्कार मैं उसको—"

"चमत्कारकी आपकी परिभाषा क्या है ?" मैं साथ ही साथ कह उठा।

"वही बता रहा हूँ। चमत्कार मैं उन घटनाओंको कहता हूँ जिन्हें साधारण मनुष्य अपने समझे हुए प्राकृतिक नियमों और अपनी समझ बूझ और शक्तिके बाहरकी देखता है। आमतौरपर आजकलकी सभ्यतासे भरे हुए लोगोंको ऐसी बातोंकी ओर ध्यान देनेकी फ़ुर्सत नहीं होती। अगर

ऐसी विचित्र-सी कोई बात वे सुनते हैं तो उस पर पहले तो विश्वास नहीं करते; विश्वास करते हैं तो उसे किसी छिपे हाथकी चालबाज़ी या मानसिक भ्रम-रोगोंके सिद्धान्तोंसे हल करना चाहते हैं। अगर वह चालबाज़ी या 'मानसिक भ्रम-रोग' स्वयं उनके या उनके किसी समीप स्वजनके पीछे पड़ जाता है और किसी चौकसी या दवादारूसे क़ाबू नहीं आता तब उनके हाथ-पैर फूल जाते हैं और वे अन्ध विश्वासकी ओर दौड़ पड़ते हैं।"

"सचमुच चमत्कार इतनी काफ़ी संख्यामें होते रहते हैं कि उनकी ओर. . . ." मैंने कुछ और निकालनेके विचारसे उत्साह दिखाया।

"किताबें पढ़िये—बड़े-बड़े विद्वान् खोजियों और वैज्ञानिकोंकी किताबें। सरकारी सनदोंसे प्रमाणित घटनाओंकी रिपोर्टें आपको ढेरों मिलेंगी। किसी बड़े प्रकाशक पुस्तक विक्रेतासे इस विषयकी पुस्तकोंका सूचीपत्र मँगा लीजिए। योरोपमें साइकिक रिसर्च और स्पिरिट कम्यूनियन आदि पर जो बड़ी-बड़ी संस्थाएँ काम कर रही हैं उनकी खोजोंकी ओरसे दुनिया आँख बन्द किये न रह सकेगी।"

"हो सकता है। तो फिर चालबाज़ी और भ्रमरोग चमत्कारोंका कारण नहीं होते?" मैंने पूछा।

"होते हैं, शायद ७५ फ़ीसदी मामलोंमें। लेकिन शेष २५ फ़ीसदी मामलोंमें जो चमत्कारके नियम काम करते हैं वे भी तो नियम ही हैं।"

"चमत्कारके नियम! उसके भी नियम होते हैं?"

"होते हैं। तीस वर्ष पहले इस देशके एक अनपढ़ ग्रामीणके लिए बिना बैलोंके भागनेवाली मोटर गाड़ी, सम्भवतः हनुमानजीकी सिद्धि-द्वारा चलने वाला एक चमत्कार थी, लेकिन आपके लिए समझी-बूझी मशीन है। मेरी आजकी भेंट अभी आपके लिए चमत्कार हो सकती है, लेकिन दो सौ वर्ष बाद ऐसी भेंटें सहज स्वाभाविक समझी जायंगी।"

'आजकी आपकी भेंटमें मेरे लिए चमत्कारकी क्या बात है ?' मैंने कुछ चौंककर सिरसे पैर तक उसे देखते हुए कहा।

"आपकी आँखें अभी नये पैदा हुए बच्चेकी आँखों-जैसी हैं, चीजों पर टिकना नहीं जानतीं। पाँच मिनट और सब्र कीजिए। आपकी सम्पुटिका कहाँ है ?"

"ओह—यह रही। मैंने जेबसे अपनी नोटबुक हाथमें ले ली।"

"चमत्कारपूर्ण घटनाएँ भी जीवनकी घटनाओंका एक विभाग हैं।" युवकने मेरी नोटबुक अपने हाथमें लेते हुए कहा, "चमत्कार जीवनका एक अनिवार्य अंग है, उसका बाह्य जीवन पर प्रभाव भी अनिवार्य और अनवरत है। वास्तवमें सारा जीवन ही एक गुप्त चमत्कार है। आप प्रकट चमत्कारकी ओर भी हाथ बढ़ायें। अपनी साहित्यिक प्रवृत्तियोंका एक भाग इसे भी बनायें, आपमें उसके लिए उपयुक्त माद्दा है। साहित्यका यह भी एक आवश्यक अंग है।"

'आप चाहते हैं कि मैं भूत-प्रेत आदि पर साहित्य पढ़ूँ और लिखूँ !' मैंने कहा।

मेरे मित्रका अट्टहास गूँज उठा।

'उसके लिए काफ़ी मजबूत दिल आपका नहीं है। वह छिछली चीज़ है। वैसे कोई बुरी चीज़ भी नहीं है, यद्यपि झंझट और गिरावटके मौक़े उसमें बहुत हैं। आपके लिए मेरा मतलब ऐसी घटनाओं और मनुष्यकी छिपी हुई शक्तियोंके अध्ययन और लेखनसे है जिनसे मनुष्यकी सात्त्विक जिज्ञासा, विश्वास और खोजकी प्रवृत्तियाँ बढ़ें। आप आश्चर्य करना सीखिये और सिखाइए। जो आश्चर्य नहीं करता, उसके प्रति जिज्ञासा नहीं रखता और उससे आँख चुराना चाहता है, वह बिल्कुल अधूरा मनुष्य है। महान् लेखक कारलाइलने कहा है, 'जो मनुष्य आश्चर्य नहीं कर सकता जो आश्चर्य करनेका आदी नहीं है वह भले ही अगणित रौयल सोसायटियोंका सभापति हो और सभी प्रयोगशालाओं और अनु-

सन्धानशालाओंका सार और निष्कर्ष उसीके सिरमें भरा हो, वह ऐनककी ऐसी जोड़ी है जिसके पीछे कोई आंख नहीं है ।' कहते हुए उसने मेरी नोटबुक में कारलाइल का यह कथन लिख भी दिया—

"The man who cannot wonder, who does not habitually wonder (and worship) were he president of innumerable-Royal Societies and carried....the epitome of all Laboratories and observatories with their result, in his single head—is but a pair of spectacles behind which there is no eye."

—Carlyle in Sartor Resartus

"साधारणतया चमत्कारोंकी आधारशिला चौथी नाप—फोर्थ डाइमेंशन—होती है । इस विज्ञानके जाननेवाले इस नापका भी प्रयोग करते हैं । इसी नापके मार्गसे वे प्रायः आते-जाते और वस्तुओंको लाते ले जाते हैं। समयको ही जो लोग चौथी नाप कहते हैं वे ग़लती करते हैं। चमत्कार विज्ञानके विद्वान् अन्वेषक जैकव वानग्रेनके शब्दोंमें जादू या चमत्कार कमवेश असाधारण बातोंको पूर्णतया स्वाभाविक ढंगसे, लेकिन सूक्ष्म और साधारणतया अपरिचित साधनों-द्वारा, कर दिखलानेकी विद्या और कला है । जादू चमत्कारके प्रयोग जब स्वार्थसिद्धिके लिए, घृणा और प्रतिहिंसाके लिए, हानिकर प्रकृतिवाले व्यक्तियोंकी सहायताके लिए और दूसरोंको क्षति पहुँचानेके लिए किये जाते हैं तब वह दुष्काम कुत्सित या 'काला जादू' कहलाता है । जब इसका प्रयोग बिना किसी पुरस्कारकी कामनाके सहायता, प्रोत्साहन और साथियोंकी रक्षाके लिए किया जाता है तो वह शुभ काम या 'श्वेत जादू' कहलाता है ।" कहकर इस विद्वान्के भी ये शब्द उसने मेरी डायरीमें लिख दिये—

"Magic is the science and art of accomplishing more or less remarkable things in a perfectly natu-

ral way, but with uncommon and subtle means. Magic is called malevolent or 'black' when performed for mercenary purposes, for spite and revenge, to help the criminally inclined, and to hurt others. It is called beneficent or 'white' when it is done gratuitously, to help, to encourage and to protect fellow-beings." —Jacob Bonngren.

जिस पेड़के सहारे खड़े होकर हमारा यह लिखना-पढ़ना हो रहा था, मैंने अचानक आश्चर्यके साथ देखा, वह रेलवे लाइनसे अधिक-से-अधिक एक फर्लांग दूर उसी स्थानके पास था जहाँ मेरा साथी रेलसे उतरा था।

"हाँ, यह भी एक चमत्कार है कि डेढ़ घण्टेकी यात्राके बाद हम दोनों वहींके वहीं हैं" युवकने मुसकराते हुए कहा, "आपके घरके कितने पास तक पहुँचकर हम लोग कब इधरको लौट पड़े, आपने बताया भी नहीं !"

सचमुच मुझे ध्यान नहीं आया कि कब हम लोग वापस इस ओरको लौट पड़े। इसका मुझे बहुत-कुछ दुःख भी हुआ।

"आपकी बातोंमें मैं ऐसा कुछ भूल गया ! कोई बात नहीं, दो-तीन मीलकी अतिरिक्त सैर ही सही, चलिये।" मैंने उसका हाथ पकड़कर घर की ओर मुड़ते हुए कहा।

"मुझे बहुत जल्द वापस जाना है। आपने मुझे राह पर वापस होते समय रोका नहीं क्या इसे आप चमत्कार नहीं मानेंगे।"

इसी समय रेलगाड़ीके आगराकी ओरसे आनेकी आवाज़ सुनाई देने लगी।

"जब मेरा ध्यान किसी बातमें लग जाता है तो इस तरहके चमत्कार ढेरों घट जाते हैं।" मैंने उपेक्षापूर्वक कहा।

"ख़ैर, इसके पहले आपने आज और कोई चमत्कार देखा था ?" उसने पूछा।

"मैंने नहीं देखा।"

"वही तो मैं कहता हूँ, आपकी आँखें अभी चीज़ों पर ठहरना नहीं जानतीं। आम दुनियावालोंका यही हाल है।"

हमारे समीप पहुँचकर दिल्लीकी ओर जानेवाली गाड़ी धीमी होने लगी।

"मेरी गाड़ी आ पहुँची है। पिछली बार मुझे उतारनेके लिए गाड़ी का इस स्थान पर रुकना आपने चमत्कार नहीं माना तो अबकी बार इस गाड़ीको मुझे लेनेके लिए रुकना तो आप चमत्कार मानेंगे?"

मैं कुछ विचलित हुआ।

"इसी जी० आई० पी० में मेरे एक प्रतिभाशाली मित्र हैं। उनकी इस लाइनके प्रायः सभी रेलवे गार्डों और ड्राइवरोंसे मित्रता है क्योंकि वह उनमेंसे किसीको भी कभी चाय पिलाये विना नहीं छोड़ते। इस तरहके चमत्कार मेरे वह मित्र दो-एक बार करके मुझे दिखा चुके हैं। उनके लिए पहलेसे सूचना होने पर ये कार्यकर्ता किसी भी जगह, किसी बहाने, मिनट भरको गाड़ी रोक सकते हैं।"

"तब मुझे भय है कि आप कभी भी किसी चमत्कार पर विश्वास नहीं करेंगे।"

"देखूँगा तो करूँगा ही।" मैंने कहा।

"मैं कृतज्ञ हूँगा।" युवकने कहा और—

उसका हाथ मेरे हाथसे ग़ायब हो गया। मैंने चारों ओर घूमकर देखा, उसका कहीं भी पता नहीं था और रेलगाड़ी रुकनेका इरादा छोड़ कर अपनी पटरीपर चली जा रही थी।

'साहित्यिक भूतसे भेंट'—मैंने अपने अगले लेखका नाम निश्चित किया।

---

# गोलमेज परिषद्

यह ईसाकी चवालीसवीं शताब्दी है।

कला और विज्ञानके विकाससे संसार बहुत कुछ सुखी और समृद्ध है। पृथ्वी, जल, अग्नि और वायुकी कुछ ऐसी चेतनापूर्ण शक्तियोंका विज्ञान-ने पता लगा लिया है, जिन्हें प्राचीन पौराणिक कल्पनाके बहुत कुछ अनुकूल 'देवता' का नाम दिया जा सकता है। प्राचीन पौराणिक नामावलिके अनुसार पृथ्वी तत्त्वके देवताका नाम वैश्रवण, जलके अधिपतिका नाम विरूधक, अग्निके अधिष्ठाताका विरूपाक्ष और वायुके संचालक शासक का नाम धृतराष्ट्र विज्ञानने स्वीकार कर लिया है। पृथ्वीके प्रबन्ध और लोकहितके लिए इन तत्त्वोंका संचालन इनके अधिष्ठाता उपर्युक्त चार देवताओं या दिग्पालोंके हाथमें अभी तक है।

मनुष्य जातिने विद्या और विज्ञानमें इतनी उन्नति कर ली है कि वह अपने लिए अब इन तत्त्वोंका प्रबन्ध अपने हाथमें लेना चाहती है। उसकी यह माँग किसी हद तक समुचित भी है।

भूतल पर जल वर्षाका वितरण ठीक नहीं है। खेतिहर प्रदेशोंमें प्रायः ठीक समय पर यथेष्ट वर्षा नहीं होती और कभी-कभी अतिवृष्टिसे उन्हें भारी हानि उठानी पड़ती है। बस्तियोंसे दूर दुर्गम वनोंमें मेघोंका अधिकांश जल व्यर्थ ही नष्ट हो जाता है। अतएव वायुके संचालनका प्रबन्ध देवताओंको मनुष्यके हाथ हस्तान्तरित कर देना चाहिए। मनुष्य ही जब जैसा ठीक समझेंगे वायुका संचालन कर उसे आवश्यकतानुसार ठंडा या गर्म रखकर समुद्रोंसे मेघ तैयार करेंगे और जहाँ आवश्यक समझेंगे, उन्हें ले जाकर बरसायेंगे। इस प्रकारका संघर्ष वायुके अधिपति देवता धृतराष्ट्र और मनुष्योंकी प्रतिनिधि संस्थाके बीच पिछले कुछ वर्षोंसे चल

रहा था। वायुराज धृतराष्ट्रका कहना था कि वायु-सत्ताको मनुष्योंके हाथ हस्तान्तरित करना ही उनका अन्तिम उद्देश्य है, लेकिन मनुष्य जाति दूरदर्शितामें अभी इतनी विकसित नहीं है। उसे अभी एक-आध शताब्दी और ठहर कर इस उत्तरदायित्वको अपने ऊपर लेना चाहिए।

लेकिन मनुष्योंको इस उत्तरसे सन्तोष नहीं था। उन्होंने इस अधिकार-की प्राप्तिके लिए आन्दोलन उठा रखा था और उसी आन्दोलनके बढ़ते हुए दबावका यह परिणाम था कि देवताओं और मनुष्योंकी एक गोलमेज परिषद संयोजित की गई थी।

गोलमेज परिषदकी सभा जुड़ी हुई थी।

"वायु-संचालन विभागका काम हमारे हाथमें आ जाने पर हमारा कृषि विभागका वार्षिक व्यय चौरासी खरब डालरसे घट कर केवल अड़-तालीस अरब डालर रह जायगा। हमारे समय और शक्तिकी बचत इसी अनुपातसे समझी जा सकती है। नहरों और बाँधोंका खर्च ६७ प्रतिशत घट जायगा। भूतलकी खेतिहर भूमिमें हमें ३३ प्रतिशत वृद्धि-की आवश्यकता है। आगामी दस वर्षोंमें हम सुगमतापूर्वक ऐसा कर लेंगे। हमें आश्चर्य है कि हमारी ये आवश्यकताएँ वायुके बुद्धिमान देवता धृतराष्ट्रकी दृष्टिसे अब तक कैसे छिपी हुई हैं। लोकहितके लिए वायुके संचालनमें देवराज धृतराष्ट्रकी पूरी दिलचस्पी नहीं है, या इसका काम उनके वयोवृद्ध हाथोंसे कुछ बाहर हो चला है, ऐसा कहनेकी धृष्टता तो मैं नहीं कर सकता। स्वतन्त्रता और सद्भावनाके इस युगमें मैं देवताओंसे फिर एक बार बलपूर्वक अनुरोध करता हूँ कि वे मनुष्योंके प्रति अपनी उदार सद्भावनाका परिचय दें और उनकी इस सामयिक एवं समुचित मांगको स्वीकार करें।" मानव पक्षके एक अधिकारी वक्ताने बोलते हुए कहा।

"भूतलके कुछ प्रदेशोंमें हवाएँ इतनी ठंडी चलती हैं कि वहाँ हमारा कार्य करना दुस्तर हो जाता है और कुछ प्रदेश गर्म लू से ऐसे झुलसते रहते

हैं कि वहाँ रहना ही कठिन हो जाता है। ग्रीष्म ऋतुकी तपती दोपहरियोंमें अक्सर समय हो जाने पर भी हफ्तों तक आकाशमें बादलोंका नाम नहीं होता और लोगोंका घरसे निकलना एक दुःसह तपस्या हो जाती है।' अपने हाथमें इस विभागको लेकर हम ऐसी गड़बड़ी कदापि न रहने देंगे।' मानवदलके एक दूसरे वक्ताने कहा।

"ऐसी गड़बड़ियाँ आप नहीं रहने देंगे और साथ ही इस बातका भी प्रवन्ध करेंगे कि वायु-संचालन विभागके मान्यमन्त्रियों और उनके वेटों-भतीजोंके सिरों पर असह्य धूपके समय बादलके टुकड़े छाता बनकर उसके साथ-साथ चला करें।" देवता-दलके एक सदस्यने बीचमें ही कटाक्षपूर्ण परिहास किया।

देव-दलकी ओरसे ठहाकेकी एक हँसी परिषद् भवनमें गूँज उठी।

देवताओं और मनुष्योंके बीच इस कथित मैत्रीपूर्ण सम्मेलनमें अविश्वास और असन्तोषकी एक स्पष्ट भावना जाग उठी। दोनों पक्षोंकी दलीलोंमें बहुत कुछ गरमाहट आ गई। मानवदलका असन्तोष देख कर अन्तमें देव-दलके प्रमुखने मनुष्योंके ही पक्षमें अपनी सम्मति परिषदके सामने रखी।

"मनुष्यों और देवताओंके बीच विश्वास और सद्भावना बनाय रखनेके लिए मैं बड़ेसे बड़ा मूल्य देनेको तैयार हूँ। हम चाहते थे कि मानव जातिकी वायुविभाग सम्बन्धी सेवा कुछ दिन और अपने हाथमें रखकर मनुष्योंको इसकी सम्हालके योग्य हो जाने देते, लेकिन जबकि हमारे मानव-बन्धु इसमें हमारे ही किसी स्वार्थका सन्देह करते हैं तो हमें इस विभागको अपने हाथमें रखनेकी कोई इच्छा नहीं है। अगले सूर्योदयके समयसे हम यह विभाग मनुष्योंको सौंपनेके लिए प्रस्तुत हैं। मेरा विश्वास है कि मेरे देव-स्वजनोंको अब इसमें कोई आपत्ति नहीं है।" वायुके अधिपति पूर्वीय दिग्पाल देवराज धृतराष्ट्रकी ओर आशयपूर्ण दृष्टि से देखते हुए देव दलके प्रमुखने कहा।

"हमें कोई आपत्ति नहीं होगी" धृतराष्ट्रने कहा, "हम अगले सूर्योदयके समयसे अपनी वायुसंचालिनी सेनाको वापस ले लेंगे। हमारा छोटे-से-छोटा कर्मचारी भी भूतलकी वायुको हाथ नहीं लगायगा। मानव-दल सहर्ष इसका निजी प्रवन्ध कर ले।"

मानव प्रतिनिधियोंके चेहरे इसे सुनते ही फीके पड़ गये।

"इस कथनसे आपका गहरा असन्तोष प्रकट होता है। वायु संचालनके लिए हम उपर्युक्त मनुष्योंकी सेना भला कहाँसे लायेंगे? वायु-संचालन-का सारा काम आपकी पवन-सेना पूर्ववत् करती रहेगी, उसे केवल हमारी आवश्यकताओंके अनुसार हमारे आदेशों पर काम करना होगा। देवताओंके अनिवार्य सहयोगका मूल्य तो हम नहीं घटाना चाहते। उसके बिना हमारा काम भी तो नहीं चल सकता।" मानवदलके प्रमुखने अनुनयपूर्ण स्वरमें कहा।

पवनकुमारोंकी सेना पूर्ववत् वायुका संचालन करेगी, उसे अगले सूर्योदयके समयसे देवराज धृतराष्ट्रकी जगह मानवदलके प्रधान वायुमंत्री का आदेश मानना होगा—इसी निश्चयके साथ गोलमेज परिषदकी कार्यवाही समाप्त हुई।

अपनी विजयके उपलक्षमें मनुष्योंने उस रात सारे भूतल पर बड़ी ख़ुशियाँ मनाईं।

अगले दिन सूर्योदयके समयसे सारे भूतलका वातावरण ही बदल गया। गर्म प्रदेशोंमें शीतल, मन्द, सुवासित हवायें बहने लगीं, ठण्डे प्रदेशोंकी वायु-में कुछ गरमाहट आ गई। बरफानी प्रदेशोंमें वायुका प्रवाह लगभग बन्द करके उन्हें सुखद बना दिया गया। मेघोंके दल तपती प्यासी धरती पर बरसनेके लिए उमड़ चले। आवश्यक दिशाओंमें उनका रुख सम्हाल लिया गया। वायु-द्वारा संचालित शीत, उष्णता और तरलताका कहीं भी अभाव नहीं रह गया, कहीं भी अपव्यय नहीं रह गया। सुख-स्पर्शी मनोनुकूल वातावरणमें सारा संसार थिरक उठा।

मानव जातिको एक नया स्वराज्य मिल गया था।

दिन-रात, सप्ताहों और महीनोंके पीछे-पीछे वर्ष पर वर्ष बीतने लगे। धरती हरियालियोंसे महक उठी। धन-धान्यकी समृद्धिके साथ-साथ सारा भूतल एक सुखकर उपवन बन गया।

विश्वराष्ट्रकी अदालतमें दो राष्ट्रोंके बीच संघर्षका एक मामला प्रस्तुत हुआ।

उनमेंसे एकने दूसरे पर किसी व्यावसायिक मतभेदके कारण चढ़ाई कर दी।

विश्वराष्ट्रकी अदालतने आक्रमणकारी राष्ट्रको अपनी सेनाएँ दूसरे राष्ट्रकी सीमासे तुरन्त हटा लेनेकी आज्ञा दी, किन्तु इस आज्ञाकी कोई सुनवाई न हुई। विवश हो विश्व-अदालतने बल प्रयोगका आश्रय लिया।

अणुबम, ताप-किरण, विष-किरण, राहुकिरण, शाप-किरण आदि घातक साधनोंका प्रयोग विश्व-अदालतने विनाश-कार्योंके लिए स्वयं ही वर्जित मान रखा था, किन्तु पवन शक्तिके प्रयोगके सम्बन्धमें अभी तक कोई वैसा वर्जनात्मक नियम नहीं बना था।

"पवन-शक्तिका प्रयोग करके क्यों न इस अत्याचारको एकदम ठंडा कर दिया जाय?" विश्व-अदालतके एक सदस्यने अपनी नई सूझ प्रस्तुत की, "आक्रमणकारी सेनाओंको उनके मोर्चोंसे उड़ाकर देखते ही देखते समुद्रके गर्भमें सुलाया जा सकता है।"

थोड़ेसे वाद-विवादके बाद अदालत-समितिने इस सुझावको प्रयोगके लिए स्वीकार कर लिया।

आँधियोंके एक भयंकर तूफानने आक्रमणकारी सेनाओंको समुद्रमें ला डुबाया।

लेकिन इसमें आक्रमणकारी राष्ट्रसे अधिक आक्रान्त राष्ट्रकी क्षति हुई। उसके अनेक नगर धरतीमें लोट गये, लाखोंकी धन-जनकी हानि

हो गई। नदियोंका पानी बाँधोंको तोड़ कर नगरोंको डुबा वैठा। वायु-के आक्रमणका क्षेत्र भी तो वह अभागा आक्रान्त देश ही था।

"विश्व-अदालतने न्याय नहीं किया। रक्षाकी ओटमें हमारे प्रति वैमनस्यका बीज अदालत-समितिमें कहीं न कहीं अवश्य उग आया है।" आक्रान्त देशके निवासियोंकी पुकार उठी।

नियमानुसार विश्व-अदालतको जाँच समिति नियुक्त करनी पड़ी और जाँचका खुला विवरण संसारके सामने रखना पड़ा। इस दुर्घटनामें सचमुच एक षड्यन्त्रका हाथ पकड़ा गया। वायु-संचालन विभागके एक ऊँचे कार्यकर्ताने, जो संयोगवश आक्रमणकारी देशका ही एक नागरिक था, वायुसंचालनकी दिशा और दबावमें पक्षपातसे काम लिया था, नहीं तो दूसरे सब कुछको बचाकर बड़ी आसानीसे केवल आक्रमणकारी सेनाओंको ही वायुबलका लक्ष्य बनाया जा सकता था। और इस कार्यके लिए इस कार्यकर्त्ताकी नियुक्ति आक्रमणकारी देशके वायु-विभाग सम्बन्धी मन्त्रीने कुछ भीतरी चाल चल कर इस प्रकार करा दी थी कि दूसरे देशोंके मन्त्रियोंका ध्यान इस ओर नहीं आ पाया था।

वायु विभागकी सीटोंके बटवारेमें संशोधनका प्रश्न विश्व-अदालतमें उठ खड़ा हुआ।

विगत संघर्षके फलस्वरूप संसारके अधिकांश राष्ट्र दो पक्षोंमें बँट गये और उनके बीच तनातनी भयंकर रूप धारण करने लगी।

विश्व-अदालतके भवनमें उस समय सभा जुड़ी थी और मामला इतना उलझ गया था कि वायु-संचालनकी सत्ताको फिरसे देवताओंके हाथोंमें लौटा देनेका प्रस्ताव एक सदस्यने उपस्थित कर दिया था।

इस प्रश्न पर कुछ निर्णय करनेके लिए देवताओं और मनुष्योंकी एक और गोलमेज परिषद बुलाई जाय इसी बात पर विचार हो रहा था। अदालतके कुछ सदस्योंका अनुमान था कि शायद वायु सत्ताको अपने हाथ-

में वापस लिए विना देवता लोग मनुष्योंके इस झगड़ेका कोई हल बता कर उसमें कोई सहयोग दे सकते हैं।

अचानक अदालत-भवनके भीतरके सारे वातावरणसे वायु बाहर खिंच गई—हवाके अभावमें लोगोंका दम घुटने लगा।

किसी स्वार्थी देशके निवासी वायु इंजीनियरने कोई शरारत की है, लोगोंको समझते देर न लगी। वे सब अदालत भवनसे निकलकर बाहर भागने ही को थे कि वायुके एक प्राण-प्रद झोंकेके साथ-साथ लोगोंने अदालत-भवनमें वायु देवता धृतराष्ट्रको उपस्थित देखा।

"सचमुच वह किसी स्वार्थी, संकुचित-हृदय वायु इंजीनियरकी शरारत ही थी। गोलमेज परिषदके जुड़ने तक आप लोगोंका जीना असम्भव देखकर मैंने स्वयं वायुसंचालनका कार्य एक दम अपने ऊपर वापस ले लिया है। विद्या और विज्ञानकी उन्नति ही शक्तिको सम्हालनेके लिए पर्याप्त नहीं है, उसके लिए मनुष्य जातिमें निस्वार्थता और आध्यात्मिक बुद्धिके जागनेकी भी आप लोगोंको प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।" वायु-राज धृतराष्ट्र कह रहे थे।



# शासकोंका उपनिवेश

महाराज मनुस्वान्के शासनकालमें मंगल-ग्रहका साम्राज्य बहुत समृद्ध था। उस समय उस ग्रहकी संस्कृति और कला उच्च श्रेणी पर पहुँची हुई थी।

ग्रहके नये खोजे हुए एक द्वीप पर साम्राज्यका एक नया उपनिवेश बसानेके लिए महाराजको ऐसे प्रवन्धकों, शासन-अधिकारियों, शिक्षकों और साधारण नागरिकोंकी आवश्यकता थी जो उस नये उपनिवेशमें बसनेके लिए तैयार हों। इसके लिए सारे राज्यमें यह घोषणा कर दी गई कि जो लोग नये उपनिवेशमें जाकर बसनेके लिए तैयार हों वे राजकीय उपनिवेश-विभागको अपने आवेदनपत्र भेज दें और साथ ही यह भी लिखें कि वे किस हैसियतसे वहाँ जाना पसन्द करेंगे।

इसी बीच महाराजने यह भी प्रबन्ध किया कि जो लोग साधारण नागरिकके रूपमें उस उपनिवेशमें जाना चाहेंगे उन्हें आदर्श नागरिकताकी यथेष्ट शिक्षा वहाँ पहुँचनेवाले शिक्षक, प्रबन्धक और शासक वर्ग-द्वारा राज्यकी राजधानीमें ही, उपनिवेशमें पहुँचनेसे पहले ही दे दी जाय। इस शिक्षणके लिए अलग एक विशाल भवन भी, विद्यालय या भाषणालयके रूपमें, बनवाया गया। साथ ही, उपनिवेशके प्रथम नगरकी नींव भी डाल दी गई। इस नगरमें पहले पाँच सहस्र नागरिक-वर्गके परिवारों तथा पचास शासक-शिक्षकवर्गके परिवारोंके निवासका प्रबन्ध किया गया। नगरके मध्य भागके विशेष खुले सुविधापूर्ण स्थानमें, अपेक्षा-कृत विशेष सुन्दर और विशद भवन अधिकारी वर्गके लिए बनवानेका आयोजन किया गया।

आवेदन-पत्रोंके आनेकी निश्चित अवधि पूरी हो जानेपर, आये हुए

आवेदन-पत्र खोले गये। शासक-शिक्षक-वर्गके रूपमें जानेवाले पांच सहस्र व्यक्तियोंके आवेदन-पत्र आये थे और साधारण नागरिकके रूपमें जानेवाले केवल पाँच व्यक्तियोंके !

इसमें प्रार्थियोंका कोई दोष नहीं था। उस राज्यके प्रायः सभी निवासी शिक्षित, सुयोग्य और शासन-व्यवस्था या किसी न किसी अन्य कलामें निपुण थे।

पूर्व निश्चित प्रबन्धके अनुसार राजधानीके उस नये नागरिक विद्यालयमें नये उपनिवेशके शासक-शिक्षक-वर्ग द्वारा शासित नागरिक वर्गकी शिक्षा प्रारम्भ हो गई।

विद्यालयकी शासन-व्यवस्था और शिक्षण-प्रणालीमें विवश होकर कुछ परिवर्तन करने पड़े। स्थानावकाशके अनुसार विद्यालयके शिक्षक वर्गको शिष्य-वर्गके स्थान पर और शिष्य-वर्गको शिक्षक वर्गके स्थान पर—अधिकारी वर्ग ही यहाँ शिक्षक और नागरिक वर्ग ही शिष्य वर्ग था—बैठना पड़ा; और चूंकि दैनिक शिक्षणके घण्टोंमें पाँच सहस्र अध्यापकोंके पूरे भाषण नहीं हो सकते थे, इसलिए शिक्षा-प्रणाली यह कर दी गई कि सभी शिक्षक अपनी-अपनी उस दिनकी शिक्षाको सूत्र रूपमें, क्रमानुसार अपने-अपने स्थानों पर खड़े होकर एक ही एक वाक्यमें कहते जायँ। शिष्यवर्गको यह आदेश था कि वह अपने मनोगत प्रश्न शिक्षक-समूहके सामने उपस्थित करे और शिक्षक-वर्गका यह कर्त्तव्य था कि उसमेंसे जो भी व्यक्ति प्रस्तुत प्रश्नका सबसे अच्छा, अधिकार-पूर्ण उत्तर दे सके, दे।

नागरिक शिक्षणके अन्तर्गत उस विद्यालयमें पाँच विषयोंकी शिक्षा दी गई। वे विषय ये थे: १—स्वास्थ्य एवं स्वच्छता २—पारस्परिक सहयोग, ३—पर-अधिकार ४—व्यवस्था-पालन एवं आज्ञाकारिता, ५—विकासकी दिशाएँ। पर-अधिकारके अन्तर्गत अपने पड़ोसीकी सुख-सुविधा और व्यक्तिगत स्वतन्त्रताकी पूरी और सुलझी हुई शिक्षा दी गई थी, विकास-

की दिशाओंके अन्तर्गत उद्योग, कृषि, व्यवसाय, दर्शन, परलोक दर्शन, विज्ञान, अन्तर्जगत् तथा अनेक ललित कलाओं एवं विद्याओंकी शिक्षा समाविष्ट थी।

विद्यालय बन्द करनेके पहले अन्तिम दिन महाराजने स्वयं उपस्थित होकर दीक्षान्त भाषण दिया। अपने भाषणमें नये उपनिवेशके नागरिकोंको अनेक उपयोगी परामर्श देनेके पश्चात् महाराजने अपनी और नागरिक वर्गकी ओरसे अधिकारी वर्गको उनकी अमूल्य शिक्षाओंके लिए धन्यवाद भी दिया।

यथा-समय यह प्रवासी दल नये उपनिवेशमें जा बसा। निवास-व्यवस्थामें यहाँ भी एक अनिवार्य परिवर्तन करना पड़ा—प्रवासियोंकी संख्याके अनुसार शासित नागरिकोंको शासक अधिकारियोंके निवास-गृहोंमें और अधिकारियोंको नागरिकोंके निवास-गृहोंमें बसना पड़ा।

अधिकारी वर्गके पाँच हजार व्यक्तियोंके पास अधिकृत वर्गके पाँच परिवारोंके शासन और व्यवस्थाका काम क्रियात्मक रूपमें, नगण्य ही था। आदर्श नागरिकताकी उत्कृष्ट शिक्षा पहले ही पा चुकनेके कारण उन पाँच परिवारोंके बीच किसी प्रकारकी अव्यवस्था, उच्छृंखलता या संघर्षका अवकाश नहीं था। शासक वर्गके न्यायालयों, शिक्षणालयों और व्यवस्था विभागोंमें कोई काम नहीं था। लेकिन अधिकारी वर्गके सामने एक नई ही समस्या उठ खड़ी हुई थी। अधिकृत-वर्गकी तो नहीं, पर अपने अधिकारी वर्गकी सुव्यवस्थामें उन्हें कुछ कठिनाइयाँ दीखने लगी थीं। अधिकारी वर्गके व्यक्तियोंके कुछ विशेष अधिकार होते थे और उन्हें जनसाधारणके नियमोंसे शासित और संचालित नहीं किया जा सकता था। अपने-अपने शासन या शिक्षण सम्बन्धी विषयोंके वे कुशल अधिकारी थे और राज-नियमोंमें उनके सम्मानके लिए विशेष अवकाश रखा गया था। अपने-अपने विषयके अधिकारी होनेके कारण उन सबका पद प्रायः बराबर ही था और कोई किसीका अनुशासन नहीं स्वीकार कर सकता था।

आवेदन-पत्र खोले गये। शासक-शिक्षक-वर्गके रूपमें जानेवाले पांच सहस्र व्यक्तियोंके आवेदन-पत्र आये थे और साधारण नागरिकके रूपमें जानेवाले केवल पाँच व्यक्तियोंके !

इसमें प्रार्थियोंका कोई दोष नहीं था। उस राज्यके प्रायः सभी निवासी शिक्षित, सुयोग्य और शासन-व्यवस्था या किसी न किसी अन्य कलामें निपुण थे।

पूर्व निश्चित प्रबन्धके अनुसार राजधानीके उस नये नागरिक विद्यालयमें नये उपनिवेशके शासक-शिक्षक-वर्ग द्वारा शासित नागरिक वर्गकी शिक्षा प्रारम्भ हो गई।

विद्यालयकी शासन-व्यवस्था और शिक्षण-प्रणालीमें विवश होकर कुछ परिवर्तन करने पड़े। स्थानावकाशके अनुसार विद्यालयके शिक्षक वर्गको शिष्य-वर्गके स्थान पर और शिष्य-वर्गको शिक्षक वर्गके स्थान पर—अधिकारी वर्ग ही यहाँ शिक्षक और नागरिक वर्ग ही शिष्य वर्ग था—बैठना पड़ा; और चूँकि दैनिक शिक्षणके घण्टोंमें पाँच सहस्र अध्यापकोंके पूरे भाषण नहीं हो सकते थे, इसलिए शिक्षा-प्रणाली यह कर दी गई कि सभी शिक्षक अपनी-अपनी उस दिनकी शिक्षाको सूत्र रूपमें, क्रमानुसार अपने-अपने स्थानों पर खड़े होकर एक ही एक वाक्यमें कहते जायँ। शिष्यवर्गको यह आदेश था कि वह अपने मनोगत प्रश्न शिक्षक-समूहके सामने उपस्थित करे और शिक्षक-वर्गका यह कर्त्तव्य था कि उसमेंसे जो भी व्यक्ति प्रस्तुत प्रश्नका सबसे अच्छा, अधिकार-पूर्ण उत्तर दे सके, दे।

नागरिक शिक्षणके अन्तर्गत उस विद्यालयमें पाँच विषयोंकी शिक्षा दी गई। वे विषय ये थे : १—स्वास्थ्य एवं स्वच्छता २—पारस्परिक सहयोग, ३—पर-अधिकार ४—व्यवस्था-पालन एवं आज्ञाकारिता, ५—विकासकी दिशाएँ। पर-अधिकारके अन्तर्गत अपने पड़ोसीकी सुख-सुविधा और व्यक्तिगत स्वतन्त्रताकी पूरी और सुलझी हुई शिक्षा दी गई थी, विकास-

की दिशाओंके अन्तर्गत उद्योग, कृषि, व्यवसाय, दर्शन, परलोक दर्शन, विज्ञान, अन्तर्जगत् तथा अनेक ललित कलाओं एवं विद्याओंकी शिक्षा समाविष्ट थी।

विद्यालय बन्द करनेके पहले अन्तिम दिन महाराजने स्वयं उपस्थित होकर दीक्षान्त भाषण दिया। अपने भाषणमें नये उपनिवेशके नागरिकोंको अनेक उपयोगी परामर्श देनेके पश्चात् महाराजने अपनी और नागरिक वर्गकी ओरसे अधिकारी वर्गको उनकी अमूल्य शिक्षाओंके लिए धन्यवाद भी दिया।

यथा-समय यह प्रवासी दल नये उपनिवेशमें जा बसा। निवास-व्यवस्थामें यहाँ भी एक अनिवार्य परिवर्तन करना पड़ा—प्रवासियोंकी संख्याके अनुसार शासित नागरिकोंको शासक अधिकारियोंके निवास-गृहोंमें और अधिकारियोंको नागरिकोंके निवास-गृहोंमें बसना पड़ा।

अधिकारी वर्गके पाँच हजार व्यक्तियोंके पास अधिकृत वर्गके पाँच परिवारोंके शासन और व्यवस्थाका काम क्रियात्मक रूपमें, नगण्य ही था। आदर्श नागरिकताकी उत्कृष्ट शिक्षा पहले ही पा चुकनेके कारण उन पाँच परिवारोंके बीच किसी प्रकारकी अव्यवस्था, उच्छृंखलता या संघर्षका अवकाश नहीं था। शासक वर्गके न्यायालयों, शिक्षणालयों और व्यवस्था विभागोंमें कोई काम नहीं था। लेकिन अधिकारी वर्गके सामने एक नई ही समस्या उठ खड़ी हुई थी। अधिकृत-वर्गकी तो नहीं, पर अपने अधिकारी वर्गकी सुव्यवस्थामें उन्हें कुछ कठिनाइयाँ दीखने लगी थीं। अधिकारी वर्गके व्यक्तियोंके कुछ विशेष अधिकार होते थे और उन्हें जनसाधारणके नियमोंसे शासित और संचालित नहीं किया जा सकता था। अपने-अपने शासन या शिक्षण सम्बन्धी विषयोंके वे कुशल अधिकारी थे और राज-नियमोंमें उनके सम्मानके लिए विशेष अवकाश रखा गया था। अपने-अपने विषयके अधिकारी होनेके कारण उन सबका पद प्रायः बराबर ही था और कोई किसीका अनुशासन नहीं स्वीकार कर सकता था।

पाँच हज़ार अधिकारी वर्गके परिवारोंका, जिनकी जनसंख्या पच्चीस हज़ारके लगभग थी, एक घनी तंग-सी बस्तीमें एक साथ मिल कर रहना एक नई बात थी। अपनी मातृ-भूमिमें वे सब अलग अलग, एक दूसरेसे स्वतन्त्र रहनेके आदी थे। उनका काम अपने विभागके शासितों या शिक्षार्थियोंसे ही पड़ता था, जो उनकी इच्छाओं और आदेशोंका आदर-पूर्वक पालन करते थे। उन्हें दूसरोंकी व्यवस्था करना आता था, स्वयं व्यवस्थित होना नहीं; दूसरोंको मिलाकर एक साथ चलाना आता था, स्वयं मिलकर चलना नहीं; उन्हें कर्तव्योंका ज्ञान था, लेकिन अपने अधिकृत वर्गोंके कर्तव्योंका; उन्हें अधिकारोंका भी ज्ञान था, लेकिन केवल अपने अधिकारोंका।

नागरिकता और पारिवारिकता तो आखिर उन अधिकारी-वर्गके व्यक्तियोंके जीवनमें भी थी ही। उनकी भी आवश्यकताएँ एक नागरिककी आवश्यकताएँ थीं। आवश्यक साधनों और स्वतन्त्रताओंकी संकीर्णताके कारण उपनिवेशमें एक संघर्ष प्रारम्भ हो गया। शासन-विशारदोंने कहा—'हमारे आदेशोंका सभीको तत्काल पालन करना चाहिए। इसके विना व्यवस्था रह ही नहीं सकती।' कलाविशारदोंने कहा—'शासन-वेत्ता कलाकी आवश्यकताओं और सीमाओंको क्या समझें, कलाकारकी गति-विधि पर उन्हें कोई रोक नहीं लगानी चाहिए।' न्याय-विशारदोंने कहा—'इन सभी पारस्परिक झगड़ों-मतभेदों और इनकी सीमाओंका निर्णय हमारे हाथमें होना चाहिए; हमारी कसौटी पर परखे विना कोई आदेश और कोई व्यवस्था उपयोगी नहीं हो सकती।' इन्हीं मतभेदों और व्यावहारिक जीवनके छोटे-बड़े पारस्परिक संघर्षोंको लेकर उस नये उपनिवेशकी बस्तीमें कलह और अशांतिका सूत्रपात हो गया।

उपनिवेशमें अराजकता बढ़ी और उसकी सूचना महाराजको मिली। महाराजको उपनिवेशमें तुरन्त ही उपस्थित होना पड़ा।

महाराजका दरबार लगा और उनमें अधिकारी और अधिकृत-वर्गके

सभी लोग निमंत्रित किये गये। उपनिवेशकी समस्याओंपर प्रकाश डालते हुए महाराजने अन्तमें अधिकारी-वर्गको सम्बोधित करते हुए कहा—"आपमेंसे प्रत्येक अपने-अपने विषय और विभागका विद्वान् एवं अधिकारी है। हमारे राज्यमें इतने कुशल विशारदोंका होना हमारे लिए गर्वकी बात हैं। किन्तु आपमेंसे कोई भी दूसरे विषय या विभागकी न यथेष्ट जानकारी रखता है और न उसके प्रति कोई आदर या उदारताका भाव रखता है। इस उपनिवेशके शासित-वर्गके व्यक्ति किसी विषयमें भी आपके बराबर दक्ष नहीं हैं, फिर भी उन्होंने सभी विषयोंकी आवश्यकतानुसार यथेष्ट जानकारी और उनका व्यावहारिक उपयोग आपसे सीख लिया है। उनमेंसे प्रत्येक आदमी एक दूसरेसे सामंजस्य एवं सहयोग रखता हुआ प्रत्येक विभागका काम सम्हाल सकता है। इसलिए मैं, उपनिवेशके हितोंको सामने रखता हुआ, आजसे शासन और शिक्षणका कार्य अधिकृत वर्गके पाँचों व्यक्तियोंके हाथ सौंपता हूँ और आप लोगोंको अधिकृत वर्गकी भांति उनके लिए बनाये हुए विधानके अनुसार रहनेका आदेश देता हूँ। ऐसा करनेसे आप लोग धीरे-धीरे अपने एकांगी व्यक्तित्वको सम्पूर्ण बना लेंगे। शासक और शिक्षक बननेके लिए एक सीमा तक, एकांगी ज्ञान पर्याप्त होता है, किन्तु शासित और शिक्षित केवल पूर्णांग ज्ञान वाले ही बन सकते हैं। अपने पूर्व-पद पर पुनः पहुँचनेके लिए ऐसे ज्ञानकी आपको आवश्यकता है। मानव-विकासमें सीखने और सिखाने, दोनोंका क्रम, सूर्यकी अशेष यात्रामें पूर्व और पश्चिमकी भांति बराबर चलता रहता है। मंगलग्रहका जीवन-काल समाप्त होने आ रहा है। हमारी मानव-जाति अब पृथ्वी लोक पर पहुँच कर अपना अगला विकास प्रारम्भ करेगी और वहाँके प्रारम्भिक युगमें इस उपनिवेशके ये पाँच शासित व्यक्ति ही शासकके रूपमें और ये पाँच सहस्र शासक व्यक्ति शासितके रूपमें अवतीर्ण होंगे। तब तक, अपने नये लोककी परिस्थितियोंका अभ्यास आप लोग इस उपनिवेशमें ही रहकर करेंगे!"

# कामकी घण्टी

उस रात हमारी गाड़ी तीन घण्टे लेट, एक बजे रातको मुजफ्फरपुर पहुँची। स्टेशनसे हमने ताँगा लिया और किसी आरामदेह होटल या धर्मशालाकी खोजमें चल दिये। शहरकी लगभग सभी धर्मशालाओं और होटलोंका दरवाजा खटखटाया। अधिकांशके दरवाजे ही नहीं खुल सके और जिनके खुल भी सके उनमें जगहकी तंगी निकली। हम नींदमें भरे, निराश, स्टेशनके मुसाफ़िरख़ानेमें ही बिस्तर लगानेके लिए लौट रहे थे कि सड़कके किनारे, शायद हमारे ताँगेकी आहट पाकर ही, एक मकानका दरवाजा खुला और घरके मालिकने बाहर आकर ताँगेवालेसे रुकनेका इशारा किया। ताँगा रुक गया।

"आपको कहीं जगह नहीं मिली, उतरिये, आज आपको मेरा ही मेहमान होना है।" उन सज्जनने हमारे बक्सके ऊपर रखी हुई डोलचीको ताँगेसे उतारते हुए एक पुराने परिचित स्वजनके-से स्वरमें कहा।

यह सज्जन हमारे पुराने परिचित या स्वजन तो नहीं थे, हाँ, पाँच स्टेशन पहलेसे मुजफ्फरपुर स्टेशन तक वह रेलके डिब्बेमें हमारे पड़ोसी अवश्य थे। वह भी मुजफ्फरपुर जा रहे थे और वहींके निवासी थे। मैं अपने पुस्तक-प्रकाशन गृहकी एजेन्सियाँ स्थापित करनेके लिए दौरे पर निकला था और इसी सिलसिलेमें मुझे दो दिन मुजफ्फरपुर ठहरना था। इससे अधिक एक दूसरेकी जानकारी दिखाने वाली मेरी उनकी कोई बात नहीं हुई थी। उन्हें ही अब अपनी निराश्रयताके अवसर पर अपना मेजबान पाकर हम उनके आग्रहको टाल न सके।

एक साफ़-सुथरे, सजे-सजाये कमरेमें दो बिछे-बिछाये हुए बिस्तर मानो पहलेसे ही हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने इन अकारण उदार

आतिथ्यकारकी अपेक्षा हमारी दिलचस्पी उस समय उन बिस्तरोंमें ही अधिक थी। दीवालकी घड़ी तीन बजा रही थी। बिस्तरों पर लेटते ही हम बेहोशीकी नींद सो गये।

सुबह जागने और चायकी मेज पर विशेष परिचय होने पर हमने जाना कि वह वकालत करते हैं और नगरके एक प्रतिष्ठित और सम्पन्न व्यक्ति हैं।

उनके आग्रह पर हम चार दिन उनके मेहमान रहे। मुजफ्फरपुरमें मुझे जितने कामकी आशा थी उससे अधिक हुआ। जैसा कि होना चाहिए था, मुजफ्फरपुरके साहित्यकारों और साहित्यिक व्यवसायियोंका उनके घर पर ही मेरा परिचय हुआ। इन सज्जनोंका साहित्यिक जलपान, साहित्य-गोष्ठी, साहित्यिक चर्चा और स्वागत-सत्कार ठीक वैसा ही हुआ जैसा मैं अपने घर पर अपने अभ्यागतोंका करता। घरके नौकरों, बच्चों और महिलाओंका सत्कार सम्बन्धी उत्साह मुझे वकील साहबसे भी अधिक जान पड़ा।

वकील साहबने मेरी साहित्यिक योग्यताओं और कार्योंमें कोई विशेष दिलचस्पी नहीं दिखाई। मेरा साहित्यिक व्यक्तित्व जैसे उनकी दृष्टिमें कोई खास कामकी चीज़ नहीं थी, केवल भोजन और जलपानके समय ही मेरा उनका साथ होता और उस समय भी वह कुछ विशेष बातचीत न करते। शेष समय वह अलग अपने कामोंमें व्यस्त रहते। उनकी इस गम्भीर अप्रिय-सी उदासीनताको मैं उनके सौजन्यके साथ कहीं बिठा नहीं पाया।

जिस विशेष घटनाकी मुझे चर्चा करनी है वह हमारी मेहमानदारीकी तीसरी शामकी है।

घरके सब लोग खानेके कमरेमें थे। सभीके सामने लगी हुई चौकियों पर भोजनके थाल परोसे जा चुके थे। अचानक वकील साहबने अपने आसनसे उठकर मुझे लक्ष्य करते हुए कहा—"आप लोग भोजन कीजिए, मेरे लिए एक जरूरी काम आ गया है, मैं बादमें खाऊंगा" और वह बगल-

के एक छोटे कमरेमें, जिसमें सम्भवतः एक लम्बे कोचके अतिरिक्त और कुछ नहीं था, चले गये ।

वकील साहबके इस व्यवहार पर हमें बड़ा आश्चर्य हुआ लेकिन उनकी श्रीमतीजीने एक सरल-सी मुस्कराहटके साथ हमारा समाधान किया, "इन्हें कभी-कभी अचानक इस तरहका काम लग जाता है । इसमें इन्हें न जाने कितनी देर लग जाय । हम लोग तो खायें ही" और रोटीका एक ग्रास बनाकर उन्होंने अपने पास बैठी हुई मेरी पत्नीके मुँहमें सटा दिया । हम सबने खाना शुरू कर दिया ।

"वकील साहबको अचानक उस कमरेके अन्दर ऐसा क्या काम लग सकता है ?" मैंने अपनी उत्सुकताको अदम्य पाकर श्रीमती वकीलसे पूछा। हम इस परिवारसे उस समय तक काफी बेतकल्लुफ हो चुके थे ।

"लौटकर वह खुद ही आपको शायद बता सकेंगे ।" उन्होंने उत्तर दिया ।

हमारा भोजन समाप्त हुआ । हम अपने सोनेके कमरेमें जा पहुँचे, लेकिन वकील साहबकी कोई खबर न मिली । होते-होते कमरेकी घड़ीने दस बजा दिये । वकील साहबके सम्बन्धमें मेरी उत्सुकता इतनी बढ़ गई थी कि मुझे नींद नहीं आ रही थी ।

पाँच मिनट बाद मैंने अपने कमरेके किवाड़ पर एक हलकी थपकीके साथ एक धीमी आवाज सुनी, "आप जाग रहे हैं ?"

मेरी पत्नीने उठकर किवाड़ खोल दिये । वकील साहबकी लड़की सुनन्दा हमारी खबर लेने आई थी ।

"आप सोने न जा रहे हों तो आप दोनोंको बुलाया है ।" सुनन्दाने कहा।

हम दोनों उसके साथ चल दिये। वकील साहब भोजनके कमरेमें थे, उनका थाल उनके सामने आ चुका था ।

"ऐसे बेवक़्त खानेके लिए मुझे माफ़ कीजियेगा ।" उन्होंने कुछ मुस्कराते हुए कहा ।

"आपने वक़्त पर खाना नहीं खाया तो जिस समय भी आप खायेंगे वह बेवक़्त तो नहीं कहा जा सकता" मैंने उनकी बातको न समझते हुए ही उत्तर दिया। वह भोजन करने लगे।

"आगरेमें आपके मकानके पास ही आपके कोई करीबी रिश्तेदार रहते हैं ?" उन्होंने प्रश्न किया।

"हाँ, मेरे एक साढ़ू साहब मेरे मकानके पास ही रहते हैं।" मैंने बताया।

"आपका उनका बहुत गहरा प्रेम है ?" उन्होंने प्रश्नके ही स्वरमें कहा।

"है तो।" मैंने अगली बातके लिए उत्सुक होकर उत्तर दिया।

"उनकी अभी दो घंटे पहले मोटर-दुर्घटनासे मृत्यु हो गई है।" उन्होंने मेरी आँखोंमें एक स्थिर दृष्टि डाल कर कहा।

मैं विचलित हो उठा। जिनकी मृत्युका यह समाचार था वह संसारके मेरे इने-गिने स्नेहियोंमें एक प्रमुख स्थान रखते थे। आयुमें वह मुझसे बहुत बड़े थे और हमारे इस नातेदारीके सम्बन्धके बहुत पहलेसे ही हमारे पारिवारिक मित्रके नाते वह मुझसे गहरा स्नेह रखते थे। इस समाचारके आघातसे कुछ सावधान होने पर ही मुझे ध्यान आया कि मैं वकील साहबकी इस सूचना पर अविश्वास करनेकी बात तक नहीं सोच पाया था। अब अपनी बुझी-सी आशाकी ओर पाँव उठानेका प्रयत्न करते हुए मैंने शंका की—

"आपको जैसे भी यह सूचना मिली है उसकी सचाई पर क्या आपको कोई सन्देह नहीं है ? इस घटनाकी सूचना आपको कैसे मिली ?"

"ऐसी घटनाओंकी सूचनाएँ मेरे पास तक आनेका एक खास प्रबन्ध है, और वह इसलिए कि उनके सम्बन्धमें कुछ करना मेरे रोजानाके कामों का एक अंग है।"

मैंने केवल एक प्रश्नभरी दृष्टिसे देखा।

"दुनियामें हर घड़ी सैकड़ों लोग ऐसी दुर्घटनाओंसे मरते रहते हैं।

इस तरह अचानक शरीर छोड़ने पर वे जिस हालतमें अपने आपको पाते हैं, उसमें उनके दिल-दिमाग़ अक्सर बहुत डरे और घबराये हुए होते हैं। उनकी सेवा-सहायता करने और उन्हें उनकी नई हालतकी ठीक जानकारी करानेके लिए, खासकर पहली जर्मन लड़ाईके समयसे, एक वालिण्टियर कोर या स्वयंसेवक दल क़ायम किया गया है। इस दलके स्वयं-सेवकोंका फिलहाल खास काम यही है कि वे नये मरे हुए लोगोंकी मदद पर फ़ौरन पहुँचें। मैं भी इस दलका एक वालिण्टियर हूँ।"

मेरे कृपालु आतिथ्यकारकी ये बातें मेरे लिए एकदम नई और आश्चर्य-जनक थीं। अगर पिछले अड़सठ घंटोंसे मैंने उन्हें परखा न होता तो मैं उनकी बातोंको एक पागल, उखड़े हुए दिमाग़की बातें मान सकता था। एक परमस्नेहीके आजीवन वियोगके आघातको इन विचित्र बातोंने मेरे मनमें बहुत-कुछ छिन्न-भिन्न कर दिया।

"आपका ध्यान" उन्होंने फिर कहना प्रारम्भ कर दिया "अभी तक इस दुर्घटनाके बहुत छोटेसे हिस्से पर ही अटका हुआ है, इसी लिए आपको अभी तक इसका सदमा लगा हुआ है। लेकिन इस घटनाका जो बड़ा भाग है, वही आपके, मेरे और उस बिछुड़े हुए सम्बन्धीके ख़ास मतलबकी चीज़ है।"

नये मित्रकी इस बातने मुझे सावधान कर दिया।

"यह दुर्घटना कैसे, कहाँ हुई? आपको तो पूरी ही बात हुईमालूम होगी।" मैंने पूछा।

"मथुरा स्टेशनके पास एक रेलवे क्रासिंग पर इंजनसे उनकी मोटर लड़ जानेसे।" उस घटनाका पूरा विवरण देते हुए उन्होंने बताया।

बड़ी कष्ट-पूर्ण वह मृत्यु थी। सुनते-सुनते मैं एक बार और सिहर उठा।

"लेकिन उस घटनाका यह बहुत थोड़ा शुरुआती हिस्सा है।" उन्होंने मानो मुझे पहले कही हुई बातकी याद दिलाई।

"अगली पूरी वात सुननेको मैं उत्सुक हूँ, आप वताइए न !" मैंने दोवारा सावधान होकर कहा।

"उनके प्राण निकलनेके तीन मिनट वाद मैं घटना-स्थल पर पहुँच गया। उस समय वह इतने डरे और घवराये हुए थे कि मेरे तीन-चार नमस्कारोंका उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। वह अपनी टूटी हुई कार और उसके भीतर पड़ी हुई खूनसे लथ-पथ लाशसे गज भरके फासले पर खड़े हुए हिलनेका नाम हीं नहीं ले रहे थे। उनके हृदयमें उस समय बड़े भयंकर विचार उठ रहे थे। वह कुछ आत्म-कल्पित भयंकर निर्दयी यम-दूतोंके आनेकी राह देख रहे थे। जीवनमें किये हुए उन कामों पर उनका ध्यान एकाग्र हो रहा था जिन्हें वह भयंकर पाप समझते थे। शास्त्रोंमें पढ़े हुए यमदूतों और नरक-यातनाओंकी कल्पना उस समय उनके सामने साकार-सी हो उठी थीं। वह अपने आपको कठोर दण्डका भागी और एक ऐसा परवश बन्दी समझे हुए थे जिसे एक क़दम भी अपनी इच्छासे हिलने-डुलनेकी स्वतन्त्रता न हो। यह कैसी दुर्भाग्यकी और साथ ही आश्चर्य-जनक वात है कि जो मनुष्य अपने सशरीर जीवनमें मनमाना काम करनेके लिए अपने-आपको बहुत कुछ स्वतन्त्र पाता है वही एक ऊपरी शरीर से छुटकारा पाने पर अपनी मूर्खतापूर्ण कल्पनाके द्वारा अपनेको इतना परतंत्र समझने लगता है—जैसे वह अव किसी दूसरे निर्दयी और भयंकर ईश्वरके राज्यमें आ गया हो !"

वकील साहवकी आँखोंमें एक चमक और होठोंमें एक स्निग्ध मुसकान दौड़ गई। दो क्षणके लिए वह चुप हो गये।

"मुझे इन बातोंसे बड़ी सान्त्वना मिल रही है। आगे, इसके बाद मेरे साढ़ू साहवका क्या हाल रहा ?" मैंने पूछा।

"ट्रेनके अधिकारियों और मुसाफिरोंकी भीड़ चारों तरफ़से घिर आई। लाश समेत मोटर हटाकर सड़कके किनारे लगा दी गई। लेकिन उनका ध्यान इनमेंसे किसी वात पर नहीं था, वह अपने विचारोंमें डूबे हुए और

अपनी लाशसे मानो गजभर लम्बी रस्सीसे बँधे हुए उसके पास ही खड़े थे। बड़ी कठिनाईसे मैं अपने-आपको उनकी दृष्टिमें ला सका। उन्होंने मुझे देखते और मेरे शब्दोंको सुनते हुए भी मेरे साथ वहाँसे हटनेका साहस न किया। उन्हें मुझ पर जरा भी विश्वास नहीं हो रहा था। अन्तमें मैंने वहाँसे अपनी शक्ल हटाकर और आपका रूप रखकर उनका ध्यान आकर्षित किया। अब वह एक दम मुझसे लिपट गये और मेरे साथ आनेमें उन्होंने एक बड़ी क़ैदसे छुटकारेका सा अनुभव किया। अब वह सन्तोषजनक रूपसे अपना काम कर रहे हैं और प्रसन्न हैं।"

"मेरा रूप धरकर!" मैं इस विचित्र मनुष्यके शब्दोंमें डूबने-सा लगा।

"आपका रूप धरकर" वह कह रहे थे, "आप कुछ चौंक उठे हैं, लेकिन यह एक मामूली-सी बात है। आप पर उनका विश्वास है इसलिए ऐसा करना एक समुचित ही उपाय था। हम लोगोंको अपने कामके लिए अपने सूक्ष्म शरीरोंमें जैसा चाहें वैसा रूप धरना भी सीखना पड़ता है।"

मुझे लगा कि मैं एक सिद्ध महात्माके सामने हूँ। लेकिन मेरा रूप धरकर! क्या इसका यह मतलब नहीं कि मेरे रूपका भी कोई विशेष महत्त्व है—मैं सोच रहा था।

"मनुष्य मरनेके बाद भी इतना चेतन और स्वतन्त्र रहता है यह बात मुझे बहुत स्वाभाविक और आशाजनक जान पड़ती है। आपकी इन बातोंमें मुझे नया प्रकाश मिल रहा है। मैं इस पर अविश्वास नहीं कर पाता" मैंने कहा।

"क्योंकि ये बातें आप पहली बार ही नहीं सुन रहे हैं। आप इन्हें अपने पूर्व जन्ममें भी सुन और समझ चुके हैं। जीवनके इन अधिक व्यापक क्षेत्रोंमें आपको भी आगे कुछ काम करना है।" उनकी मुसकान प्रखरतर हो उठी थी।

"मुझे भी काम करना है यह कितनी आश्चर्यजनक, महान् और सौभाग्यकी बात होगी। कब और कैसे और किस रूपमें मुझे ऐसे ऊँचे

कार्यों और उनकी जानकारीके मार्ग पर पड़ना होगा ?" मैंने उत्सुक होकर पूछा। मेरे हृदयके सारे दुःख-सन्तापका स्थान अब एक उमड़ती हुई जिज्ञासाने ले लिया था।

"आप क्या समझते हैं कि आप यों ही, अकारण ही उस रातसे मेरे मेहमान हुए हैं ? उस रातकी भेंटका कोई दूर तक गया हुआ गहरा कारण और उसका आगे दूर तक फैला हुआ कोई बड़ा अभिप्राय क्या आप नहीं देखते ?"

मैंने स्वीकार किया कि उनका मेरा सम्पर्क निस्सन्देह एक दूर-व्यापी कार्यकारणकी शृंखलासे सम्बद्ध हो सकता है।

"और अपने जिस अगले कार्य-क्षेत्रको आप अभी बहुत ऊँचा और अपने दूसरे साथियों और परिचितोंकी तुलनामें आपको बहुत ऊँचा उठाने वाला समझते हैं वह तो एक बहुत शुरूआती, निचले दर्जेका ही कार्य-क्षेत्र है। हो सकता है कि उसकी ठीक स्थितिको समझनेमें आप कुछ दूसरे नौसिखियोंकी तरह बहुत देर लगायें। लेकिन ऐसे कामोंसे ऊपर अगणित काम और भी हैं और उनके करनेवाले आदमी भी इस दुनियामें मौजूद हैं। यह भी आवश्यक नहीं कि आपके जिन दूसरे परिचितोंका इस तरहके ज़रा भीतरी कार्य-क्षेत्रोंमें प्रवेश नहीं हैं वे विकास या बड़प्पनमें आपसे कम ही हों। उनके विकासका स्तर, दिशामें आपसे भिन्न होते हुए भी, आपके बराबर या उससे ऊँचा हो सकता है।" उन्होंने मानो मुझे एक हानिकर ग़लतफ़हमीसे सावधान करनेके लिए कहा।

इस चेतावनीके बिना मैं सचमुच एक ग़लत दिशामें बहने जा रहा था।

घड़ीने उसी समय बारह बजाये। वकील साहबका भोजन बहुत पहले ही समाप्त हो चुका था—खाली थालके सामने बैठे वह अभी तक मुझसे बात कर रहे थे।

"आपको सोनेके लिए बहुत देर हो गई है। बातें फिर होती रहेंगी।

कोई खास बात आपको कहनी है ?" उन्होंने बिदाईका आदेश-सा देते हुए पूछा।

"एक बात पूछूँगा। जितनी इस तरहकी आकस्मिक मौतें होती हैं क्या उन सबकी आपको सूचना मिल जाती है ?" मैंने पहलेकी अटकी हुई एक शंकाका निवारण चाहा।

"यह तो मुमकिन नहीं है। मेरी जैसी हैसियतके वालंटियरको चौबीस घंटेमें एक या दो ऐसे मौकोंकी सूचना दी जा सकती है। इस दलमें काम करनेवाले भी तो सैकड़ों हैं। मेरे पास इस समय आपकी मौजूदगी की वजहसे ही आपके सम्बन्धीकी मौतकी सूचना और उनकी सेवाका काम मुझे दिया गया है, वर्ना यह किसी और को, जो किसी दूसरी तरह उनके करीब होता, दिया जाता।"

इस समाधानके बाद हम अपने-अपने शयन-कक्षोंमें जा पहुँचे।

दूसरे दिन मैंने अपने दौरे पर आगे प्रस्थान किया। वकील साहब अब मेरे मित्र हैं। उन्होंने इस घटनाको तो लेखबद्ध करनेकी मुझे अनुमति दे दी है, पर अपना नाम देनेकी अनुमति नहीं दी। मेरा उनका सम्पर्क चल रहा है और जिस तरहके भीतरी कार्यक्षेत्रके वह कार्यकर्ता हैं वैसे कार्यक्षेत्रमें मेरा भी प्रवेश यदि इस जन्म के भीतर ही हो जाय तो वह एक बहुत बड़ी लेकिन कोई आश्चर्यकी बात न होगी।

---

# कहानीकी खोजमें

"तुम मुझसे ब्याह करोगी सोना ?" पाँच वर्षका बालक हरिदास अपने पड़ोसकी साथ खेलनेवाली चतुर्वर्षीया बालिकासे पूछ रहा था,— "मेरी माँ कल कहती थी कि सोना बहुत सुन्दर लड़की है।"

"मेरी माँ भी कहती है कि मेरी सोना मुहल्ले भरकी लड़कियोंमें सबसे सुन्दर है। मैं तुमसे ब्याह करूँ तो तुम मुझे अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाओगे ?"

"जरूर सुनाऊँगा। मैंने अपनी मांसे बहुत अच्छी-अच्छी कहानियाँ याद कर रखी हैं।"

"तुम्हारी मांकी कहानियां तो मैंने सुनी हैं। मेरी मां भी बहुत अच्छी-अच्छी कहानियां कहती है। अपनी मांकी कहानियाँ भी मैंने सुनी हैं। तुम अपनी ही कोई अच्छी कहानी सुनाओगे ?"

"अपनी कहानी ?" बालक कुछ चिन्तामें पड़ गया, "अपनी कहानी मैं कोई नहीं जानता। दादाकी, ताईकी और छोटे नानाकी मैं थोड़ी-सी कहानियाँ सुना सकता हूँ।"

"तो फिर तुम अपनी एक भी कहानी नहीं सुना सकते ?" सोनाने कुछ निराश भावसे एक लम्बी साँस लेते हुए कहा।

"नहीं-नहीं, मैं तुम्हें अपनी भी कहानी ज़रूर सुनाऊँगा।" बालकने हठात् आत्मविश्वास बटोरकर कहा और बालिकाका हाथ छोड़कर चुपचाप सोचने लगा।

× × ×

"तुम मुझे अपनी कोई कहानी सुना सकते हो ?" हरिदासने दूसरी सुबह घरसे निकलकर बाहरके मैदानमें खेलते हुए अपने खेलके साथियोंसे

पूछा। वह जानना चाहता था कि उसके साथियोंमें से दूसरा भी कोई कोई अपनी कहानी सुना सकता है या नहीं।

लड़कोंने बताया कि वे सभी कहानियाँ बहुत-सी सुना सकते थे, लेकिन उनमेंसे कोई अपनी कहानी नहीं थी—वे सब दूसरोंसे सुनी हुई कहानियाँ ही थीं।

हरिदास आगे बढ़ गया। वह बस्तीके बाहर जा पहुँचा।

जंगलकी पगडण्डी पर उसे दो यात्री मिले।

"तुम किसके, किस गाँवके लड़के हो? जंगलमें क्या रास्ता भूल गये हो?" उन्होंने हरिदाससे पूछा।

"मैं इसी गाँवमें रहता हूँ", हरिदासने अपने गाँवकी दीखती हुई छतों-की ओर उंगली उठाकर कहा, "मैं रास्ता नहीं भूला हूँ। क्या मुझे तुम अपनी कोई कहानी सुना सकते हो?"

"हम तुम्हें बहुत-सी कहानियाँ सुना सकते हैं, लेकिन चलो पहले तुम्हें तुम्हारे गाँवमें पहुँचा दें। छोटे लड़कोंका इस तरह जंगलमें अकेले घूमना ठीक नहीं है।" उन्होंने कहा।

"मुझे अपने गाँवका रास्ता मालूम है। लेकिन क्या तुम मुझे ऐसी कहानी सुना सकते हो जो किसी दूसरेसे सुनी न हो—तुम्हारी खुद अपनी ही कहानी हो?"

उन राहगीरोंको दूसरोंसे सुनी हुई कहानियाँ ही मालूम थीं, उन्होंने स्पष्ट किया। हरिदास आगे बढ़ चला। उन आदमियोंको भी इस लड़के की अधिक चिन्ता करनेकी फुर्सत नहीं थी।

चलते-चलते हरिदासको कई दिन बीत गये। राहमें पड़नेवाले गाँवोंके मन्दिरोंमें जो भोजन और खेतों और वनोंमें जो अन्न या कन्द-मूल-फल उसे मिल जाते उन्हें ही वह खा लेता और रातकी नींद और दोपहरीका विश्राम जब उसकी थकानको उतार देता, तो वह चल देता।

एक दिन एक बड़े नगरके पास एक चौड़ी सड़क पर उसे नगरकी रानीकी सवारी मिली।

रानीकी नजर अपनी पालकीके झरोखेसे झांककर इस बालकपर पड़ी। इतने सुन्दर बालकको अकेला जाता देखकर रानीने उसे अपने पास बुलवा लिया। रानीकी कोई सन्तान नहीं थी। उसने सोचा कि इस बालकको गोद लिया जा सके तो कितना अच्छा हो! रानीके चलनेके प्रस्ताव पर हरिदासने उससे वही प्रश्न किया।

'क्या तुम मुझे अपनी कहानी सुनाओगी?"

और 'अपनी कहानी' की बानगीके खोजी हरिदासको पूर्ववत् निराश होकर और उससे भी अधिक उस मातृहृदया महिलाको हताश करके आगे बढ़ जाना पड़ा।

हरिदासकी यात्रा चलती रही और देश-देशके, रूप-रूपके, रंग-रंगके, आयु-आयुके—तरह-तरहके लोग उसे मिलते रहे लेकिन कोई भी उसे अपनी कहानी न सुना सका।

ग्यारह वर्ष बीत गये और अब हरिदास सोलह वर्षका सुन्दर नवयुवक था।

चलते-चलते एक सरोवरके किनारे छः सुन्दर तरुणियाँ उसे सरोवरके जलमें क्रीड़ा करती हुई दीख पड़ीं। उन्होंने भी उसे देखा और उसके रूपपर मुग्ध हो गईं।

"तुममेंसे कोई मुझे अपनी कहानी सुना सकती हो?" हरिदासने स्वागत-सत्कार पूर्वक उनकी आँखोंके निमन्त्रण पर उनके पास जाकर पूछा।

"अपनी कहानी? अपनी कहानी?" वे छहों कह उठीं और हताश भावसे एक दूसरेका मुँह देखने लगीं।

हरिदास आगे बढ़ गया; उनके मनकी मनमें ही रह गई।

आगे एक सुन्दर सजे उपवनमें उसे एक अत्यन्त रूपवती, बहुमूल्य वस्त्राभूषणोंसे शृंगार-सज्जिता रमणी मिली।

"हाँ-हाँ, परदेशी युवक, तुम मेरे पास ठहरो; मैं तुम्हें अभी अपनी और तुम्हारी जिसकी भी तुम चाहोगे उसीकी कहानी सुनाऊँगी——ऐसी कहानी जो आज तक किसीने किसीसे न कही हो।" हरिदासके प्रश्नोंके उत्तरमें इस चतुर रमणीने मोहक कटाक्षके साथ उसकी ओर देखते हुए कहा।

हरिदासने संतोषकी सांस ली। तरुणीके आदेशानुसार वह वहीं ठहर गया और शामके निश्चित समयपर जब वह उसके पास कहानी सुनने पहुँचा तो उस युवतीने कहना प्रारम्भ किया——

"एक था युवक अत्यन्त रूपवान, और एक थी युवती, परम सुन्दरी। युवक किसी वस्तुकी खोजमें देश-विदेश पार करता हुआ उस सुन्दरी युवतीके उपवनमें जा पहुँचा।"

"हूँ!" हरिदासने हुंकारी दी।

"युवतीकी दृष्टि जब उस युवक पर पड़ी तो वह उस पर रीझ गई।"

"ठीक ही तो है" हरिदासने समर्थन किया और एकदम उठ खड़ा हुआ। "यह कहानी तो मैं भी जानता हूँ और प्रत्यक्ष ही देख रहा हूं। यह कहानी तुम्हारी कहानी नहीं है क्योंकि मैं भी इसे जानता हूँ; और यह मेरी कहानी भी नहीं है क्योंकि तुम भी इसे जानती हो। 'युवती युवक पर रीझ गई' ऐसी कहानियाँ तो बहुतसे लोगोंकी कही-सुनी कहानियाँ हैं।"

युवती कुछ कहकर उसे रोके, इसके पहले ही वह चल दिया।

"तुम-जैसे एक हृष्ट-पुष्ट युवककी मुझे आवश्यकता है।" एक बड़े नगरमें पहुँचने पर वहाँके एक धनी व्यवसायीने हरिदासको सामनेसे निकलते देखकर कहा।

"मैं आपकी सेवा कर सकता हूँ, यदि आप मुझे कोई ऐसी कहानी सुना सकें जो आपने किसी औरसे न सुनी हो और जिसे कोई दूसरा न जानता हो।" हरिदासने कहा।

"एक नहीं, सैकड़ों। गाहकों और व्यापारियोंके साथ मेरी एक-एक चाल एक कहानी है।"

"तब आपकी कहानियाँ आपको अपने गाहकों और व्यापारियोंसे मिलती हैं और वे भी उन कहानियोंको पहले से ही जानते हैं।" हरिदासने कहा और आगे चल दिया।

आगे सुख वैभवसे पला, संसारके दुःखोंसे अनभिज्ञ एक राजकुमार और उसके बाद एक अत्यन्त दरिद्र, दुर्बल कष्टसे छटपटाता रोगी उसे मिले। इन दोनोंने कहा कि उनकी जैसी सार्थक और सबसे अधिक सबल कहानी दूसरा कोई नहीं कह सकता। लेकिन उनकी कहानियोंमें भी कोई वास्तविक नवीनता नहीं थी। दुःख-सुखकी उनसे भी गहरी कहानियाँ उसने सुन रक्खी थीं और वैसी कहानियोंको जाननेवाले बहुतेरे थे।

अगला व्यक्ति जो हरिदासको मिला, वह एक प्रसिद्ध कहानीकार था।

"अपने मस्तिष्कसे सैकड़ों-हज़ारों कहानियाँ रचकर मैंने संसारको सुनाई हैं। मैं निरन्तर कहानियोंकी रचना करता रहता हूँ। बैठो, मैं तुम्हें अभी एकदम नई कहानी सुनाता हूँ।"

"आपसे शायद मेरा काम निकल आयेगा" हरिदासने उसके पास बैठते हुए कहा, "लेकिन आपको नई-नई कहानियाँ कहाँसे सूझती हैं?"

"मैं लोगोंमें—सभी तरहके लोगोंमें—जाता हूँ, उनके जीवन और भावों-विचारोंका गहरी दृष्टिसे अध्ययन करता हूँ। प्रकृतिकी क्रीड़ाओंका मुग्ध आँखोंसे अवलोकन करता हूँ। मनोविज्ञान और मनुष्यके कोमल, कठोर हार्दिक द्वन्द्वों.."

"तब आप" हरिदासने बात काटकर कहा, "अपनी कहानियाँ तरह-तरहके लोगोंसे लेते हैं, वे स्वतन्त्र रूपसे आपकी ही नहीं होतीं। मुझे

एक ऐसी कहानी सुननेकी आवश्यकता थी जो सबके लिए एकदम नई हो।"

कहानीकार हरिदासको सिरसे पाँवतक पूरा देख भी न पाया था कि वह चल दिया।

आगे घने वनमें उसे एक वृद्ध तपस्वी मिला।

"नई कहानी ?" हरिदासके प्रश्नपर तपस्वीने कुछ चौंककर कहा, "नई कहानी तो बेटा दुनियामें रहते कोई कह ही नहीं सकता। यहाँकी सभी पिछली और अगली कहानियाँ पुरानी ही कहानियाँ हैं। लेकिन तुम्हें नई कहानीकी इतनी खोज है तो तुम अवश्य उसे प्राप्त करोगे। मेरा ध्यानयोग कहता है कि तुम उसके समीप आ गये हो।'

तपस्वीका आशीर्वाद पाकर हरिदास आगे बढ़ा ही था कि पर्वतकी एक गुफासे एक शेरनी उस पर झपटी और उसके पहले ही प्रहारमें असावधान हरिदासके प्राण शरीरसे मुक्त हो गये।

पलभरकी मूर्छाके बाद तुरन्त ही होशमें आकर हरिदासने देखा कि वह वैसा ही हृष्ट-पुष्ट अक्षत-शरीर उस गुफाके द्वारपर खड़ा है और वह शेरनी बड़े स्वादके साथ सामने पड़े हुए उसके घायल शवका आहार कर रही है।

हरिदासके हर्ष और आश्चर्यका कोई ठिकाना न रहा। उसका शरीर—अब वह अपने सूक्ष्म शरीरमें ही था—इतना हलका और फुर्तीला जान पड़ रहा था कि वह हर्षातिरेकसे नाच उठा। पर्वतकी एक शिला पर उसने एक मुक्का मारा और उसका हाथ बिना किसी रुकावटके, उसके भीतर धँस गया। हरिदासके आश्चर्यकी कोई सीमा न रही। मोटी-मोटी चट्टानोंके भीतर स-शरीर घुस कर वह भाग-दौड़ करने लगा। शेरनीके पेटपर उसने अपना सिर दे मारा और यह लो, वह उसके शरीरके आर-पार निकल गया। शेरनी अविचलित भावसे अपने भोजनमें निमग्न रही। धरती पर पांवकी ठोकर लगाकर हरिदासने ऊपर उछलनेका प्रयत्न किया और ऊँचे वृक्षोंकी चोटियों पर नाचता हुआ वह पर्वतके सबसे ऊँचे

शिखरके ऊपर मँडराने लगा । अब उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि वह मर कर अपने दुर्भेद्य सूक्ष्म शरीरमें आ गया है और जहाँ चाहे स्वतन्त्रगतिसे जा सकता है।

"क्या यह सब एक ऐसी नई कहानी नहीं है, जिसे मैं अपनी कहानी कह सकता हूँ ? इसे मेरे सिवा दूसरा कौन जानता है ? सोनाके लिए मेरे पास यह कहानी कितनी अच्छी है ! सोना—" हरिदास सोच ही रहा था कि बिजलीकी सवारी पर सवार-सा वह एक दम सोनाके घर उसके कमरेमें जा पहुँचा ।

दिनका वह तीसरा पहर था और सोलह वर्षकी सुन्दरी युवती सोना हाथमें एक पुस्तक लिए पढ़ रही थी ।

"मैं अपनी कहानी सुनाने आया हूँ—एकदम नई, बिलकुल अपनी—सोना !" हरिदासने सोनाका हाथ अपने हाथमें लेनेका प्रयत्न करते हुए कहा, "तुम जानोगी कि मरनेके बाद मनुष्य कितना अधिक स्वतन्त्र हो जाता है।"

हरिदासका हाथ सोनाके हाथमें धँस गया और उसकी मुट्ठी खाली ही बँध गई । उसके शब्दोंने भी सोनाका ध्यान आकृष्ट नहीं किया और उसकी उपस्थितिका भी उसे कोई पता नहीं लगा ।

हरिदास निराश हुआ, लेकिन परिस्थितिको समझनेमें उसे देर न लगी । उसका शरीर रूप रंगमें पहले जैसा होते हुए भी अब स्थूल नहीं था और उसके कंठ भागमें स्थूल-शरीरधारी लोगोंको सुन पड़नेवाला शब्द उत्पन्न करनेके अवयव भी नहीं थे ।

हरिदास अपना रूप सोनाको नहीं दिखा सकेगा, अपनी कहानी नहीं सुना सकेगा, इस चिन्ताने उसके हृदयको एक गहरी निराशासे भर दिया ।

हताश, चिन्तामग्न वह पास पड़े एक कोचके पास खड़ा रह गया ।

वह इतना विचार-मग्न हो गया कि समय बीतनेका उसे अनुमान ही नहीं हुआ।

"हरिदास !" अचानक हरिदासका ध्यान टूटा, सोना उसके सामने खड़ी पुकार रही थी।

हरिदासने देखा, रात काफ़ी हो गई थी और सोनाका शरीर उसके बिस्तरपर सोया हुआ था। उसका सूक्ष्म-शरीर—हर रातको मनुष्य अपने इसी सूक्ष्म शरीरमें सपनोंकी सैर करता है—उसके स्थूल शरीरसे बाहर निकल आया था और वह पूरे तौरपर हरिदासको देख-सुन सकता था।

बरसोंके बिछुड़े हुए प्रेमी एक-दूसरे का हाथ लिये हुए आकाश-मार्गसे न जाने किस देशके अत्यन्त सुन्दर उपवनमें आ पहुँचे।

हरिदासने सोनाको अपनी कहानी सुनाई। कहानी निस्सन्देह नई और दुनियाके आम कहानी कहने-सुननेवालोंके लिए अभी तक अज्ञात और अनोखी थी।

× × ×

बात अभी ताजा ही है, इसलिए सोना और हरिदास आजकल हर रात स्वप्नलोकमें मिलते हैं और हरिदास विस्तारपूर्वक नई-नई कहानियाँ उसे सुनाता है; लेकिन हर सुबह जागनेपर सोनाको उन सबकी याद भूल जाती है।

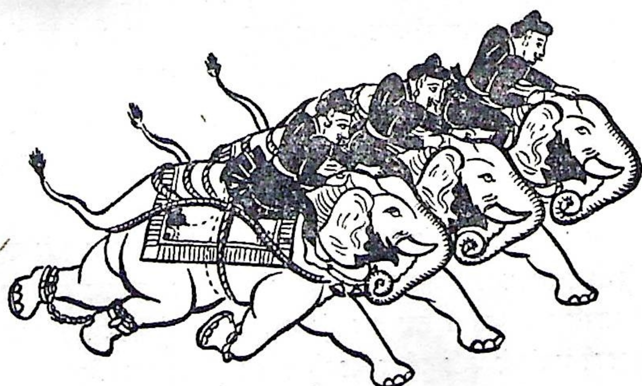
अब जागनेके छहों पहर सोनाको हरिदासकी याद आती रहती है और उसका जी न जाने कैसा, उसके लिए कसकता रहता है। हरिदासके साथ उसकी उस बचपनकी बातचीत, और उसके बाद ही हरिदासके चुपचाप घरसे निकल जानेकी घटना सोनाको उसके घरवालोंने आजसे कई वर्ष पहले याद दिला दी थी और अब कोई नहीं कह सकता कि सोना हरि-दासके लिए मनमें क्या लिये बैठी है।

किसी न किसी सुबह सोना हरिदासके स्वप्न-मिलन और स्वप्नमें कही कहानीकी याद लिये हुए अवश्य जागेगी और तब उसके उमड़े हुए

सुख और साथ ही बढ़े हुए दुःखमें किसका पल्ला भारी होगा, मैं नहीं कह सकता ।

लेकिन वैसे किसी सवेरेके आनेके पहले ही यह कहानी किसी पत्रमें छपकर सोनाके हाथोंमें जा पहुँचेगी और उसे उस सवेरेके तूफानी द्वन्द्वोंके लिए पहलेसे ही कुछ तैयार कर देगी।

दूसरे पाठक-पाठिकाएँ, आलोचक-आलोचिकाएँ, सम्पादक-सम्पादिकाएँ भले ही इस कहानीको बच्चोंकी, परियोंकी, अकल्पनीय कल्पनाओंकी जैसी कहानी समझें, लेकिन सोना इसे पढ़कर ऐसा नहीं समझेगी और अपनी परिचित बालिकाओंके समाजमें इस बातका भी ध्यान रखेगी कि आगे कभी कोई छोटी या बड़ी बालिका किसी प्रशंसित प्रियजनके सामने उसकी जैसी कठिन माँग रखनेका साहस न करे।



# साथी नम्बर तीन !

मैं अपनी मन-पसन्द जमुना किनारे वाली छतरीके नीचे बैठा एक पत्रके लिए कहानी पूरी करनेमें लगा था कि सीढ़ियों पर पैरोंकी आहटसे अचानक मेरा ध्यान खिंचा और मैंने देखा—कमीज, पायजामा और चप्पल पहने एक युवक छतरीके चबूतरे पर चढ़ आया था।

"माफ़ कीजियेगा, अगर मैंने आपका कुछ हर्ज किया हो।" उसने मेरे पास आकर कहा—"मैं महीपुर स्टेटका राजकुमार हूँ। महीपुर, आप जानते होंगे, आसाममें अस्सी लाखकी एक बड़ी स्टेट है।"

मैंने युवकको सरसे पांव तक देखा उसके कपड़े कुछ मैले हो रहे थे और चप्पलके एक फीतेमें दूसरे चमड़ेका एक पैवन्द लगा हुआ था।

"बैठिये-बैठिये, युवराजजी, आप कुशलपूर्वक तो हैं ? आपकी प्रजा तो आनन्दसे है ?" मैंने उसे अपने पास बैठनेका इशारा करके कहा।

आसामकी महीपुर स्टेटका मैंने कहीं नाम नहीं सुना था। मैंने सोचा कि वह किसी भले घरका ही लड़का है और कुछ पागल हो गया है।

"जी हाँ, सब ईश्वरकी कृपा है। मैं इधर कृष्णकी जन्म-भूमि देखने आया था" वह कहने लगा, लेकिन मैंने बीचमें ही बात काट कर कहा—

"आप तो इतमीनानसे बैठकर बात करेंगे न ? अगर आपको जल्दी न हो तो पन्द्रह मिनटकी मुझे इजाजत दे दीजिए, मैं अपना काम पूरा कर लूं तब आपसे बातें करूँ। तब तक लीजिए, आप ये मूँगफलियाँ खाइये।" मैंने अपने नाश्तेकी बची हुई कच्ची मूँगफलियाँ (मेरे डाक्टर मित्रने बताया है कि मूँगफलियाँ कच्ची ही फ़ायदेमन्द, बल्कि बहुत फ़ायदेमन्द होती हैं) उसके सामने सरका दीं।

मुझे उसके चुप हो जानेकी आशा नहीं थी, लेकिन उसने मेरी बात मान ली, और १५–२० मिनट बाद लेख पूरा करके मैंने उससे अपनी बात शुरू करनेको कहा।

"मैं कृष्णकी जन्मभूमि देखने मथुरा वृन्दावन अपने नौकरों-चाकरोंके साथ आया था। एक दिन मैं वृन्दावनकी कुंज-गलियोंमें घूम रहा था कि एक चीता एक बच्चेको मेरे सामनेसे उठा कर ले भागा। मैं उसे छुड़ानेके लिए उसके पीछे दौड़ा। जंगलोंमें उसके पीछे भागते-भागते मुझे तीन दिन और तीन रातें बीत गईं, तब जाकर मैं उसे छुड़ा पाया।" वह बोला।

"आपने एक राजकुमारके योग्य ही काम किया। उस चीतेको आपने मार दिया या जीता ही पकड़ लाये?" मैंने कहा।

"चीता भाग ही गया। मैं जब लौटकर वृन्दावन पहुँचा तब मेरे सब नौकर-चाकर मेरे राज्यको लौट गये थे। मैं अकेला ही, बे रुपये-पैसे, बे सरो-सामान पैदल लौट रहा हूँ। बहत्तर घंटे बाद मैंने ये इतनी मूँग-फलियाँ खाई हैं।"

"मथुरा-वृन्दावनवालोंमें भी अब धर्म नहीं रह गया।" मैंने कहा—"आपके इतने बड़े पुण्यके कामकी उन्होंने बिलकुल कदर न की और आपको पैदल भूखे-प्यासे वहाँसे चलना पड़ा।"

"अब मुझे यहाँसे शिलाँग तक रेलके किरायेकी ज़रूरत है। शिलाँग तक न हो सके तो कलकत्ते तक ही सही, वहाँ मेरे राज्यके कुछ व्यापारियोंकी कोठियाँ हैं।"

पागल नहीं, यह मिस्टर तो ठगविद्याके कोई नये विद्यार्थी मालूम पड़ते हैं—मैं सोचने लगा, इस विद्याके कच्चे विद्यार्थियोंका एक शुरूआती पाठ यह भी है कि बाबूजी, रेलमें चोरी हो गई, टिकट पैसे सब चले गये, रेल-का किराया दे दीजिए। लेकिन यह हज़रत हैं बहुत बेवक़ूफ़, इन्हें यह पता नहीं कि गप ऐसी हाँकनी चाहिए जो किसी हद तक सच मानी जा सके। हो सकता है, इनके दिमाग़में भी कुछ खलल हो।

'आप भूखे भी तो हैं' मैंने चलनेके लिए खड़े होकर प्रकटमें कहा, 'चलिए मेरे साथ पहले भोजन तो कीजिए, किराये-विराएकी फिर सोचेंगे।'

ठग, चोर, उचक्का—कोई भी सही भूखा तो यह है ही और यथासम्भव हर रोज एक भूखेको अपने साथ खाना खिलाना और खास कर उसको, जो मेरी साहित्य साधनाकी इस छतरीके नीचे आ पहुँचे—मेरा एक प्रिय नियम था।

मैं उसे घर ले गया, और हम दोनोंने भोजन किया। भोजनके समय मैंने उसे इधर-उधरकी बातोंमें अटकाये रखा। मैं नहीं चाहता था कि मेरी पत्नीको भोजन कर चुकनेके पहले ही यह मालूम पड़ जाय कि उसका आजका अतिथि कोई पागल या उठाईगीर है और इस प्रकार उसकी अतिथि-श्रद्धामें कोई कमी आये।

भोजनके बाद मैं उसे दूसरे कमरेमें ले गया। मैंने तय किया था कि अगर यह अपने उठाईगीरीके पेशेको छोड़कर कोई नौकरी करनेके लिए तैयार हो सकेगा, तो इसकी कुछ मदद कर दूंगा—इस तरह शायद इसका जीवन कुछ ठिकानेकी राह पर आ जायगा।

कमरेमें पहुँचकर मेरे कुछ कहनेके पहले ही उसने मेरे कन्धे पर हाथ रखकर मुझे नामसे सम्बोधित करते हुए कहा—

"आपने मुझे पहले पागल समझा, फिर ठग और बेवकूफ, अब आप मुझे और भी कुछ समझ सकते हैं?"

युवकके इस वाक्यने मेरे मस्तिष्कको सरसे पांवतक झकझोर दिया, लेकिन मैं जल्द ही सम्हल गया। 'हाँ, अब मैं आपको एक सुशिक्षित, बहुत चतुर, शरारत-पसन्द भला मानस और अपने किसी मित्रका मित्र और सम्भवतः एक ऊँचा साहित्यकार समझ सकता हूँ।" मैंने उसका हाथ पकड़कर उत्तर दिया।

"आपका यह अनुमान आपके योग्य ही है।" उसने कहा, "आपके पिछले अनुमानोंसे भी मैं करीब-करीब सन्तुष्ट हूँ। एक शिक्षित व्यक्ति मेरी

उन बातों पर इससे अधिक अनुमान, आम तौर पर नहीं लगा सकता था। लेकिन आप जैसे खुले दिल और दिमाग़ वाले साहित्यिक कलाकारसे मैं थोड़ी और अधिक आशा करना चाहता था। जिस समय आपने मुझे पागल समझा उस समय पागल या ठग समझते, जिस समय ठग और बेवकूफ समझा उस समय ठग बेवकूफके साथ जो अब समझ रहे हैं वह भी समझते; और इस समय जो कुछ समझ रहे हैं उसके आगे भी कुछ क़दम और बढ़ाते तो मुझे आपसे पूरा सन्तोष हो जाता।"

"इसके आगे—इसके आगे मैं आपको कोई भूत, प्रेत और समझ सकता हूँ—अगर आपको एक भला आदमी समझे जानेमें सन्तोष नहीं है।" मैंने कहा।

एक ठहाकेकी हँसीसे कमरा गूँज उठा।

"आपको जितना सहृदय और मिलनसार मैंने सुना था उतना ही पा रहा हूँ। मनुष्य जातिकी वर्त्तमान सहृदयतामें भूखे ठगों, उठाईगीरोंको खाना खिलानेकी गुंजाइश अभी आम तौर पर नहीं आई है। फिर भी मैं आपको अपना परिचय देनेमें अभी डरता हूँ। जब आप क्षण भरके लिए भी मुझे एक रियासतका राजकुमार तक नहीं समझ सके, तो जो कुछ मैं हूँ उस पर आप एकदम कैसे विश्वास कर लेंगे?" उसने अपनी हँसी पूरी करनेके बाद कहा।

"तब न सही, अब मैं आपको रियासतका राजकुमार मान सकता हूँ। आदमीको समझनेमें थोड़ी-बहुत देर लगती ही है। आप कहिए तो सही, आप कौन-सी बला हैं।"

मैं उसे जाननेके लिए उत्सुक था।

"अब आप मुझपर ठग-उठाईगीरका सन्देह तो नहीं कर सकते?"

"एक फीसदी गुंजाइश तो मैं इसके लिए भी रखूँगा ही।"

वह फिर हँस पड़ा।

"आपकी सावधानी और बुद्धिमत्ताका अब मैं कायल हूँ" उसने कहा—"गोपाको आप जानते थे ?"

"गोपा ?—मैं चौंककर बोल उठा, "हाँ, गोपाको मैं जानता था। आप......?

गोपा पड़ौसके गाँवमें रहने वाला एक अहीरका लड़का था। वह ढोर चराता था। करीब तीन महीने पहले चौदह बरसकी उम्रमें साँपके काटनेसे उसकी मौतके दो दिन पहले ही उसका मेरा परिचय हुआ था। उसीने मुझे जमना किनारेका यह स्थान दिखाया था और यहीं रहकर लिखने-पढ़नेकी मुझे सलाह दी थी। वह अपने पिछले जन्मसे ही हिमालय-के एक महात्माका शिष्य था। वह एक ऊँचा संस्कारी जीव था और उसे अपने पिछले जन्मका और मौजूदा जन्मकी मौतका पहलेसे ही हाल मालूम था। उसने बताया था कि अपने पिछले जन्ममें वह मेरा सगा भाई था और उसने और मैंने एक ही साधनाशील गुरुकी सेवामें रहकर विद्याध्ययन किया था और बादमें वह उसी जन्ममें हिमालयके उन महात्माका शिष्य बन गया था।

"मुझे भी आप उसीके भाई-बन्दोंमें समझिये" मेरे प्रस्तुत मित्रने कहा, "मैं यहाँसे चार मील दूर रेणुका आश्रमके पास रहता हूँ। मैं बहुत दिनोंसे आपको देख रहा हूँ। आज आपने जो कहानी पूरी की है, उसीकी एक बातसे खिचकर मैं आपके सामने हाजिर हुआ हूँ।

"आपने मेरी यह कहानी पढ़ ली है ! और मेरे सामने आनेके पहले ही !" मैंने मन ही मन गोपाको इस भरे-पूरे क्षेत्रके परिचयके लिए धन्यवाद देनेके बाद कुछ हैरानीके स्वरमें कहा।

मेरा नया मित्र हँस पड़ा। "आप किताबें तो पढ़ते हैं, लेकिन मौक़ा पड़नेपर उनसे सीखी बातोंको भूल भी जाते हैं। क्या मैं चार मीलकी दूरीसे आपके दिमाग़से निकलते हुए विचारोंको पढ़कर आपकी लिखी जाती

हुई कहानीको नहीं पढ़ सकता हूँ ? आपने तो मनोनियम पर बड़े-बड़े वैज्ञानिकोंकी किताबें पढ़ी हैं।"

मैंने अनुभव किया, मुझे इतनी छोटी-सी बात न पूछनी चाहिए थी। मैंने अपनी भूल उसके सामने स्वीकार कर ली।

आपकी आजकी कहानी प्रेम-कहानियोंके प्रेमियोंके दृष्टिकोणसे बहुत मार्मिक और ऊँची बन पड़ी है। लेकिन उसमें लोकेश्वरके साथ गोदावरीका विवाह कराकर और बादमें दिनेशको इस दुनियासे विदा करके गोदावरी और लोकेश्वरको लोकसेवाके कामोंमें लगा कर आपने कहानीको ख़त्म कर दिया है। यह कहानीका कोई ऊँचा प्रभावशाली और सच्चा अन्त नहीं है। यहाँ पर असलियत आपकी निगाहसे छिप गई है।

"असलियत छिप गई है!" मैंने कहा, "आपका मतलब यही है न कि उस कहानीके घटना-विकासमें कला, कल्पना या मनोविज्ञानके दृष्टिकोण-से कोई कमी रह गई है ?"

'जी नहीं, कला और मनोविज्ञानसे मेरा कोई मतलब नहीं, मैं तो यह बता रहा हूँ कि दिनेश, गोदावरी और लोकेश्वरकी और सब बातें तो आपने सच लिखी हैं, लेकिन गोदावरीको अन्तमें, उदासी भरा दिल लिये हुए आपने जो लोक-सेवाके कामोंमें लगा दिया है और दिनेशका उसके पास कोई स्थान नहीं रहने दिया, वह ग़लत है। वह लोकसेवामें नहीं लगी, बल्कि उसका सबसे बड़ा और सबसे अधिक आकर्षक कार्य-क्षेत्र इस समय गोदावरी और दिनेशका सम्पर्क, उनका खुला हुआ प्रेम-व्यापार है।'

'दिनेश, गोदावरी और लोकेश्वर मेरी कल्पनाएँ हैं। आप मेरी कल्पनामें कोई सुधार या विस्तारकी बात कहना चाहते हैं ?' मैंने कुछ खीझ कर कहा।

मेरी कहानी यह थी कि गोदावरी दिनेश पर मुग्ध होती है और फिर दोनोंके दिलोंमें एक दूसरेके लिए गहरा प्रेम हो जाता है। आगे चलकर दिनेशका मित्र लोकेश्वर गोदावरीको देखता है और उस पर मुग्ध हो जाता

है। दिनेश अपने मित्रके लिए गहरा त्याग करता है और अपनी जीवन-धाराका रुख बदल कर गोदावरीको लोकेश्वरसे विवाह करनेके लिए बाध्य करता है। दिनेशकी प्रसन्नता और उसकी 'आध्यात्मिक साधना' की सफलताके लिए गोदावरी, लोकेश्वरसे विवाह कर लेती है। अपने प्रियतमके प्रेम-सम्पर्कसे वंचिता गोदावरी अपना मन बहलानेके लिए लोक-सेवाके कामोंमें लग जाती है।

"कल्पना" मेरा मित्र हँसता हुआ कह रहा था, "कल्पना आप और कहाँसे लेकर आयेंगे, भाई साहब? आदमीकी कल्पना इधर-उधरकी घटनाओंकी काट-छाँट और जोड़-तोड़का ही नतीजा हुआ करती है। गोदावरी, दिनेश और लोकेश्वर इस दुनियाकी, आपके पड़ोसके लखनऊ जिलेकी ही सच्ची और ताज़ी असलियतें हैं, उनके नाम भी क़रीब-क़रीब ये ही हैं और कहानीमें जितनी भी घटनाएँ आपने लिखी हैं, अन्तिमको छोड़, बाक़ी सब ठीक हैं। आखिरी बात आप नहीं लिख पाये। वह यह है कि गोदावरीका मुख्य और सबसे अधिक मादक व्यापार इन दिनों उसके प्रेमी दिनेशके व्यक्तित्वमें ही समाया हुआ है। गोदावरी और दिनेशके पारस्परिक चुम्बनोंकी संख्या गोदावरी और लोकेश्वरके चुम्बनोंसे कहीं अधिक हो चुकी है।"

मेरा मित्र खड़ा होकर मुझे घूरता हुआ मेरी हैरानी पर हँस रहा था। हैरानी भी नहीं, वह मेरी एक सुखद जिज्ञासा ही थी, जिसे अपनी बुद्धिसे ही समझ लेनेको मैं बल लगा रहा था। मैं जानता था कि मेरा अभ्यागत मित्र ठीक और मतलबकी ही बात कह रहा था और उसकी बातमें मेरे लिए कोई अच्छा सन्देश भी था।

"महाशयजी" मैंने अपनी झेंप मिटाते हुए उससे कहा, "अच्छा परीक्षक बननेके पहले आदमीको शऊरदार शिक्षक बनना चाहिए। आप पहेलियाँ मत बुझाइये, साफ़ तौर पर अपनी बात पूरी कीजिए।"

"आपकी इस कहानीका पूरा प्लाट मैंने ही अपने एक मित्रके जीवनकी

सच्ची घटनासे लेकर आपके मस्तिष्कमें भेजा है। दिनेश मेरा मित्र है—वह हमारे भाई-बन्दोंमें ही है। दिनेशके ही नाते गोदावरी और लोकेश्वर मेरे परिचितोंके क्षेत्रमें आये हैं। गोदावरीके विवाह तककी घटनाएँ मैंने आपके मस्तिष्कमें कल्पनाके रूपमें भेजी थीं और आखिरी ठिकाना टटोलनेके लिए मैंने आपको स्वतन्त्र छोड़ दिया था। बस, वहीं आप गड़बड़ कर बैठे, बेचारी गोदावरीको लोक-सेवामें ठूंस बैठे। इससे अच्छी, दूर-व्यापी कल्पना करनेमें आप डरते हैं, सभी कहानी लेखक डरते हैं और इसी लिए इससे आगेकी कल्पनामें उनके पाठक भी घबराते हैं। दिनेश और गोदावरीका गहरा प्रेम क्या आपकी रायमें उनके हाथोंके बढ़े हुए नाखूनोंकी तरह कट कर मिट्टीमें मिल जाना चाहिए और एककी मौतके बाद उसका सारा खेल खत्म हो जाना चाहिए? प्रेम तो ऐसा मिट्टीका खिलौना नहीं है। आपने 'लाइव्ज ऑफ एल्कियोनी' (Lives of Alcyone)* में सौके लगभग व्यक्तियोंके जन्मजन्मान्तरके सम्बन्धोंका हाल पढ़ा है, क्या उसे आप अपनी साहित्यिक लोकसेवाके लिए अपनी कल्पनाके भी काममें नहीं ला सकते? कर्मके देवता गोदावरी और दिनेशके प्रेम-बन्धन-को अपने नियमके भीतर यह अवकाश दे सके हैं कि आज वही दिनेश—उसका नाम अब दिनकर है—गोदावरीकी गोदमें खेलता हुआ दो बरस का एक खूब सूरत बच्चा है। गोदावरी और दिनेश अपने पिछले जन्ममें गहरा स्नेह करनेवाले सगे भाई थे। इस कहानीको आप मेहरबानी करके ठीक कर लीजिए।" उसने कहा।

'लेकिन मैं गोदावरी और दिनेशसे प्रत्यक्षमें मिल भी तो सकता हूँ?' मैंने कहा।

"निश्चय! कमसे कम इतना तो मुझे करना ही था। मैंने अपने

*Lives of Alcyone नामक बृहद् ग्रन्थ, जिसमें एल्कियोनीके क़रीब पचास पिछले जन्मों का हाल दिया हुआ है और जो T.P.H. Adyar, Madras द्वारा प्रकाशित हुआ है।

वायरलेससे उन्हें यहाँ आनेका निमन्त्रण भेज दिया है। एक सप्ताह वाद वे सुविधा पाकर यहाँ आ जायंगे और आपसे परिचित होकर आपके मित्र बनेंगे।" उसने मेरा समाधान किया।

"एक ही हफ़्तेकी बात है तो मैं इस कहानीको तभी ठीक कर लूँगा।" मैंने कहा।

"लेकिन उस पत्रमें तो आज-कलमें ही आपको कहानी भेजनी है ?" उसने कहा।

"उसके लिए दूसरी कहानी लिखकर भेज दूँगा—महीपुरके फटेहाल राजकुमारकी कहानी।"

वह हँस पड़ा। "आपमें जान अच्छी है। आपकी गोपा वाली कहानी भी मुझे वहुत अच्छी लगी। दरअसल कहानी लिखने वाले ज़िन्दादिल दोस्तोंकी दोस्ती हम लोग हमेशा ढूँढ़ते रहते हैं और जिनके दिमाग़के दर-वाजे ज़रा भी खुले पाते हैं उनमें घुस जाते हैं। आनेवाले ज़मानेकी दिमाग़ी तैयारियोंके लिए हमारे कप्तानोंका जिन लोगोंकी सेवाओंकी सख्त ज़रूरत है उनमें ऐसे कहानी-लेखकोंका भी एक खास स्थान है। मैं समझता हूँ कि आप मेरे ऐसे ही एक साथी वन सकते हैं।"

वह चलनेके लिए उठ खड़ा हुआ। मैंने भी वहीं खड़े-खड़े विदाई के हाथ जोड़ दिये—क्योंकि ऐसे दोस्तोंके वारेमें यह बिल्कुल निश्चित नहीं होता कि उन्हें पहुँचानेके लिए कितने क़दमकी दूरी तक उनके साथ जाया जा सकता है और कितने क़दम चलकर वे गायब हो सकते हैं।

यह मिस्टर महीप—जब तक यह हज़रत मुझे दोवारा न मिलें और मैं इनका नाम न पूछूँ तव तक मैं इन्हें महीपके नामसे ही पुकारूंगा—मेरे ऐसे तीसरे दोस्त हैं—पहले मिस्टर वेंकट, दूसरे महाशय गोपा और तीसरे यह हज़रत महीप।

महीपके चले जानेके वाद मैं सोचने लगा कि गोदावरी और दिनेशका प्यार अब भी चल रहा है और वे सव एक सप्ताहके वाद मुझसे मिलेंगे।

# निकट समस्या

एक राजाके पाँच लड़के थे। ये पाँचों उसकी काफ़ी बड़ी उम्रमें पैदा हुए थे।

एक दिन राजाने अपने पाँचों बेटोंको बुलाया और कहा—

"मेरे बुढ़ापेके दिन भी पूरे हो आये हैं और अब किसी भी दिन मुझे इस संसारसे बिदा होना पड़ सकता है। हमारे वंशके नियमके अनुसार तो तुममेंसे सबसे बड़े कुमारको राजगद्दी मिलनी चाहिए लेकिन मैं इस नियममें कुछ सुधार करना चाहता हूँ। तुममेंसे जो राजकुमार आजसे लेकर अगले पच्चीस वर्षके भीतरकी प्रजाकी सबसे बड़ी और समीपवर्ती समस्याको खोजकर प्रजाकी तत्सम्बन्धी सेवा करेगा उसे ही मैं राजगद्दी पर बिठाना चाहूँगा। तुम सभी बताओ प्रजाकी सबसे बड़ी और समीपवर्ती समस्या क्या हो सकती है।"

बड़े राजकुमारने कहा, "हमारे देशमें अन्नकी अभी कमी है। मैं अन्नकी उपज इतनी बढ़ाऊँगा कि हर आदमीको भर पेट अच्छेसे अच्छा अन्न मिलने लगे।"

दूसरे राजकुमारने कहा, "राज्यमें बीमारियोंका दौरा अक्सर हो जाता है और लोगोंको जितना स्वस्थ और बलिष्ठ होना चाहिए उतने नहीं हैं। मैं स्वास्थ्य और शारीरिक शक्तिके साधनोंका प्रचार बढ़ाऊँगा।"

तीसरेने कहा, "हमारा राज्य दूसरे समृद्ध राज्योंके मुकाबले व्यापार-उद्योगमें बहुत पिछड़ा हुआ है। मैं व्यापार और उद्योगकी उन्नति करूँगा।"

चौथेने कहा, "मैं शत्रु राजाओंके आक्रमणोंसे राज्यको सुरक्षित करने-

के लिए राज्यका विस्तार करूँगा। आस-पासके राजाओंको जीतकर अपना चक्रवर्ती राज्य स्थापित करूँगा। तभी प्रजाको सुखी करनेके साधन जुट सकेंगे।"

पाँचवेंने कहा—"मैं कला, विज्ञान और शिक्षाका प्रचार करूँगा। जब तक हमारी शिक्षा और संस्कृतिकी जड़ें मजबूत न होंगी तब तक न राज्य-प्रबन्ध सुगमतापूर्वक चल सकेगा और न प्रजा ही जीवनके सुखोंको समझ सकेगी।"

राजाने कहा, "तुम लोगोंके विचार बहुत ठीक हैं। ये पाँचों ऐसी बातें हैं जिनमेंसे एक बिना भी राजा और प्रजाका काम नहीं चल सकता। तुम लोग जाकर अपनी-अपनी पसन्दके काम करो। अगले पच्चीस वर्षके लिए सबसे अधिक व्यापक समस्याको खोजकर जो प्रजाकी सबसे बड़ी सेवा करेगा, वही गद्दीका मालिक बनेगा।"

बड़े राजकुमारको छोड़ शेष चारों राजाकी इस बातसे मन ही मन बहुत प्रसन्न हुए। उनमेंसे हरेक समझता था कि उसका बताया हुआ काम ही प्रजाकी वर्तमान समयकी सबसे बड़ी समस्याका हल है।

इसके बाद राजाने राजगुरुको बुलवाया और उनसे निवेदन किया—

"गुरुदेव! मुझे अपने इन पाँचों बेटोंसे कोई बड़ी आशा नहीं है। मेरी मृत्युके बाद राजकाज आप ही सम्हालें और पच्चीस वर्ष बाद जिस कुमारको सबसे अधिक योग्य देखें उसे ही राजगद्दी दे दें—अभी तो ये सब बच्चे ही हैं।"

राजगुरु मुसकराये! उन्होंने कहा "राजर्षि, मैं आपकी इच्छाको समझता हूँ। आप जैसे अवतारी राजाओंसे ही संसारका शासन चल रहा है। आपकी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी।"

उसके अगले वर्ष ही राजाकी मृत्यु हो गई। राजगुरुकी आज्ञानुसार मन्त्रिगण राजकाज चलाने लगे। पाँचों राजकुमार अपने-अपने कार्यमें

सफलता पानेके लिए जी जानसे जुट गय । उनके प्रयत्नोंसे राज्यकी दशा तेजीसे सुधरने लगी । राज्यका विस्तार भी पहलेसे अधिक हो गया ।

पच्चीस वर्ष पूरे होने पर राजगुरुने पाँचों राजकुमारोंको राजदरबारमें एकत्र किया ।

"प्रजाकी सबसे बड़ी समस्या, जिसने पिछले पच्चीस वर्षोंमें प्रजाको सबसे अधिक प्रभावित किया हो क्या है ?" राजगुरुने उनसे पूछा ।

पाँचों राजकुमारोंने अपने-अपने कामको ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण समझते हुए, उसीके अनुसार उत्तर दिये ।

उन पाँचोंके उत्तरोंसे सन्तुष्ट न होकर राजगुरुने राजाके दासी-पुत्र को भी दरबारमें बुला भेजा । दिवंगत राजाका, एक दासीके पेटसे उत्पन्न यह एक पुत्र और था । वह आयुमें इन पाँचोंसे बड़ा था । प्रजा और राजपरिवारके विचारानुसार वह गद्दीका अधिकारी नहीं हो सकता था, इसीलिए राजाने दूसरा विवाह करके, दूसरी रानीके गर्भसे, ढलती आयुमें, ये पाँच पुत्र पाये थे । पहली रानीसे उनकी कोई सन्तान नहीं थी । इस दासी-पुत्र में राजकुमारके योग्य कोई गुण नहीं दीखते थे । उसने समुद्रके किनारे एक कुटिया बना ली थी और अक्सर वहीं बैठकर बाँसुरी बजाया करता था; और बस्तियोंमें जाकर प्रजा-जनोंको इकट्ठाकर उन्हें तरह-तरहकी कथाएँ सुनाया करता था । लोग उसे स्नेह और आदरकी दृष्टिसे देखने लगे थे, फिर भी राजकुलका वैभव और तेज़ उसमें बिलकुल नहीं था ।

उस दासी-पुत्रके दरबारमें आने पर राजगुरुने उससे भी वही प्रश्न पूछा ।

"मृत्यु । प्रजाकी सबसे बड़ी समस्या, जिसने पिछले पच्चीस वर्षोंमें प्रजाको सबसे अधिक प्रभावित किया है, वह मृत्यु है ।" उसने उत्तर दिया ।

राजगुरुकी आज्ञानुसार अनुसन्धानका एक नया विभाग खोला गया । भूख, रोग, निर्धनता, युद्ध, अशिक्षा और मृत्यु—इन छः समस्याओंमेंसे कौन-सी समस्या ऐसी है जिसने राज्यकी साढ़े चार करोड़ प्रजा अथवा

उसके पौन करोड़ परिवारोंमें से सबसे अधिकको प्रभावित किया हो। इसी खोजके आँकड़े एकत्र करनेके लिए यह विभाग खोला गया। अनुसन्धान विभागने पता लगाया कि मृत्यु ही पिछली पच्चीस वर्षोंकी, इन छहों समस्याओंमें प्रजाकी सबसे बड़ी समस्या रही है। पिछले पच्चीस वर्षोंमें एक करोड़ प्रजाजन—एक चौथाई जन-संख्याका तो इसने व्यक्तिगत अपहरण किया है। बड़े से बड़े युद्धमें—अब तकके सभी युद्धोंमें मिलाकर भी—इतने व्यक्ति नहीं मारे गये। देशके पौन करोड़ परिवारोंमेंसे एक भी ऐसा नहीं जिस पर इसने आक्रमण करके,किसी न किसी परिजनको उठाकर, सारे परिवारको दुखी न किया हो। एक भी दिन ऐसा नहीं बीता जिस दिन इसने अपने कामसे प्रजाको छुट्टी मनाने दी हो। दूसरी समस्याएँ आती-जाती और रोक थामके भीतर रही हैं और उनकी पहुँचाई हुई हानि चिरस्थाई नहीं रही है; लेकिन मृत्युने प्रजाकी जो क्षति की वह कभी भी पूरी नहीं हो सकी। इसलिए मृत्यु ही प्रजाकी सबसे बड़ी समस्या है।

दासी-पुत्रने पिछले तीस वर्षोंमें सारी प्रजामें घूम-घूम कर लोगोंको जीवन और मृत्युके बहुतसे भेद बताये थे। शास्त्रों और पुराणोंकी कथाएँ और तरह-तरहके दृष्टान्त सुनाकर उसने लोगोंके मनमें यह बसा दिया था कि मनुष्य अमर है, वह बार-बार शरीर धारण करता है, मरनेका दुःख नहीं करना चाहिए, मरनेसे डरना नहीं चाहिए और ऐसे ओछेपनके काम नहीं करना चाहिए, जिनसे इस जीवनमें तो कुछ लाभ हो जाय, लेकिन बादमें दुःख उठाना पड़े। उसके उपदेशोंसे लोग समझने लगे थे कि जीवन शरीरकी मृत्युके बाद भी जारी रहता है और केवल इस जन्ममें ही सुख उठानेकी धुनमें आगेकी बातको भूले रहना मूर्खता है, जब कि मृत्युके बादकी अवस्थाकी भी जानकारी मनुष्यको जीते-जी थोड़ी-बहुत हो सकती है।

राजगुरुने इस दासी-पुत्रको ही राजतिलक दे दिया। प्रजा उससे

प्रेम करने लगी थी, इसलिए उसने भी अब इस अन-हुई प्रथाका विरोध नहीं किया। आखिर तो वही सबसे बड़ा राजकुमार भी था।

गद्दी पर बैठते ही उसने अपनी सैन्य-शक्ति बढ़ानी शुरू की। पड़ोसके कुछ राजे मिलकर उस राज्य पर आक्रमण करनेकी तैयारी बहुत दिनोंसे कर रहे थे। नये राजाके आदेश पर प्रजाजन बड़ी संख्यामें सेनामें भर्ती होनेके लिए जुड़ आये; सैन्य-दलोंमें भी मृत्यु, परलोक और जन्मजन्मान्तरके जीवनके सम्बन्धमें बहुत-सी बातें बताई जाती थीं और लोगोंके दिलोंसे मृत्युका डर बहुत कम हो गया था।

राजाको गद्दी पर बैठे दो वर्ष भी पूरे न हुए थे कि आस-पासके राजाओं-ने राज्य पर आक्रमण कर दिया। इस राज्यकी तैयारियाँ इसके लिए यथेष्ट हो चुकी थीं। घनघोर युद्ध हुआ, लाखों व्यक्ति उसमें काम आये लेकिन अन्तमें शत्रुओंकी ही हार हुई और इस राज्यकी सीमा बहुत अधिक बढ़ गई।

सबसे बड़े राजकुमारकी खोजी हुई 'निकट-समस्या' प्रजाके बच्चे-बच्चेकी दृष्टिमें निकट-समस्या सिद्ध हो गई थी।



# फ़्रीमैसन

घटना ६ हजार वर्ष पहलेकी है।

शासन और सभ्यताके दृष्टिकोणसे मिस्र देशकी गणना उन दिनों संसारके समृद्ध देशोंमें होती थी। भूमध्यसागरके असीरा नामक छोटे-से द्वीपका शासन कुछ ही पहले मिस्रकी अधीनतामें आया था। असीराका शासक बड़ा अत्याचारी और पाशविक था; उसकी प्रजा आये दिन उसके विरुद्ध विद्रोह करती रहती थी। ऐसे ही एक जन-विद्रोहके फलस्वरूप असीरा पर मिस्रके शासकको आक्रमण करना पड़ा था और उसीमें अत्याचारी राजाकी मृत्यु हो गई थी। मिस्रके शासनकी छत्र-छायामें असीराकी शान्ति और समृद्धिका आभास दीखने लगा था। इस कथाके लिए इतनी ही पृष्ठ-भूमिका यथेष्ट है।

× × ×

भव्य पिरैमिडोंके देश मिस्रमें—यह देश इस कथाके अनुसार उस समय भी पिरैमिडोंका देश था, यद्यपि आजके अधिकांश इतिहासकार मिस्रके पिरैमिड-भवनोंकी इतनी लम्बी आयु माननेके लिए तैयार नहीं हैं—नील नदीके किनारे बसा हुआ विशाल नगर पिरोसा था।

पिरोसा नगरके उस कोनेमें, जहाँ अपेक्षाकृत निर्धन और निम्नश्रेणीके लोग रहते थे, एक शाम एक नवयुवकने एक घरके द्वार पर थपकी दी।

घरके मालिक, एक अधेड़ आयुके पुरुषने द्वार खोला। उसने देखा, बाहर चिथड़े लपेटे एक थका-माँदा, लेकिन सुन्दर नवयुवक खड़ा है।

"रातका भोजन और विश्राम चाहता हूँ। हो सके तो जीवन-निर्वाहके लिए कोई मजदूरी भी। आप दे सकेंगे ?" नवयुवकने याचना की।

"अवश्य मिलेगा। लेकिन तुम्हारा नाम, निवासस्थान परिचय ?"

"यह न पूछिए। जानने पर शायद आप मुझे एक रातका भोजन और विश्राम भी अपने घरमें न दे सकेंगे। इन्हीं प्रश्नोंका उत्तर न देनेसे मुझे किसीने स्थान नहीं दिया। क्या विना ये बातें जाने आप भी मुझे एक रातका आश्रय नहीं दे सकेंगे?"

"दे सकूँगा" भद्र पुरुषने क्षणभर सोचनेके बाद कहा, "तुम चोर तो नहीं हो?"

"नहीं"

"बन्दीगृहसे छूटकर भागे हुए अपराधी तो नहीं हो?"

"नहीं"

"किसीके खरीदे हुए दास तो नहीं हो?"

"नहीं"

"तब आओ। तुम मेरे सम्मानित अतिथि होगे। देखनेमें भी तुम मुझे सुन्दर, सुसंस्कृत और आकर्षक जान पड़ते हो।"

नवयुवक निशोरस अपने आश्रयदाता साइलसके परिवारका एक प्रिय सदस्य बन गया। निशोरस असीराके अत्याचारी राजा नाइशोरसका पुत्र था। नाइशोरसके सपरिवार निधनके पश्चात् अपनी प्रजाके घातक निशानोंसे बच कर वह किसी प्रकार मिस्र देशमें भाग आया था।

साइलसने जब राजकुमार निशोरसका यह परिचय जाना तो उसे बड़ी प्रसन्नता हुई और अपने आश्रयदानको उसने राज और समाजके नियमोंके सर्वथा अनुकूल और नैतिकतापूर्ण बताकर निशोरसको अभय कर दिया।

"इस परिचयमें तो कोई ऐसी बात नहीं है जिसके कारण मिस्र देशका कोई भी सदस्य तुम्हें आश्रय देनेमें हिचक करता। असीराकी प्रजा या राज-परिवारके किसी भी व्यक्तिसे मिस्र-निवासीकी कोई शत्रुता नहीं है, बल्कि अब तो दोनों देशोंके बीच सहयोग और भ्रातृभावका बन्धन और भी दृढ़ हो गया है। अपने पिताके अत्याचारोंके लिए तुम तनिक भी उत्तर-

दायी नहीं हो। असीराके एक श्रेष्ठ नागरिकके रूपमें तुम मिस्रकी प्रजा और शासक वर्ग, दोनोंके लिए आदरणीय हो।" साइलसने अपना मत प्रकट किया।

विदेशियोंके लिए मिस्र देशका प्रमाणित नागरिक बननेके लिए उन दिनों यह आवश्यक था कि वे अपनी हैसियत, रुचि और योग्यताके अनुसार किसी-न-किसी सामाजिक सभा-संगठनके सदस्य बन जायें।

नियमानुसार साइलसने निशोरसको एक समाज विशेषका सदस्य बनानेके लिए प्रस्तुत किया।

"निशोरस!" निशोरसके कानमें उस समाजके सभा-मन्दिरमें पहली बार लाये जाने पर एक अपरिचित स्वर पड़ा।

"तुम हमारे समाज-विशेषमें सम्मिलित होना चाहते हो, किस उद्देश्यसे?"

"मनुष्योंके एक आदरणीय समाजमें सम्मिलित होनेके उद्देश्यसे, मनुष्यकी सेवा करने और इसके लिए अपने भीतर योग्यता जगानेके उद्देश्यसे।" निशोरसका उत्तर था।

"उद्देश्य तुम्हारा आदरणीय है, लेकिन जिन मनुष्योंके समाज-विशेषमें तुम सम्मिलित होना चाहते हो, क्या उन्हें देख भी रहे हो?"

"नहीं, क्योंकि मैं अन्धकारमें हूँ।"

निशोरसके चारों ओर सभाके प्रथम प्रवेशके नियमानुसार, सचमुच अन्धकारका एक पर्दा था और वह सभाकी उपस्थिति और दृश्यको नहीं देख सकता था।

"इस सभा-मन्दिरके बाहर भी, जहाँसे तुम अभी आये हो, क्या ऐसा प्रकाश नहीं था, जिसमें तुम मनुष्योंको देख सकते?"

"नहीं, इस मन्दिरके बाहर भी ऐसा प्रकाश नहीं था, जिसमें मैं मनुष्योंको देख सकता। बाहरके प्रकाशमें मैं केवल मनुष्योंके ऊपरी शरीरको ही देख सकता था, मनुष्योंको नहीं।"

"तब तुम मनुष्योंको देखनेकी आशा किसके सहारे करते हो ?"

"प्रकाशके सहारे।"

"प्रकाशके सहारे यदि तुम मनुष्योंको देख सकोगे तो उनके साथ क्या करोगे ?"

"उनसे प्रेम और उनकी सेवा।"

"उनसे प्रेम और उनकी सेवाके लिए क्या तुम सौ वर्ष जीवित रहनेकी प्रतिज्ञा करते हो ?"

"ऐसा करनेमें असमर्थ हूँ।"

"पचास वर्ष ?"

"असमर्थ हूँ।"

"पाँच वर्ष ?"

"असमर्थ हूँ।"

"पाँच दिन ?"

"असमर्थ हूँ।"

"पाँच घंटे ?"

"जीवित तो पाँच पल भी रहनेकी कोई प्रतिज्ञा नहीं कर सकता। जीवन अनिश्चित है, मृत्यु किसी भी क्षण आ सकती है।"

"तब तुम किस प्रकार उनसे प्रेम और उनकी सेवा करनेकी आशा रखते हो ?"

"मैं जीवनमें और इस जीवनके पश्चात् मृत्युमें उनसे प्रेम और उनकी सेवा करनेकी आशा रखता हूँ।"

"तुम्हारी आशा प्रशंसनीय है; लेकिन क्या तुम्हें जीवनके पश्चात् मृत्युकी दशाका अनुभव और उस दशामें प्रेम और सेवा करनेका अभ्यास है ?"

'नहीं है, लेकिन मैंने सुना है कि मिस्र देशमें प्रत्येक ऐसे मनुष्यको, जो युवावस्था पर पहुँचकर, मनुष्योंके किसी आदरणीय समाजमें सम्मिलित होने आता है, इस प्रकारका अनुभव और अभ्यास कराया जाता है।"

"तुमने जो सुना, ठीक है। भौतिक जीवन और भौतिक मृत्यु मनुष्यके जीवनके ही दो, एकके बाद एक चलनेवाले, युग हैं। पहला उसके जीवनकी रात है, दूसरा दिन है। पहलेमें अपेक्षाकृत अन्धकार है, दूसरेमें अपेक्षाकृत प्रकाश। दिन-रातकी भाँति दोनोंका क्रम, मनुष्यके जीवनके महायुगकी पूर्णता तकके लिए अटल है। सारी मानवता एक है, एकके अन्धकारमें सबका अन्धकार है और एकके प्रकाशमें सबका प्रकाश। कोई मनुष्य अकेले अपने लिए स्थायी प्रकाश या इस प्रकाश-अन्धकार-चक्रके बन्धनसे छुटकारा नहीं पा सकता और इसीलिए, मनुष्यके लिए दूसरोंकी सेवामें ही अपनी सेवा और दूसरोंके कल्याणमें ही अपना कल्याण है। मनुष्यके कल्याणके लिए विश्वकर्मा 'एमन-रा' (परमात्मा) का एक निश्चित विधान है। उस विधानका, निशोरस, क्या तुम साक्षात्कार करना चाहते हो?"

"हाँ, चाहता हूँ।"

"तुमने अपने किस उपकरणके सहारे देखनेका अभ्यास किया है?"

"आँखोंके सहारे।"

"किस उपकरणके सहारे सुननेका अभ्यास किया है?"

"कानोंके सहारे।"

"किन साधनोंके सहारे सजग और गतिशील होनेका अभ्यास किया है?"

"सूर्यताप, विद्युत् शक्ति, माध्याकर्षण शक्ति आदि भौतिक शक्तियोंके सहारे।"

"तब इसी प्रकार तुम जीवनके अन्धकार-कालीन देखने-सुननेके उपकरणों और गतिशील होनेके साधनोंकी भाँति मृत्युके प्रकाशकालीन देखने-सुननेके उपकरणोंसे देखो-सुनोगे और गतिशील होनेके साधनोंसे गतिशील होगे। तुम्हारे जीवनके उस प्रकाशकालीन युगके लिए तुम्हारे ये उपकरण अधिक सूक्ष्म और तीव्र होंगे और उसके साधनोंके रूपमें सौर मण्डलकी सूक्ष्म और तीव्रतर शक्तियोंसे तुम काम लोगे, क्योंकि तुम्हारे इस भौतिक

जीवनके उपकरण और साधन तुम्हारे व्यापक जीवनके उपकरणों और साधनोंकी ही छाया हैं। क्या तुम अपने उन उपकरणों और उन साधनोंका उपयोग सीखनेके लिए आवश्यक परिश्रम करनेको तैयार हो ?"

"तैयार हूँ।"

"वह परिश्रम तुम किस रूपमें करोगे ?"

"अपनी बुद्धिके अनुसार प्रतिदिन नियमित अध्ययन, चिन्तन और मनुष्योंकी सेवाके रूपमें जब तक कि उसकी कोई विशेष विधि मुझे न मिल जाय।"

"तुम्हारा निश्चय सराहनीय है, अपने नये उपकरणों और साधनोंका उपयोग सीख लेनेपर तुम मनुष्यमात्रके और विशेषतया इस समाजके अपने बन्धुओंसे किस प्रकार मिलोगे ?"

"समताके धरातलपर।"

"किस प्रकार व्यवहार करोगे ?"

"सत्य और सिधाईके स्तम्भ पर।"

"और किस प्रकार अलग रहोगे ?"

"सीधे, समकोण पर फूटनेवाले मार्गोंपर।"

"तब तुम युवावस्था प्राप्त और स्वतंत्र मनुष्योंके इस समाजमें सम्मिलित होनेके योग्य हो। मानव-जगत् और मानव हृदयके कुछ गूढ़ रहस्य इस समाजकी सदस्यताके उपलक्ष्यमें तुम्हें बताये जायेंगे। क्या तुम प्रतिज्ञा करते हो कि निष्प्राण जिज्ञासा और छिछले कुतूहलके आगे हमारे समाजके नियमोंके विरुद्ध किसीके सामने उन रहस्योंका उद्घाटन करके उन रहस्योंका अपमान और दुरुपयोग न करोगे ?"

"मैं प्रतिज्ञा करता हूँ।"

"तब तुम्हें हमारे इस आदर-प्राप्त समाजके परम्परागत नियमानुसार आवश्यक शपथ लेनी होगी। वह शपथ तुम्हारे किसी भी सामाजिक,

नैतिक और धार्मिक कर्तव्यमें बाधक नहीं होगी। तुम इसके लिए तैयार हो ?"

"तैयार हूँ।"

"तब तीन पग आगे बढ़ो" निशोरसको आदेश मिला, और उस तीन पगकी यात्रा वह अन्धकारके उस घेरेसे निकलकर, जिसके बाहर उसकी दृष्टि भी नहीं जा पाती थी, अब प्रकाशमें आ गया।

सभा-मन्दिरके प्रधान आसन पर दृष्टि पड़ते ही उसने देखा, उसका उदार आतिथ्यकार साइलस ही उस समय सभाके प्रधान पदपर आरूढ़ था और जो अधिकारी अबतक उसके साथ प्रश्नोत्तर कर रहा था, वह पिरोसा प्रान्तका प्रधान शासक राज-प्रतिनिधि था। सभाकी भव्यतासे उसकी आँखें चकाचौंध हो गईं।

निशोरसको विधिवत् संस्कारके साथ उस सभाके सदस्योंमें सम्मिलित कर लिया गया।

× × ×

निशोरसका नाम इस समाजकी देशव्यापी शाखाओंमें तेज़ीके साथ फैल गया। समाजकी सक्रियताओंमें उसकी गति तीव्रतासे बढ़ चली। शीघ्र ही इस समाजकी राजधानी-शाखासे उसके लिए निमंत्रण आया। राजधानी शाखाके प्रथम समारोहमें सम्मिलित होनेके लिए जाते समय सभा-द्वारके द्वारपालने निशोरसको रोक कर, समीपवर्ती दूसरे द्वारकी ओर संकेत करके कहा:—

"निशोरस, मिस्र-सम्राट्के साथ आजके सभा-भोजमें भोजन करने वालोंका मार्ग उस द्वारसे है और भोजन परोसनेवाले सेवकोंका मार्ग इस द्वारसे है। निश्चय ही आज मिस्र-सम्राट् तुम्हारे प्रथम-मिलनकी प्रतीक्षामें हैं।"

"लेकिन मैं तो परोसनेवालोंकी पंक्तिमें सम्मिलित होना चाहता हूँ,

द्वारेश !" निशोरसने कहा और द्वारपालकी दी हुई तलवारसे मार्ग पाकर उसी द्वारमें प्रविष्ट हो गया।

सभाकी कार्यवाही समाप्त होनेपर सभा-भोज प्रारम्भ हुआ। परोसनेवालोंमें वही द्वारपाल निशोरसका निकटतम सहकारी था। पहली पंगतमें भोजन करनेवाले प्रजावर्गके व्यक्ति थे और परोसनेवाले शासकवर्गके। दोनों वर्गोंका भोज समाप्त होने पर जब सब सभा-भवनसे बाहर आये तब निशोरसको नियमित अभिवादनोंके साथ सबका परिचय भी मिला। वह द्वारपाल और कोई नहीं स्वयं मिस्र-सम्राट् पैरोवह ही थे !

मिस्र-सम्राट्ने निशोरसकी पात्रतासे सन्तुष्ट होकर अगले मास ही उसे असीराका प्रतिनिधि-शासक बनाकर असीराके राज्य पर बिठा दिया और प्रजाका सच्चा सेवक बनकर उसने अपने पिताको प्रजाऋणसे बहुत कुछ मुक्त कर लिया।

निशोरस और पैरोवहके उस समाज-विशेषका मिस्र देशकी उन दिनोंकी भाषामें जो नाम था, उसे वर्तमान विश्वभाषामें 'फ्रीमैसोनिक सोसाइटी' कहते हैं। और तबसे अबतक इस कल्पित कथाके अनुकूल ही यह सोसाइटी सारे मानव संसारमें सजीव और सक्रिय चली आती है और उसके सदस्य 'फ्रीमैसन' कहलाते हैं।

---

# छायाकी ज्योति

सेक्रेटेरियटकी ओरसे आकर एक नई चमचमाती कार हज़रतगंजके चौराहे पर रुकी और उसमेंसे एक तरुणी उतरी। वह निस्सन्देह एक अत्यन्त रूपवती नवयुवती थी। बग़लवाली दूकानके बरामदेमें गुज़रते हुए एक युवक पर उसकी दृष्टि पड़ी। युवकसे दृष्टि मिलते ही उसने अपने बायें कन्धेको एक मोहक अनोखी अदा भरा झोंका दिया और मुसकुराती हुई बरामदेके ऊपर चढ़ गई।

"शुक्रिया।"

युवकने उसके पाससे निकलते हुए धीमे स्वरमें कहा। तरुणी रुक गई।

"आपका मतलब ?" गर्दन घुमाकर उसने युवकको त्योरी चढ़ी दृष्टिसे देखते हुए कहा।

"मतलब ?" युवक भी रुक गया था, "शुक्रियाका मतलब, थैंक्स।"

"कैसा थैंक्स मैं पूछती हूँ।" युवककी चप्पल, पायजामा और आँखों पर चढ़ती हुई दृष्टि डालकर उसने कुछ तीखे स्वरमें पूछा।

"आपने मुझे एक सुन्दर अदाके साथ सुन्दर दीखने वाली निगाहसे देखा था! मुझे उससे बड़ा सुख मिला। आप ख़ुद भी इतनी सुन्दर हैं। क्या इस कृपाभरी दृष्टिके बदले मुझे एक शुक्रिया देनेका भी हक़ नहीं है ?"

"शर्म है। आपको लेडीज़की इज़्ज़त करनी चाहिए! जाइये!" कहती-कहती वह एक बार फिर दबे ओठों मुसकुरा उठी और सामनेवाली दूकानकी पहली सीढ़ी पर उसने क़दम रख दिया।

"मैं आपको इस बातका बहुत अच्छा जवाब दे सकता हूँ। लेकिन आप अभी नहीं सुनेंगी। कभी सुनना चाहें तो किसी भी दिन डाकख़ानेके

पार्कवाले उस पेड़के नीचे चार और छः के बीच शामको आ सकती हैं। मैं वहीं बैठ कर पढ़ता-लिखता हूँ।" युवकने कहा।

"जाइये जाइये, शराफ़त सीखिये। पहले जवाब देने लायक़ अपनी शकल तो बनाइये" कहती हुई वह खटखट दूकानकी सीढ़ियों पर चढ़ गई।

युवक अपनी राह चला गया।

दूसरे दिन साढ़े चार बजे शामको वही कार युवकके बताये हुए स्थल के पास सड़क पर आकर रुकी। कारमें आज उस तरुणीके साथ एक नवयुवती और भी थी। वृक्षके नीचे एक बेंचपर जहाँ वह युवक बैठा था वहीं ये दोनों जा पहुँचीं।

"आप ही कल शाम मुझे चौराहे वाली दूकानके पास मिले थे?" उसी युवतीने युवकके पास पहुँचकर कहा।

"जी" युवकने अनायास दोनों युवतियोंको अपने पास खड़ी पाकर बेंचसे उनके स्वागतार्थ उठते हुए कहा। अपनी कापी, और उस पर चलते हुए फ़ाउंटेन पेनको उसने बन्द कर दिया था।

"कहिये, आप मेरी किस बातका क्या जवाब देना चाहते थे?"

"आपने मुझे शराफ़त सीखने और जवाब देनेके लायक़ शकल बनानेकी सलाह दी थी। अगर मैं ये दोनों बातें कर लूँ तो आप मुझे अपना दोस्त मान सकती हैं? मेरी बातें सुननेके लिए वक़्त दे सकती हैं?"

"आपको वक़्त?" गम्भीर मुद्रा बनाकर उस तरुणीने कहा, "आप कभी मेरे मकान पर तशरीफ़ ला सकते हैं क्या?"

"बेशक, क्यों नहीं!" युवकने उत्सुक-से स्वरमें कहा। "और जूतों पर पालिश भी अच्छी तरह कर सकते हैं?" दूसरी तरुणीने कहा और दोनों सहेलियाँ खिलखिला कर हँस उठीं।

"हाँ, कर तो सकता हूँ।" युवकने सरल भावसे उत्तर दिया।

"तब आप कल तीसरे पहर तीन बजे मेरी कोठी पर आ सकते हैं।" तरुणीने कहा।"

"और आपका काम ठीक हुआ तो हर रोज़ उसी वक़्त पर आपका आना जारी रह सकता है।" उसकी सहेलीने योग दिया और फिर खिलखिला कर हँस पड़ी।

"मैं कल तीन बजे ज़रूर पहुँचूँगा। आप मुझे अपना पता बतायें।" युवककी सहज उत्सुकतामें कोई परिवर्तन नहीं था।

"इनका नाम है मिस छाया" दूसरी लड़कीने उत्तर दिया और साथ ही एक मिनिस्टर साहबकी कोठीका पता बता दिया। उसने बताया कि वह मिनिस्टर साहब छायाके मैटरनल अंकिल (मामा) हैं।

"मैं कल ज़रूर आपके घर पहुँचूँगा !" युवकने उसी स्वरमें कहा।

"हम लोगोंको बड़ी ख़ुशी होगी। अच्छी दिलचस्पी रहेगी। हम आपको चाय भी पिलायेंगी।" तरुणीने अपनी सहेलीका हाथ पकड़कर आगे बढ़ते हुए कहा।

युवक बेंचपर बैठकर अपने काममें फिर लग गया। दोनों नवयुवतियाँ पासके लॉनमें टहलने लगीं। उनके आगे-पीछे टहलनेका मार्ग युवकके समीपसे ही गुज़रता था। उनकी पारस्परिक बातचीतका विषय बहुत कुछ वह युवक ही था, और वे बीच-बीचमें उसे देख भी लेती थीं और उनकी बातोंमें हँसीकी खिलखिलाहटका भी पूरा साथ था।

"तो मिस्टर आप करते क्या हैं ?" युवकने देखा वे दोनों फिर उसके पास खड़ी थीं और उसकी प्रथम-परिचित तरुणी ही यह प्रश्न पूछ रही थी।

"मैं ?" युवक फिर उठ बैठा और बेंचकी ओर संकेत करते हुए बोला, "क्या आप थोड़ी देर इस बेंच पर बैठना पसन्द करेंगी ?"

वे दोनों एक शिष्टाचारपूर्ण चेष्टाके साथ बेंचके एक कोने पर बैठ गईं। उनसे कुछ फ़ासले पर युवक भी उसी बेंच पर बैठ गया।

"मैंने इसी यूनिवर्सिटीसे पिछले साल सोशीयालॉजीमें एम. ए. किया है और अब रिसर्चके साथ Barriers of Sex in Hindu

Society (हिन्दू समाजमें यौन-भेदकी बाधाएँ) पर थीसिस तैयार कर रहा हूँ।

"थी--सिस !" तरुणीकी भावभंगी एकदम बदल गई, "बैरियर्स ऑफ़ सेक्स इन हिन्दू सोसायटी पर ? बहुत बड़ी चीज़ है !"

"बड़ी चीज़ तो है ही। हिन्दी मासिक पत्रिका 'वसुमती' में मैं इसी आधार पर एक लेखमाला भी लिख रहा हूँ। उसका टाइटिल है, 'आजकी तरुणी और उसका भविष्य।'

"ओह ! उसके लेखक आप हैं !" तरुणीके मुख पर अबकी बार एक संकोच-भरी लालिमा दौड़ गई।

"श्री रूपदर्शी ?" दूसरी युवतीने पूछा।

"जी हाँ, मैं रूपदर्शी नामसे ही हिन्दीमें लिखता हूँ। मेरा नाम है रावर्ट इवैंजलिन।

"रावर्ट इवैंजलिन ! आप क्रिश्चियन हैं, लेकिन हिन्दीमें—"

"आप हमारे मज़ाक़का बुरा तो नहीं माने ?" छायाने अपनी सहेलीकी बात पूरी होनेके पहले ही कहा, "हम लोग दोस्तों में ऐसी ही शरारतभरी बातें कर बैठती हैं। आप बुरा माने हों तो हमें उसके लिए माफ़ करेंगे ?" उसके स्वरमें सचमुच गहरा पछतावा था और स्निग्ध विनय भी।

"मैं बुरा नहीं मानता छायाजी, आप निश्चिंत रहें। मैं तो कलसे ही आपका बहुत कृतज्ञ हूँ। आपने कल मुझसे बिना परिचयके जितनी बात की, उतनी कोई मामूली भली लड़की नहीं कर सकती थी। आपकी आजकी बातचीतमें भी मुझे बड़ा रस मिला है।"

छायाने पहली बार युवकको स्त्री-सुलभ, सकुचाई हुई, फिर भी ध्यान पूर्ण दृष्टिसे देखा। उसने सोचा, यह युवक केवल भावुक और सुसंस्कृत ही नहीं, यथेष्ट सुन्दर और आकर्षक भी है।

"मैं आपसे इस समय एक बात पूछूँ, कोई हर्ज तो न होगा?" छायाने सम्भवतः इवेंजलिनकी व्यस्तताके विचारसे कहा।

"जरूर पूछिये । मेरा समय और भी अच्छे काममें बीतेगा ।"

"अभी सवा पाँच बजे हैं" छायाने अपने हाथकी घड़ी देखते हुए कहा, "आप छः बजे तक यहाँ रुकेंगे ?"

"हाँ, पौन घंटा मैं बड़ी ख़ुशीके साथ आपसे वातचीत करनेको दे सकता हूँ ।"

"तब यह वताइए कि आप मेरी कलकी बातका, हालाँकि उसमें मेरी ढिठाई भी बहुत थी, क्या जवाव देना चाहते थे ?"

"उस जवावके पहले मुझे आपसे कुछ वातें पूछनी पड़ेंगी ।"

"शौक़से पूछिये ।"

"पूछूँ ?" युवकने एक वार दूसरी लड़कीकी ओर दृष्टि फेंकते हुए पूछा ।

"ज़रूर पूछिए । मेरी सहेली अरुणा मेरी मदद ही करेगी ।"

जव आप राह चलते किसी अपरिचित नवयुवकको देख कर उस तरह मुसकरा देती हैं और आपकी दूसरी चेष्टाएँ भी मोहक हो उठती हैं, तव ऐसा करनेमें आपका मतलव क्या होता है ? आप अपने मनमें क्या सोचती हैं ?"

छाया सोचती हुई चुप रह गई ।

"अरुणा भी आपकी मदद करेंगी ।" युवकने अरुणाकी ओर देखकर कहा ।

"मैं यह ऐसा कुछ भी नहीं करती । कमसे कम जानबूझकर तो नहीं करती ।" छायाने ही उत्तर दिया ।

"आप झूठ वोलती हैं ।" इवैंजलिनने मुसकराहट भरे, फिर भी स्निग्ध-तर स्वरमें कहा ।

"मुमकिन है—"

"आप ठीक कहते हैं" अरुणा बोल उठी, "और इसका जवाब सीधा है । यह हर नवयुवकको अपने रूप पर मुग्ध करना चाहती है, और अपनी प्रशंसा भी । यह इसके लिए स्वाभाविक है ।"

"मैं इनकी रायसे सहमत हूँ।" इवैंजलिनने छायाको सम्बोधित कर कहा, "और जिन नवयुवकों पर आप स्वयं भी थोड़ा बहुत मुग्ध हो सकती हैं, जिनकी थोड़ी-बहुत प्रशंसा कर सकती हैं, केवल उन्हींको नहीं, आप हर राह चलने वाले मामूली आदमीको भी इसी तरह मुग्ध करना चाहती हैं, यह मेरी निश्चित धारणा है।" इवैंजलिनने आरोपके अर्थमें कहा।

"अगर ऐसा चाहती हूँ और करती भी हूँ तो इसमें बुराई?" छायाने भी मानो सशस्त्र होकर सुदृढ़ स्वरमें पूछा।

"बुराई!" इवैंजलिन ठठाकर हँस पड़ा, "मैं कब कहता हूँ कि इसमें कोई बुराई है! मैं तो आपकी एक बहुत बड़ी अच्छाईकी चर्चा कर रहा हूँ। मैं मानता हूँ कि समाजमें प्रत्येक स्त्रीको प्रत्येक पुरुषकी दृष्टिमें सुन्दर और आकर्षक दीखना चाहिए। अपने रूप और माधुर्यका सुख सदैव अपने इर्द-गिर्द बिखेरते चलना चाहिए।"

"छायाकी बिल्कुल यही फ़िलासफ़ी है" अरुणा बोल उठी "और मैं भी इससे सहमत हूँ।"

"और मैंने यह फ़िलासफ़ी अरुणासे ही सीखी है।" छायाने अपनी स्वभाव-सिद्ध अधूरी-सी अँगड़ाई लेते हुए कहा।

"लेकिन इस अच्छाईमें एक बुराई भी है। जब आप किसी व्यक्तिको अपनेसे नीचा, कम हैसियतका या कम सुन्दर मानती हुई उसके साथ वैसा भाव-प्रदर्शन करती हैं तब आपके व्यवहारमें एक अनुचित कठोरता और कुरूपता आ जाती है। आपके उस मीठे प्रदर्शनके साथ जो अनुग्रह और सहृदयता होनी चाहिए वह न होकर उसकी उलटी चीज़ बीचमें आ जाती है। क्या आप कह सकती हैं कि आप किसी भी सामने आये हुए व्यक्ति पर उस तरह निर्दय नहीं होतीं और उसे व्यर्थ ही परेशान नहीं करना चाहतीं?"

"मैं तो ऐसा ही समझती हूँ।" छायाने कहा।

"आप इसकी गहराई तक विचार कीजिए। आपकी नेकनीयतीमें

कुछ कसर हो सकती है। जब आप किसी व्यक्तिका ध्यान इस तरह अपनी ओर आकर्षित करती हैं तो आप एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले लेती हैं।"

"वह क्या ?"

"उसके मनमें उभरी हुई भावनाओंकी आप एक हद तक ज़िम्मेदार हो जाती हैं। आपकी ज़िम्मेदारी हो जाती है कि उसकी भावनाओंका अपनी भावनाओं-द्वारा दृढ़ता किन्तु सहृदयतासे जवाब दें। उसके लिए अपने हृदयमें आदर और शुभ कामनाएँ पैदा करें। आप मन ही मन उससे कह सकें; "आप सुन्दर स्वस्थ और हैसियतदार होवें, प्रसन्न और आकर्षक बनें, मैं आपका आदर करती हूँ।" उसकी तरफ़ अगर आप उदासीन रहती हैं और उसकी आन्तरिक कामनाओंको छेड़कर ही कोई सुख अनुभव करती हैं तो आप अपनी सुन्दरताको मलीन करती हैं।" इवैंजलिनने अधिकारपूर्ण स्वरमें कहा।

"आपकी बातें मैं समझ रहीं हूँ। मैं इनके लिए बहुत कृतज्ञ हूँ। ये बहुत क़ीमती और विचारणीय बातें हैं।"

"मुझे आपसे ऐसी ही आशा थी। अब शायद कल आपके घर आने पर मुझे आजसे भी कुछ अधिक मिलेगा।" इवैंजलिनने स्थिर दृष्टिसे छायाको देखकर कहा।

छाया सकुचा-सी उठी। "अवश्य मिलेगा, मैं आपकी राह देखूंगी।"

"मुझे जूते पर पालिश भी. . . . ." वह मुसकाने लगा था।

"जूते पर पालिश करके आप मेरे काममें हाथ बटा सकते थे, पर अब मैं उस कार्यमें आपको शामिल नहीं करूँगी।" छायाने मानो बात सम्हाली।

"कल, याद है, कौनसा दिन है ?" इवैंजलिनने पूछा।

"कल—कल मंगलवार है, क्यों ?"

"कल रक्षा-बन्धनका दिन है। मैं लड़कियोंको बहिन बनानेमें

बहुत सावधान रहता हूँ। यह बड़ा नाज़ुक और सँकरा रिश्ता है। लड़के-लड़कियों, स्त्री-पुरुषोंके बीच सबसे अच्छा नाता मर्यादित मित्रताका ही है। फिर भी मुझे यही नाता विशेष रूपसे ठीक जँचता है। कल भाई बहिनका त्यौहार है। मेरे ईसाई होनेका तो आपको परहेज़ नहीं है ?"

काफ़ी देर तक चुप रहकर छायाने कहा, 'बिलकुल नहीं।' वह दृष्टि नीची किये पृथ्वीकी ओर देखती रही। फिर उसने आँख उठाकर इवैंजलिन पर एक स्थिर-सी दृष्टि डाली; तभी उसकी आँखोंमें आँसू छलक आये।

"मैं आपको राखी बाँधूगी। मेरे अबतक कोई भाई था भी नहीं।" छायाका गला कुछ रुँधा हुआ था। कहते-कहते उसने चलनेके लिए खड़े होकर दोनों हाथ जोड़ दिये।

× × ×

जो लोग छाया जैसी 'आज़ाद' लड़कियों पर आक्षेप करते हैं वे इसीलिए ऐसा करते हैं कि वे उनकी अन्तः-स्थित निर्मल, जगमग ज्योतिको नहीं देख पाते, समझ नहीं पाते।



# अलगोज़ेवाला रावी

यह एक योग-संयोगकी ही बात है कि मेरा साहित्यिक उपनाम 'रावी' पड़ गया है; हज़ारों वर्ष पहले ईरानदेशके पेशेवर कहानी कहने वालोंसे मेरे इस नामकरणका कोई सम्बन्ध नहीं है। वैसे, 'रावी' शब्दका अर्थ होता है, कहानी कहने वाला; और जिस युगकी मैं यह कथा कह रहा हूँ, उसमें कुछ कल्पनाशील लोगोंका यह पेशा था कि वे द्वार-द्वार पर जाकर लोगोंको कहानियाँ सुनाते और अपना पारिश्रमिक लेते थे।

ईरानके प्राचीन ईदान नगरमें एक बार एक परदेशी रावी आया। वह अलगोज़ा बजाता हुआ (अलगोज़ा दोहरी बाँसुरीकी तरहका एक बाजा होता है) ईदानकी सड़कों पर और गलियोंमें घूमने लगा।

"कहानी सुनाएँ—कहानी सुनाएँ। शाहकी कहानी, दरगाहकी कहानी—ख़ूनी भूतकी कहानी, जबरूतकी कहानी—शहज़ादीकी कहानी, छिपी-शादीकी कहानी—दिलकी कहानी, दिलदारकी कहानी—इश्क़की कहानी, ग़मेज़ारकी कहानी—हिन्दी मोरकी कहानी, पीले चोरकी कहानी—चीनी हूरकी कहानी, ग़ैबी तूरकी कहानी—शाहज़ादेकी कहानी, अटल वादेकी कहानी—जासूसकी कहानी, काले रूसकी कहानी—बुल-बुलकी कहानी, शम्बल-पुलकी कहानी—राजा इन्दरकी कहानी, बीते चन्दरकी कहानी—ग़ैबी यारकी कहानी, शाहीचारकी कहानी—मीठी मौतकी कहानी, सोती-सौतकी कहानी—बड़ी राहकी कहानी, ठंडी आहकी कहानी—बहती धारकी कहानी, उस पारकी कहानी—कहानी सुनाएँ—कहानी सुनाएँ।" अलगोज़ेवाले रावीने एक दरवाज़ेके सामने रुककर अपनी नियमित पुकार लगाई।

मकानके ऊपरी छज्जे पर एक रूपवती तरुणीका मुख, उसके काले

नक़ाबके हटनेसे क्षण-भर के लिए खुला और फिर उसी आवरणमें छिप गया। आँखें चार हुईं और नीचेकी गलीसे छज्जेतक एक बिजली-सी कौंध गई, जिसे किसी भी पाँचवीं आँखने नहीं देखा।

तरुणी भीतर हट गई। अलगोज़ेवालेने अलगोज़ेकी जोड़ी होंटों पर लगाई और राग छेड़ दिया।

दो क्षण बाद, गलीके पास मकानके नीचेका सदर दरवाजा खुला। अलगोज़ेवालेने अपनी पूरी पुकार दोहराई—

"कहानी सुनाएँ-कहानी सुनाएँ—शाहकी कहानी, दरगाहकी कहानी—ख़ूनी भूतकी कहानी, जबरूतकी कहानी.........."

खुले हुए द्वारके सामने एक बुढ़िया आई।

"बेटा, मेरी लड़कियाँ तुम्हारी कहानी सुनना चाहती हैं। क्या तुम शामको यहाँ नहीं आ सकते? ईदानमें ही रहते हो न?"

"ना, अम्मी, मैं तो परदेसी हूँ, आज ही ईदानमें आया हूँ। शामको भी आपके यहाँ आ सकता हूँ। लेकिन क्या आपकी लड़कियाँ शामवाली कहानियाँ सुनना पसन्द करेंगी?"

"शामवाली कहानियाँ!" बुढ़ियाने कुछ चकित-सी होकर पूछा, "शामवाली कहानियाँ कौन-सी होंगी, बेटा?"

'शामवाली कहानियाँ यही होंगी—मीठी मौतकी कहानी, सोती सौत-की कहानी, बड़ी राहकी कहानी, ठंडी आहकी कहानी, ख़ूनी भूतकी कहानी, जबरूतकी कहानी—"

"ना-ना बेटा, ना-ना! मेरी लड़कियाँ भूतकी कहानियाँ नहीं सुन सकतीं; और वह भी शामके वक़्त! तोबा! तोबा! बेचारियोंका नाज़ुक कलेजा दहशतसे फट जायगा। मैं अभी पूछकर आती हूँ, वह कौन-सी कहानी सुनना पसन्द करेंगी।"बुढ़िया भीतर चली गई और दो क्षण बाद लौट कर बोली:

"शाहज़ादेकी कहानी मेरी लड़कियाँ सुनना चाहती हैं। उसकी उजरत तुम क्या लोगे ?"

"उजरतकी तो कोई बात नहीं अम्मी", अलगोज़ेवाने कहा, "लेकिन शाहज़ादेकी कहानी सुबहकी है, वह दोपहर या शामको नहीं सुनाई जा सकती। कहानियोंके वक़्तकी मुझे सख़्तीके साथ पाबन्दी करनी पड़ती है; इसमें मैं ढील-ढाल करूँ तो नई अच्छी कहानियोंका मेरी ज़बान पर आना बन्द हो जाय।"

"तो बेटा, कल सुबह ही सुना जाना : लड़कियाँ वहीं कहानी सुनना चाहती हैं"—बुढ़ियाने कहा।

"कल सुबह तो अम्मी मैं तड़के ही दूसरे शहरके लिए रवाना हो जाऊँगा, जाना ज़रूरी है।"

बुढ़िया अपनी लड़कियोंसे सलाह करने फिर भीतर चली गई।

"शाहज़ादेकी नहीं तो शाहज़ादीकी कहानी आज शामको सुना सकते हो बेटा ? लड़कियाँ शाहज़ादीकी ही कहानी सुन लेंगी" उसने भीतर से लौटकर कहा।

'शाहज़ादीकी कहानी तो दोपहरकी, इसी वक़्तकी कहानी है, अम्मी, वह भी शामको नहीं सुनाई जा सकती। उसे सुनना हो तो इसी वक़्त सुन लीजिए।"

"बात ज़रा यह है बेटा" बुढ़ियाने रुकती-रुकती ज़बानमें कहा, "शामको सुनते तो घरके मर्द भी खेतों परसे आजाते, वह भी सुन लेते और तुम्हारी उजरतका भी मुनासिब इन्तज़ाम हो जाता।" कहते-कहते बुढ़ियाका गला कुछ भर आया और आँखोंमें आँसू छल-छला आये।

"मैं तुम्हारे दिलकी बात सब समझ रहा हूँ, अम्मी ! तुम्हारा यह उजड़ा-सा आलीशान पुराना मकान तुम्हारी बीती हुई अमीरीकी गवाही दे रहा है। तुम्हारे घरके मर्दोंको आज खेतों पर काम करना पड़ रहा है, ऐसे दिनोंका भी तुम्हें मलाल है। लेकिन सब्र बड़ी चीज़ है अम्मी, और

अमीरी हमेशा सोने-चाँदीमें ही नहीं रहती। तुम्हारे घरकी अमीरी तुम्हारी जीती-जागती औलादमें पोशीदा है। दोपहरकी कहानियोंकी मेरी उजरत भी कुछ ज़्यादा नहीं है, उनके मैं सिर्फ़ तीन सीरप (उस युगका एक छोटा सिक्का) लेता हूँ और इस वक़्त तो मैं सीरपके बदले दो रोटियाँ और एक प्याला मटरका शोरवा लेना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

अतीतकी उमड़ी हुई स्मृतियोंने बुढ़ियाकी आँखोंसे दो बूँद आँसू बाहर ढकेल दिये। वह लड़कियोंसे बात करने भीतर चली गई।

थोड़ी देर बाद अपनी तीन तरुण लड़कियोंको लेकर बुढ़िया लौट आई। देहलीज़के पास, द्वारके भीतर बुढ़िया बैठ गई और उसके पीछे उसकी तीनों लड़कियाँ बुर्क़े ओढ़े हुए, ओट करके बैठ गईं।

अलगोज़ेवालेने देहलीज़के बाहर बैठकर शहज़ादीकी कहानी प्रारम्भ कर दी :

"किसी ज़मानेमें मुल्क फ़ारसमें रूज़ेब नामका बादशाह हुकूमत करता था। अशाशा, शलीजा और अमीना नामकी उसकी तीन निहायत खूबसूरत शहज़ादियाँ थीं। इनमें सबसे बड़ी शहज़ादी अशाशा इतनी हसीन थी कि सूरज और चाँदको भी उसका चेहरा देखनेकी इजाज़त नहीं थी और उसके माँ-बाप भी वग़ैर अपनी आँखोंमें सुरमा डाले उसे कभी नहीं देखते थे। अशाशाने जिस दिन अपने पन्द्रहवें सालमें पैर रक्खा, उसी दिनसे सूरज बढ़ने लगा और चाँद घटने लगा। शहज़ादीकी परदादारीका पूरा एहतियात होते हुए भी उसके हुस्नकी कशिश इतनी ज़बर्दस्त थी कि सूरज और चाँद भी उसके आगे मुस्तक़िल न रह सके। चाँद तो पन्द्रह दिनकी कशिशमें ही घुल-घुल कर इतना दुबला हो गया कि उसके हस्तोनेस्त (जीवन-मरण) का मसला सामने आ गया और आख़िरी रात उसने सोनेके वक़्त शहज़ादीका मुख देख लिया तब उसके जिस्ममें जान आई। चाँदका अक्स शहज़ादीके खुले चेहरे पर पड़नेसे उसकी ठोड़ीके नीचे काले तिलका निशान पड़ गया........"

कहते-कहते अलगोज़े वालेने सबसे पीछे बैठी हुई बड़ी लड़की परीज़ाकी आँखोंकी ओर एक पैनी दृष्टि फेंकी। परीज़ाकी आँखें बारीक बुरक़ेकी जालीमें उसी समय उसकी ओर झाँक उठी थीं।

परीज़ाकी ठोढ़ी पर वैसा ही एक ख़ूबसूरत काला-सा तिल था!

अलगोज़ेवालेने अपनी कहानी जारी रक्खी :

"धीरे-धीरे पन्द्रह दिनके भीतर चाँद अपनी पूरी तन्दुरुस्ती हासिल कर ले गया। उधर सूरजने ज़मीनके सामने शहज़ादीके दीदारके लिए ज्यादा देर तक रुकनेका सिलसिला शुरू कर दिया और तीन महीने बाद एक दिन जब कि उसे ज़मीनके रूबरू पूरे सौ जलल (जलल पौन मिनटके लगभग समयका परिमाण होता था) ज्यादा ठहरना पड़ा और गरमीकी शिद्दतसे दुनिया हा-हाकार कर उठी तब किसी तरह शहज़ादीका दामन एक जललके लिए उसके सामनेसे उठ गया और सूरजने भी उसके हुस्न-का जमाल कोह-मग़रिब (अस्ताचल) की ओटसे देख लिया। सूरजका अक्स उसके बदन पर पड़नेसे उसके बायें सीने पर लाल तिलका एक ख़ूब-सूरत-सा निशान बन गया......!"

आयशा अपने आसन पर एक बार और विचलित हुई। अधूरी-सी एक अँगड़ाई लेते-लेते अलगोज़ेवालेके साथ उसकी आँखें फिर चार हो गईं।

परीज़ाको मालूम था कि उसके बायें सीने पर लाल तिलका चिह्न है!

अलगोज़ेवालेकी कहानी चलती रही।

"उस दिनसे सूरजने धीरे-धीरे ज़मीनके रूबरू अपना क़याम घटाना शुरू कर दिया। क़यास है कि उसके पहले दिन और रातें बराबर होती थीं और चाँद हर रातको ठीक वक़्त पर पूरा निकलता था। लेकिन शहज़ादी अशाशाके आग़ाज़े शबाब (यौवन-प्रवेश) के दिनोंसे उनका तर्ज़ बदल गया और यह बदला हुआ तर्ज़ अब तक रायज है।

"एक दफ़ाका ज़िक्र है कि रूज़ेब शिकार खेलते-खेलते जंगलोंमें बहुत

दूर निकल गया" कथाकारने अपनी रोचक, प्रभावपूर्ण शैलीमें कहानी कहते हुए विस्तारके साथ बताया कि रूज़ेबकी महलोंसे अनुपस्थितिमें पड़ौसके एक दूसरे राजाने शहज़ादी अशाशाको महलोंसे रातों-रात उठवा लिया। राजधानीमें हाहाकार मच गया! बादशाह रूज़ेब जब जंगलोंसे लौट कर आया तो शहज़ादीके वियोगमें वह पागल-सा हो गया। कई दिनों तक बहुत ढूँढ़ने-खोजने पर भी जब शहज़ादीका पता न लगा तब वह स्वयं राजपाट छोड़कर, अपनी रानी और दो लड़कियोंको साथ लेकर बड़ी शहज़ादी-को ढूँढ़ने निकल पड़ा। अन्तमें दूसरे देशके एक घने वनमें एक टूटे-फूटे क़िलेके भीतर उन्होंने शहज़ादी अशाशाको पा लिया। उसे लेकर रूज़ेब उसी देशके एक छोटे-से गाँवमें अपना झोंपड़ा बनाकर ग़रीबीके दिन काटने लगा क्योंकि उसके राज्यमें पहले ही उस अन्यायी राजाने अधिकार कर लिया था। उधर यूनानके शहज़ादे होरासने भी शहज़ादी अशाशाके सौन्दर्यका वर्णन सुन रक्खा था और उसने निश्चय किया था कि उससे ही विवाह करेगा। होरास उस समय सारे राज्योंमें सबसे सुन्दर शहज़ादा था। सभी देशोंकी राजकुमारियाँ उससे विवाह करनेके लिए मन ही मन लालायित थीं। शहज़ादी अशाशाने भी उसके रूप और पौरुषकी चर्चा सुन रक्खी थी। शहज़ादी अशाशाके अपहरण और रूज़ेबके राज-त्याग और पड़ोसके राजा-द्वारा उस पर अधिकारका समाचार जब होरासने सुना तो वह शहज़ादीको खोजने और उसके पश्चात् शाह रूज़ेबको फिर-से राज्यासन पर बिठानेकी शपथ लेकर अपनी राजधानीसे निकल पड़ा। खोजते-खोजते वह एक दिन उस देशके उस गाँवमें जा पहुँचा जहाँ वह निर्वा-सित राज-परिवार अपने दिन काट रहा था। उस झोंपड़ेके सामनेसे निकलते ही उसकी और शहज़ादी अशाशाकी आँखें चार हो गईं। दोनों एक दूसरेको न जानते हुए भी एक दूसरे पर पहली दृष्टिमें ही मुग्ध हो गये। शहज़ादा होरासका अक्स पड़ते ही अशाशाके दाहिने कपोल पर एक सुन्दर नीले रंगके तिलका निशान पड़ गया।

यहाँ तक कहानी कह चुकने पर अलगोज़ेवाला रुका और बोला, "कहानी आधी मंज़िल पर आ गई है, और सुनते-सुनते आप लोगोंको कुछ थकान भी महसूस होने लगी होगी। अगर आपको तकलीफ न हो तो इस वक़्त मुझे दो रोटियाँ दे सकती हैं। उस के बाद मैं फिर कहानी शुरू कर दूंगा।"

बुढ़ियाने एक रक़ाबीमें दो रोटियाँ और थोड़ा-सा मटरका शोरबा उसके सामने ला रक्खा।

"खाओ बेटा, अभी एक रोटी तुम्हें और लेनी होगी। शोरबा तो अब नहीं है, लेकिन घरमें नमक बहुत है, तुम्हारे रास्तेके लिए भी थोड़ा-सा साथ बाँध दूंगी।"

अलगोज़ेवालेने खाना शुरू किया।

"लड़कियाँ डर रही हैं कि कहीं शाम न हो जाय और कहानी पूरी करनेका वक़्त न रहे" बुढ़ियाने कुछ देर बाद लड़कियोंका सँदेसा दिया।

"इसका अब कोई डर नहीं। कहानी वक़्त पर शुरू हो जानी चाहिए, फिर उसे पूरा करनेमें चाहे रात हो जाय चाहे सवेरा, उसका कोई हर्ज नहीं। घरके मर्द भी तब तक आ जायँगे, तो वे भी सुन लेंगे, मैं शुरूका हिस्सा दोबारा भी सुना दूंगा।" उसने अपने श्रोताओंकी चिन्ता दूर की।

अलगोज़ेवाला भोजन कर रहा था और परीज़ाकी आँखें उसकी आँखोंसे रह-रहकर टकरा जाती थीं। परीज़ाने इतना सुन्दर युवक अपने जीवनमें अभी तक नहीं देखा था।

साँझ हो आई और घरके मर्द—लड़कियोंका पिता और चचा—खेतों परसे लौट आये।

भोजनादिसे निवृत्त होकर वे सब कहानी सुननेके लिए तैयार हो गये। अलगोज़ेवालेको अब घरके भीतर आँगनमें बुला लिया गया। लड़कियाँ घरके दालानमें बुढ़ियाके पीछे पर्दा करके बैठ गईं और मर्द सामने आँगनमें बैठे।

"मायूसी और तंगदस्तीके उस आलममें भी शहज़ादी अशाशाका दामन हुस्नो-मोहब्बतके ऐसे नायाब मोतियोंसे भर रहा था, जिनकी क़दर और सँभाल कोई मामूली नौजवान नहीं कर सकता था।" अलगोज़े-वालेने कहानीका उत्तरार्द्ध प्रारम्भ किया और क्षण-भरको चुप हो कर एक दम खड़ा हो गया।

उसने अलगोज़ा मुँहसे लगाया और उसे बजाता हुआ बाहरकी ओर चल दिया। यन्त्रचालितकी भाँति परीज़ा भी उठी और अलगोज़ेवाले के पीछे-पीछे चल दी।

"परीज़ाको अलगोजेवालेने मोह लिया है। उसके दाहने गालपर कहानी सुनते-सुनते एक नीला तिल भी निकल आया है।" मझली लड़कीने कहा।

"वह नौजवान और बेहद ख़ूबसूरत भी तो है।" छोटी लड़कीने कहा।

"परीज़ाको रोकनेकी कोशिश बेकार होगी, उसको रोकना मुनासिब भी नहीं है।" बुढ़िया माँने कहा।

"उसके बिना हम रह भी तो नहीं सकते। चलो, जहाँ वह जाय वहीं हम भी चल कर रहेंगे।" लड़कियोंके बापने कहा।

और वे सब भी परीज़ाके पीछे-पीछे चल दिये।

गलियों, सड़कों, खेतों, मैदानों और जंगलोंको पार करके परीज़ा और अलगोज़ेवालेके पीछे-पीछे वे एक पहाड़ीके ऊपर जा पहुँचे। रात आधी से अधिक बीत चुकी थी और सभी थक गये थे। पहाड़ीकी एक चौड़ी, चौरस शिला पर वे सब विश्राम करने लगे।

चौदसका चंद्रमा आकाशमें खिला हुआ था। और तीनों लड़कियोंने अपने बुर्क़े उतार दिये थे। परीज़ाके दायें कपोलके नीले तिल पर चन्द्रमाकी किरणें पड़ रही थीं और उसके प्रभावसे उसके सारे कपोलकी ललाई बढ़ गई थी।

× × ×

उसी रात ईदान नगर, नदीका बाँध टूट जानेसे, भयंकर बाढ़में वह गया और उसका एक भी व्यक्ति जीवित नहीं बचा।

परीज़ा और परदेसी अलगोज़ेवालेके परिवारोंके बीच वैवाहिक सम्बन्धोंसे ईरानी जातिके एक नये वंशका प्रारम्भ हुआ। यह वंश आगे बहुत फूला-फला और ईरानकी उस युगकी सभ्यतामें इसने बहुत सुधार-संस्कार किये।

ईरानके पुराने पेशेवर रावियोंसे यद्यपि मेरे साहित्यिक नामकरणका कोई सम्बन्ध नहीं है, फिर भी उस अलगोज़े वाले रावी और उसकी परीज़ासे मेरा कुछ न कुछ पारिवारिक सम्बन्ध कई जन्मोंसे प्रायः रहता ही आया है।



# अप्सराकी खोज

स्वर्गलोककी अप्सराओंने एक बार निश्चय किया कि देवता लोग अब उनकी ओरसे उदासीन रहने लगे हैं और उनमें दूसरी झंझटोंके कारण प्रेम करनेकी योग्यता घट गई है; इसलिए पृथ्वीलोकमें चलकर मनुष्योंसे प्रेम करना चाहिए। उन्हें सूचना मिली थी कि मनुष्योंमें प्रेम करनेकी प्रवृत्ति इधर बहुत अधिक जाग गई है।

पृथ्वीलोककी परिस्थितिकी स्वयं-देखी जानकारी प्राप्त करनेके लिए अप्सराओंने पहले एक अप्सराको पृथ्वी पर भेजा।

भूमण्डलकी एक विशाल नगरीमें सोलह वर्षकी एक अस्पृष्ट-यौवना, अद्वितीय सुन्दरीका शरीर लेकर यह अप्सरा अवतीर्ण हुई।

लोगोंने उसे देखा तो देखते ही रह गये! उसके रूपमें कुछ ऐसा आकर्षण था कि जब आँखें उस पर जा पड़तीं तो फिर उनका वहाँसे अपने-आप हटना असम्भव था। जिस दिन वह पहले-पहल नगरकी सड़कों पर निकली, उसी एक दिनमें—सिटी कार्पोरेशनकी सूचनाके अनुसार—तीन हज़ार तिरासी आदमी विक्टोरिया, मोटरों और ट्रामोंके नीचे दबकर मर गये और सत्तर आदमियोंकी गर्दनें मुड़-मुड़कर देखनेके कारण मोच खाकर टेढ़ी हो गईं। वे सब उस सुन्दरीको देखनेमें इतने तन्मय हो गये थे कि सड़कों पर चलती हुई गाड़ियोंसे बचनेकी उन्हें सुध-बुध ही न रह गई थी!

अपने प्रति मनुष्योंका यह असीम आकर्षण देखकर अप्सराका हृदय आह्लादके आवेशमें धड़क उठा। मधुर कल्पनाओंके सागरमें वह डूबने-उतराने लगी। "अप्सराएं कितनी मूर्ख हैं, जो इतने समयसे स्वर्गलोकमें ही पड़ी हुई हैं," उसने एक बार सोचा।

समुद्रतट पर एक सुन्दर-सा भवन उसने किराये पर ले लिया। नगर

में पदार्पणके दूसरे ही दिन नगरके सभी पत्रोंमें उसने विज्ञापन निकलवाया:

आवश्यकता है

सहृदय प्रेमियोंकी। नर्मदा-भवन, चौपाटी पर दिनके ग्यारहसे एक तकका समय छोड़ किसी भी समय पधारें। बहुत अनुगृहीत हूँगी।

कृपाभिलाषिणी

तारुण्यबाला

उसी दिनकी दोपहरको नर्मदा-भवनके पास चौपाटीका मैदान खचाखच भर गया। एक ऊंचे आसन पर वह अपना दिलरुबा लेकर बैठ गई। उसकी सुन्दर, सुकुमार अंगुलियां यन्त्रके तारोंपर नाचने लगीं। दिलरुबाकी स्वरलहरी वहाँके वातावरणमें मानो साकार हो उठी। अप्सराके होठ बन्द रहे। उसकी आँखें घिरे हुए जन-समूहकी आँखों पर चंचल गति-से थिरकने लगीं—जैसे दो अलौकिक तितलियाँ फूलोंका रस लेनेमें विद्युत स्फूर्तिसे संलग्न हों। मंत्र-मुग्धसे दर्शकोंकी भीड़ जमा रही।

क्रम चलता रहा। साँझ हुई। रात आई। रात गई। क्रम चलता रहा।

सबेरेकी डाकसे कुछ चिट्ठियाँ उसके नाम आईं। चिट्ठियाँ कितनी थीं; यह तो नहीं मालूम हो सका; लेकिन उन सबकी तोल सवा मन थी। उन चिट्ठियोंके कुछ लेखकोंने लिखा था कि वे भरी भीड़में उसके सामने नहीं आ सकते, यद्यपि दर्शनोंके लिए बहुत व्याकुल हैं; कुछने लिखा था कि वे एकान्तमें ही उससे मिलना चाहते हैं; कुछने लिखा था कि वे अपनी सारी धन-दौलत उसके चरणों पर निछावर करनेके लिए बेचैन हैं।

अप्सराके होठों पर एक मुसकान दौड़ गई—मुसकान क्या दौड़ गई, उस अपार जन-समूहके हृदयों पर बिजली-सी कसक गई। कुछ सोचते ही उसका हृदय भावावेशसे उछलने-सा लगा। उसे मानो सम्हालनेके लिए उसका एक हाथ उसके वक्ष पर जा लगा। दबी हुई सत्कारकी एक पैनी ध्वनि उस जन-समूहके मुखसे निकलकर आकाशको बेध गई।

अप्सराने माइक-यंत्रको अपने होठोंके पास खिसकाकर अपने प्रेमियों को सम्बोधित किया। "मैं आज..."

उपस्थित जनोंके कानोंमें हज़ार बोतलोंका नशा-भरा अमृत बरसने लगा; "मै आज कितनी सुखी हूं! इस प्रेमकी भिखारिनको आपने अपने प्रेमका जो अनुपम दान दिया है; उससे मैं कभी भी उऋण नहीं हो सकती। दानसे उऋण होनेका कोई प्रश्न भी नहीं होता। जी चाहता है; आप लोग जितने यहाँ पधारे हुए हैं उतने ही रूप रखकर आपमेंसे हरेककी मदभरी आँखों, रस भरे होठोंको चूम लूँ। पर मैं विवश हूँ; मेरा शरीर एक ही है। फिर भी मैं इसका कुछ उपाय करूँगी। मैं आपकी कितनी अनुगृहीत हूँ! आज मैं कितनी सुखी हूँ! स्वर्ग लो—" अप्सराने अपनी जीभ दाब ली। वह कहने जा रही थी कि स्वर्गलोकमें तो वह कठिनाईसे पाँच-सात देवताओंका ही ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर पाई थी। बात सम्हालकर उसने कहना जारी रक्खा—"स्वर्गलोक की अप्सराएं भी इतनी सुखी न होती होंगी। लेकिन मेरा भी सुख अभी अधूरा है। मैं चाहती हूँ कि एकान्तमें, अलग-अलग आपसे मिलकर आपका सम्पर्क प्राप्त करूँ। पन्द्रह वर्ष मैं इस नगरीमें रहना चाहती हूँ। पाँच-पाँच मिनटका भी एकान्त सम्पर्क यदि मुझे आपका मिल जायगा तो मैं इन पन्द्रह वर्षोंमें आप सबका निकटतम परिचय पा लूँगी। या आप लोग यों ही खुली सभामें एक साथ दूर बैठे-बैठे मुझे अपनी आँखें तरसाने देना चाहते हैं?"

अप्सराने चुप होकर एक दौड़ती हुई दृष्टि सारी सभा पर डाली।

"एकान्तमें—अलग-अलग!" की रलीमिली पुकार असंख्य-कण्ठोंसे एक साथ फूट पड़ी।

"तो फिर आइए! आप लोग अलग-अलग, एक-एक करके मुझे अपने दर्श-पर्शसे कृतार्थ कीजिये।" अप्सराने कहा और उठकर अपने भवन के एकान्त कक्षकी ओर चल दी।

उसकी उठने और चलनेकी चेष्टाओंसे बिजलियोंकी दस हज़ार दोधारियाँ उस जन-समूहमें कौंध गईं ! वह चली । जन-समूह उसके पीछे-पीछे उमड़ चला !

अप्सराने भवनमें प्रवेश किया । द्वार पर आई हुई भीड़को द्वारपालने रोका—"आप लोग अलग-अलग, एक-एक करके भीतर जाइए ।" उसने आदेश दिया ।

"हाँ भाई, अलग-अलग—एक-एक करके" भीड़के पहले आदमीने अपने पीछेवालोंको रुकनेका आदेश देते हुए आगे क़दम बढ़ाया ।

"अलग-अलग—एक-एक करके !" भीड़के प्रत्येक व्यक्तिने अपने पीछे आने वालोंको लक्ष्य करके कहा; लेकिन किसीके पैर रुके नहीं । वास्तवमें उनमेंसे प्रत्येक अलग-अलग, एक-एक करके ही आगे बढ़ रहा था !

द्वारपालका सिर दीवारसे टकराकर पिस गया । नर्मदा-भवनके सारे द्वार-कपाट टूट गये । अप्सराकी हड्डी-पसली-मांसका, नर्मदा-भवनकी किसी भी ईंटका कहीं नाम-निशान न रह गया ।

अगले दिन कार्पोरेशनकी विज्ञप्तिमें बताया गया कि जब तक सरकारी सशस्त्र पुलिस उस असाध्य भीड़को तितर-बितर करनेके लिए घटनास्थलपर पहुँचे-पहुँचे; तब तक ग्यारह हज़ारसे ऊपर व्यक्ति उस भीड़में दबकर मर चुके थे और बादमें सात व्यक्ति पुलिसकी गोलियोंसे मरे और डेढ़ सौ घायल हुए ।

अप्सराको अपना फूल जैसा सुन्दर पार्थिव शरीर नष्ट होनेका दुःख तो कम ही हुआ; लेकिन अपने आशा भरे अरमानोंके मिटनेका बहुत बड़ा आघात उसके हृदयको पहुँचा ।

स्वर्गलोकको वापस पहुँचकर उस अप्सराने अप्सरा-समाजमें कहा :

"मनुष्योंमें प्रेमका भाव तो बहुत प्रबल है; लेकिन प्रेमकी पात्रता उनमें बिलकुल नहीं है। हम लोगोंका अभी वहाँ जाना सुरक्षित नहीं है।"

× × ×

और मनुष्यकी प्रेमकी पात्रताकी यह बात क्या उसकी अन्य सभी प्रकारकी पात्रताओं पर भी लागू नहीं होती ?



# कलकी बात

आगरेकी कालेज रोड पर, जहाँ रेलवे लाइन सड़कके नीचेसे जाती है, कालेजके लड़कों-लड़कियोंकी अक्सर चहल-पहल हो जाती है। कुछ दिन हुए एक शाम उसी जगह एक नई मूर्ति दिखाई दी। विशेष आकर्षक, क़ीमती सज-धजमें सजी हुई यह नवयुवती सचमुच विशेष रूपवती थी। एक अधेड़ स्त्रीके साथ बात करती हुई वह उस सड़कके लगभग एक फर्लांग लम्बे टुकड़ेके बीच इधर-से-उधर तक चहलक़दमी कर रही थी। सड़क पर खड़े या टहलते हुए लोगोंका ध्यान आकृष्ट करनेके लिए यह काफ़ीसे अधिक था।

उस तरुणीका यह स्वच्छन्द वायुसेवन घंटे-पौन घंटे तक चलता रहा। अनेक जिज्ञासा, प्रशंसा और विविध श्रेणीकी मुग्धतासे भरी आँखोंकी वह केन्द्रस्थली बन गई। सड़कके जितने हिस्से पर वह टहल रही थी, उसके दक्षिणी सिरे पर यमुनाकी ओर जानेवाली सड़क पर एक ख़ूबसूरत-सी कार खड़ी हुई थी। सूर्यास्त होते ही उसी कार पर सवार होकर वह यमुनाकी ओर चली गई।

दूसरे दिन सूर्यास्तसे एक घंटा पहले वही कार आकर फिर कालेज रोडके उसी चौराहे पर रुकी और उसी स्त्रीके साथ उतरकर वही तरुणी फिर पिछले दिनकी भाँति वहीं टहलने लगी।

दूसरे युवक-युवतियोंके आकर्षणकी ही नहीं, कौतूहलकी भी सामग्री वह बन गई!

एक-दो दिनका नहीं, तरुणीका यह नित्य प्रतिका नियमित कार्यक्रम बन गया। उसी अधेड़ स्त्रीके साथ टहलती हुई वह बात करती रहती। अपनी ओर उठी हुई आँखोंका वह प्रायः एक बहुत हलकी मुसकानके साथ

आँखों ही आँखोंमें अभिवादन कर लेती और उनकी टोहके लिए विशेष सतर्क और सावधान जान पड़ती।

वह सब लोगोंकी खुली चर्चाका विषय बन गई। कुछ लड़कियोंने उसके पीछे-पीछे टहलकर उसका मर्म लेनेका प्रयत्न किया पर उस अधेड़ स्त्रीके साथ उसकी बातचीतसे कोई कामकी बात वे न पा सकीं; क्योंकि उनकी बात व्यक्तिगत न होकर कुछ व्यापक समस्याओं पर वाद-विवाद के रूपमें होती थी। वह किसी कालेजमें नई भरती हुई छात्रा नहीं थी और न किसी प्रोफ़ेसरकी ही लड़की थी, यह तीसरे ही दिन पता लगा लिया गया था।

तब फिर वह कौन है और यहाँ इस तरह टहलने क्यों आती है, यह एक हद तक नवयुवकोंके लिए एक परेशानीका-सा प्रश्न हो उठा!

चौथी शाम उस तरुणीके चले जाने पर छात्रावासके लॉनमें नवयुवकोंकी एक 'इनफ़ार्मल एमरजेंसी मीटिंग' जुड़ी।

"वह कोई आगरेमें आई हुई नई वेश्या होगी।" कुछ नवयुवकोंकी राय हुई।

"वह किसी नई रोशनीके सेठकी लड़की हो सकती है। उसे किसी उपयुक्त प्रेमीकी खोज होगी।" कुछका अनुमान था।

"किसी फ़िल्म कम्पनीकी रिप्रेज़ेंटेटिव भी हो सकती है; भरतीके लिए नये रंगरूटोंकी तलाशमें निकली हुई।" एक सदस्यने कहा।

"सी. आई. डी. स्टाफ़की कोई जासूस भी हो सकती है; किसी मामलेकी खोजमें आई हो।" एक अन्य सदस्यकी सूझ थी।

"सीधी-सी बात है। यह एक फ़ैशनेबुल सोसाइटी गर्ल है और उसे कुछ तगड़ी रक़मकी जरूरत है।" पाँचवें नवयुवकने मानो फ़ैसला देते हुए कहा।

यह सभा काफ़ी देर तक चलती रही और इसी तरहके दर्जनों अनुमान सामने आये, पर इसमें किसी निश्चित मत पर पहुँचनेकी आवश्यकता नहीं थी—कोई बात निश्चित की भी नहीं जा सकी।

छात्रावासके अधिकारियों और प्रोफ़ेसरों तक भी यह चर्चा पहुँची। उनमेंसे भी कुछने सोचा कि उस लड़कीका रोज़-रोज़ यहाँ घूमना ठीक नहीं है, इससे लड़कोंका हर्ज होता है। उसे किसी तरह अपने टहलनेके लिए दूसरी कोई जगह चुननेकी सलाह दी जा सके तो अच्छा है।

पाँचवीं शाम दैनिक नियमके अनुसार टहलती-टहलती वह एक लम्बे लेटरबक्सके बग़लमें बैठे हुए एक खोमचेवालेके सामने पहुँचकर एकदम रुक गई। वह फलोंकी चाट बेचनेवाला आवाज़ लगा उठा था—"केला बम्बईका है, अंगूर बेदाना है।" और उसकी दृष्टि इस तरुणी पर थी।

"आप यहाँ रोज़ दूकान लगाते हैं?" उस तरुणीने एक स्निग्ध मुसकान के साथ, मानो उसका निमंत्रण स्वीकार करके, उस खोमचेवालेसे बातचीत प्रारम्भ की।

"हाँ, बीबीजी!"

"कितनी देर?"

"यही चार बजेसे सात-आठ बजे तक।"

"तीन-चार घंटे रोज़ काम करते हैं?"

"तीन-चार घंटेमें क्या होता है बीबी जी! सारे दिन शहरमें फेरी लगाता हूँ!"

"सारे दिन! कितना कमा लेते हैं?"

"दिन-भरमें दो-तीन रुपयेके पैसे बच जाते हैं।"

"दो-तीन रुपये! बस! घरमें कितने लोग हैं?"

"बाप हैं, माँ है, एक छोटी बहन है।"

"आपकी शादी नहीं हुई?"

"नहीं सरकार अभी"—कहते-कहते वह कुछ सकुचा गया।

"शादी नहीं हुई" उसने एक गहरी स्थिर-सी दृष्टि उस व्यक्तिकी आँखोंमें डालते हुए एक मोहक-सी मुसकानके साथ कहा—"फिर भी दो-तीन रुपये तो बहुत कम हैं! आप कोई दूसरा काम क्यों नहीं करते?"

"दूसरा काम क्या करूँ हुजूर ? कहीं नौकरी करूँ तो वह भी चालीस-पचाससे ज़्यादाकी नहीं मिलेगी। उससे तो यह खोमचा ही अच्छा है।"

"आपकी आमदनी बढ़नी चाहिए" तरुणीने कुछ चिन्तनकी मुद्रामें आकर कहा—"कम-से-कम इतनी तो होनी चाहिए कि आप अच्छे कपड़े पहन सकें और अच्छा खाना खा सकें। आप नौजवान हैं, देखनेमें भी बहुत अच्छे हैं, आपका रहन-सहन भी वैसा ही होना चाहिए।"

नौजवान खोमचेवाला सचमुच सुन्दर था।

वह कुछ बोला नहीं। युवती भी थोड़ी देर चुप रही।

जितनी दूर तक इस वार्तालापकी आवाज़ पहुँच सकती थी उतने क्षेत्रके भीतर, पास और दूर रुके हुए श्रोताजन कानोंका पूरा बल लगाकर इस अत्यन्त आकर्षक बातचीतको सुन रहे थे।

"मैं आपके लिए कोई अच्छा रास्ता सोचूँगी" तरुणीने अनेक उत्सुक कानोंकी निस्तब्धता भंग की। "क्या आप आज शामको मेरे साथ मेरे घर चल सकते हैं ?"

खोमचेवाले नौजवानकी आशा और आतंकभरी आँखें उन सभी आँखोंकी ओर घूम गईं, जो उसे घेरे हुए थीं—जैसे वह उस प्रश्नका उत्तर उनसे माँगना चाहता था। वे सब लोग भी उसीका मुँह ताक रहे थे।

युवती फिर मुसकराती हुई बोली—"मैं अभी एक कामसे थोड़ी देरके लिए जा रही हूँ, आधे घंटेमें लौटूँगी। तब तक अगर आपका सौदा बिक चुकेगा तो मैं अपने साथ ही आपको ले चलूँगी।" उसने कहा और अपनी कार पर जा पहुँची। उसकी कार वापस उसी राह उस भीड़को चीरती हुई उत्तरकी ओर चली गई।

कारके अदृश्य होते ही खोमचेवालेके सारे फल बिक गये। ग्राहकोंकी उत्कण्ठा या उस खोमचेवालेके प्रति सहयोग-सहानुभूति की यहाँ व्याख्या करनेकी आवश्यकता नहीं है।

ठीक आध घंटे बाद वह लौटी और खोमचेवालेको अपने साथ कार

पर बिठाकर अपने डेरेकी ओर चल दी। देखनेवालोंने उमड़ती उत्सुकताके साथ यह तमाशा भी देखा।

अगले दिन अपने समय पर वह खोमचेवाला नियमानुसार उपस्थित था। आज उसके कपड़े साफ धुले हुए थे, फलोंकी टोकरी नई थी और उसमें फल भी पिछले दिनसे ज़्यादा थे और अधिक अच्छे थे। आज ग्राहकों, जिज्ञासुओं बल्कि मित्रोंकी भी उसके लिए कमी न थी। उनके प्रश्नोंके उत्तरमें उसने केवल इतना ही कहा:—"यह बम्बईके एक बड़े सेठकी लड़की है। इम्पीरियल होटलमें ठहरी है। बहुत अच्छी है। मुझे खूब खातिरसे खिलाया-पिलाया और बम्बई ले जाकर अच्छी नौकरी लगा देनेका वादा किया।"

कुछ लोगोंकी अधिक छेड़छाड़से तंग होकर उसने कहा—"बाबू, मैं ग़रीब आदमी हूँ और कुछ नहीं जानता। मुझे और कोई बात उसने नहीं बताई। आप लोग मुझे बहुत तंग करेंगे तो मैं कलसे यहाँ नहीं आऊँगा। मुहल्लोंमें ही बेच लिया करूँगा। अभी मैं और कोई बात नहीं जानता।"

उसकी यह धमकी काम कर गई। खोमचेवालेका उधर न आना उन्हें स्वीकार नहीं हो सकता था। कुछ लड़कोंने आगे कोई छेड़छाड़ न होनेका आश्वासन देकर उससे अनुरोध किया कि वह बराबर वहाँ आकर अपना रोज़गार करता रहे।

युवती अपने समय पर उस दिन भी आई और नियमित रूपसे वायु-सेवन करके चली गई। खोमचेवालेसे साधारण कुशलप्रश्नके अतिरिक्त उसने और बात नहीं की।

युवतीका यह क्रम तीन-चार दिन तक और चला। उसी अधेड़ स्त्रीके साथ यथावत् उसका वायुसेवन, खोमचेवालेसे स्नेह-सत्कार पूर्ण कुशल-प्रश्न और सूर्यास्तके समय प्रस्थान। सड़ककी चहल-पहल और खोमचे-वालेकी दूकानकी बिक्री बढ़ गई।

इस कथारम्भके ग्यारहवें दिन सवेरे ही लेटरबक्सके नीचे ज़मीन पर

पड़ा हुआ एक लिफाफा पाया गया, जैसे वक्सके भीतर डालते समय असावधानीसे नीचे गिर गया हो। लिफाफे पर पता था :

श्रीमती रजनी चन्द्रकला, मारफत डा० कमलकिशोर गुप्ता,

३०, अनाम रोड, जबलपुर।

भीतरका पत्र था—

प्रिय रजनी,

ममीको लिखे पत्रकी नकल तुम्हें भेज रही हूँ। इससे सब हाल जानोगी। आगरेके जिस नये मित्रकी बात मैंने इस पत्रमें की है वह एक छोटा-सा व्यापारी है, लेकिन बहुत सुन्दर और अच्छे स्वभावका है। तुम्हारे कोचवानकी लड़की सुखमतीके लिए मैं उसे उपयुक्त वर समझती हूँ। इसके मा-बाप भी बहुत भले हैं, मैं देख आई हूँ। पैसा भी यह काफी कमा लेगा। कोचवानसे बात करके लिखना तब आगे बात करूँगी। तीन-चार हज़ार रुपया लगाकर इसको अच्छा रोजगार शुरू कराया जा सकता है।

तुम्हारी,
पवित्र

इसके साथ दूसरा पत्र अंग्रेजीमें टाइप किया हुआ कार्बन कापीका था। उसका आशय इस प्रकार था :

प्रिय ममी,

आज आगरेमें मेरे ग्यारह दिन पूरे हो जायंगे और कल सुबह ही मैं दिल्लीके लिए रवाना हो जाऊंगी। आगरेमें मुझे कोई ज़िन्दगी नहीं दीख पड़ी। दस दिन तक बराबर मैंने आगरेके एक सभ्य, शिक्षित, क्षेत्र पर निगाह रखी। एक व्यक्तिको छोड़ किसीने मुझसे बात तक नहीं की। इन लोगोंमें प्रेम और खातिरदारीका माद्दा न हो, यह बात नहीं है। आँखों ही-आँखोंमें इनमेंसे अधिकांशका अभिवादन मुझे मिला। मैंने उनके अभिवादनका पूरा जवाब दिया। लेकिन उस अभिवादनके आगे उनमें-

से किसीको कोई वात कहनी नहीं थी। कहनेको उनके पास कोई शब्द न होते हुए भी इनका बार-बार मुझे देखना अक्सर भद्दा और बुरा मालूम होता था। जिससे कुछ कहना नहीं है, उसे बार-वार देखनेसे क्या मतलब हो सकता है, मैं वादमें समझी। इन लोगोंमें भलमनसाहतकी कमीसे साहसकी कमी और साहसकी कमीसे भलमनसाहतकी कमी है। मैंने देखा कि मर्दों और नौजवानोंकी वात तो दूर, पढ़ी-लिखी लड़कियों और औरतों तकमेंसे किसीने मुझसे एक बात नहीं पूछी। क्या यह आश्चर्यकी वात नहीं है ? अपनी तरफसे किसीसे वात न करनेका प्रयोग मैं इस दौरेमें निभा रही हूँ। इससे बहुत कुछ देखनेको मिल रहा है।

पिछली शाम मैंने अपना टी. आर. ए.* पहन लिया। मेरे लिए अपनी सैरका एक घंटा बिताना भी वहाँ कठिन हो गया। वे लोग मेरे बारेमें कैसी-कैसी धारणाएं और कल्पनाएँ रखते हैं, मैं सहन नहीं कर सकी। कितनी गन्दी और हास्यास्पद ! उन सभी भावनाओंमेंसे जिनपर मैं कुछ आरामके साथ टिक सकती थी, उनका छांटना उस ढेरमेंसे कितना कठिन था ! मेरी जगह यहाँ तुम होती तो इन विचारोंको शायद कुछ धीरजके साथ देख सकतीं और अपनी शांत सहनशीलताके कारण तुम्हें शायद उनमें मनोरंजनकी भी सामग्री काफी मिलती; लेकिन मुश्किल यह है कि अपनी उम्रके कारण तुम इन लोगोंके ऐसे विचारोंका निशाना न बनतीं।

आगरेमें कोई भी ऐसा व्यक्ति मुझे नहीं दीखा जो हमारी 'फ्रेंड्स लीग' की सदस्यताके लिए ठीक हो। यहाँके नौजवान मर्दोंमें औरतोंको और औरतोंमें मर्दोंको हौआ समझनेका माद्दा अभी काफ़ी वाक़ी है। आजादी आनेका, देशमें गणतंत्र वननेका इनपर कोई असर नहीं पड़ा। मेरा जो एक

---

***सम्भवतः थौट रीडिंग एपरेटस, ऐसा यंत्र जिसके द्वारा दूसरोंके विचार पढ़े जा सकें।**

मित्र आगरेमें बना है वह और सब तरहसे ठीक है लेकिन इतना शिक्षित नहीं है कि हमारी संस्थाकी शर्तें पूरी कर सके। उसकी शिक्षाके बारेमें वहाँ पहुँचकर बात करूँगी। पैसे और सामाजिक सम्मानकी दृष्टिसे भी वह बहुत पीछे है। यहाँके लोगोंने उसके रोजगारमें उसकी काफी मदद करनी शुरू कर दी है, लेकिन जिस भावसे उन्होंने यह किया है, वह अधिक सराहनीय नहीं है। उनका सहयोग उसके साथ कितने दिन चलता रहेगा, यह अनिश्चित है।

तुम्हारी प्रिय,
पवित्र

**सेवा में :—**

आशा कुलकर्णी, ब्रांच सेक्रेटरी, निउ एरा फ्रेंड्स लीग, सिक्स्थ निउ रेस लेन, मालाबार, बम्बई।



# सामयिक सुधार

स्वर्गलोककी तीन आत्माओंने निश्चय किया कि स्वर्गलोकमें रहते रहते उनका जी भर गया है और अब कुछ दिनोंके लिए उन्हें शरीर धारण कर संसारमें रहना चाहिए।

वे तीनों एक 'वर्थ सिक्योरिंग एजेंसी' (जन्म दिलानेवाली कम्पनी) के दफ़्तरमें पहुँचीं। 'लिपिकाज़ एण्ड कम्पनी लिमिटेड' के प्रवन्धमें इस एजेंसीका काम वहुत अच्छा चल रहा था।

एजेंसीका बुकिंग आफिसर नया ही आया था। उसने इन तीनों ग्राहकोंका समुचित सत्कार किया और यथानियम, उपहारगृहमें ले जाकर उपहारोंकी तीनों अलमारियां खोल दीं।

एक अलमारीमें परम स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ भरे थे, दूसरीमें क़ीमती रत्न जगमगा रहे थे और तीसरीमें मानव-प्रकृतिके सभी स्वभाव और गुण सजाये हुए थे।

तीनों आत्माएँ अपनी-अपनी पसन्दकी अलमारियोंके सामने पहुँचकर अपनी रुचिकी चीज़ें छांटने लगीं। उन तीनोंकी पसन्द अलग-अलग थी।

इन अलमारियोंका मुख्य उद्देश्य जन्म चाहनेवाली आत्माओंकी रुचि का परीक्षण करना था, और जबसे अँगरेज़ी भाषाका प्रचार बढ़कर वह इस भूमंडलकी प्रधान भाषा हो गई थी तबसे इन अलमारियोंका नाम 'टेस्ट टैस्टिंग एलमाइराज़' (Taste Testing Almirahs) रख दिया गया था। जन्मार्थी आत्माओं के लिए उचित योनि और परिस्थितियोंके चुनावमें इन अलमारियोंसे बड़ी मदद मिलती थी।

बुकिंग आफिसरने तीनों आत्माओंके लिए तीन अलग-अलग योनियोंके शरीर 'बुक' (तय) कर दिये। जिस आत्माने खाद्य पदार्थ पसन्द किये थे

उसके लिए एक पशुका, जिसने रत्न पसन्द किये थे उसके लिए मनुष्यका और जिसने गुण पसन्द किये थे उसके लिए देवताका शरीर 'रिज़र्व' करा दिया और उन भावी शरीरोंके जन्मदाता माता-पिताओंके नाम अपने रजिस्टरमें दर्ज कर लिये।

यथा समय तीनों आत्माओंने इस संसारमें अपने-अपने शरीरोंमें जन्म लिया। जिसे पशु-योनि दी गई थी उसके लिए अभीष्ट यह था कि वह जी भर कर जिह्वाका भोग भोग ले, क्योंकि उसकी आत्माकी बुद्धि भोग-बुद्धि थी। जिसे मनुष्य-योनि दी गई थी उसके लिए अभीष्ट था कि वह जी भर कर सांसारिक लेन-देन कर ले—उसकी बुद्धि व्यवसाय-बुद्धि थी; और जिसे देवताकी योनि दी गई थी उसके लिए अभीष्ट था कि वह जी भर कर सद्गुणोंका प्रयोग और उनसे प्राप्त होने वाली दैवी षट्-सम्पदाओंका सुख भोगे। उन तीनोंके पिछले जन्मोंके कर्म ऐसे ही थे।

लेकिन ये तीनों आत्माएँ पूर्व जन्मकी मनुष्य शरीरमें रही हुई आत्माएँ थीं, इसलिए इस वार भी मनुष्य शरीर पानेवालेने तो अपनी व्यवसाय-बुद्धि द्वारा अपना अभीष्ट काम करना प्रारम्भ कर दिया परन्तु शेष दो आत्माएँ अपने शरीरोंका कुछ भी उपयोग न कर सकीं।

पशु-शरीरधारी आत्माको जिस तरहके खान-पान और इन्द्रिय-भोगकी प्रवृत्ति पिछले जन्मसे पड़ी हुई थी उस तरहका खान-पान और भोग वह इस नये शरीरमें नहीं कर पाती थी। पिछले जन्ममें उसे खाने-पीनेके शौक़के साथ-साथ नृत्य और संगीतका भी कुछ प्रेम था; लेकिन अब इस जन्ममें वह अपने बेसुरे गले और बेतुके चार पैरोंके कारण नाचने-गानेसे विलकुल मजबूर थी। उसे अपने पिछले जन्म और स्वर्गलोकके निवासकी विलकुल याद नहीं थी, फिर भी उसकी पिछली पड़ी हुई आदतें और प्रवृत्तियाँ उसके अंग-संग थीं और शरीर धारण करने पर उनका उभारमें आना स्वाभाविक था। एक बहुत रहमदिल और अमीर जमींदारकी कुतियाके पेटसे जन्म पानेके कारण यद्यपि इस आत्माको खाने-पीनेकी विशेष सुविधा

थी और घरमें बननेवाली सभी एकसे एक स्वादिष्ट चीज़ें उसे खानेको मिलती थीं; फिर भी गाने-नाचनेकी जो थोड़ी-सी रुचि उसमें जाग उठी थी उसकी पूर्ति न होनेके कारण यह आत्मा बहुत दुखी होने लगी। घरके लोगोंका आदमियोंके प्रति एक तरहका और चौपायोंके साथ दूसरी तरहका, कुछ निरादर-पूर्ण व्यवहार भी उसके मनमें एक अनसमझी-सी पीड़ाकी तरह खटकने लगा था। इन बातोंका उसके मन पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि जल्द ही उसने खाना-पीना भी छोड़ दिया और कम-ज़ोर होने लगी; और अपने जीवनकी तीसरी शरद ऋतुके ज़ोर पकड़ते ही उसने शरीर त्याग दिया।

उधर देवता योनिमें आई हुई आत्माका और भी बुरा हाल हुआ। अपने नये शरीरमें देवताओंके बीच जन्म पाकर उसने देखा कि जिन गुणोंको वह बहुत पसन्द करती थी और अपने भीतर अधिकाधिक जगाना चाहती थी, वे सब बहुत बढ़ी हुई मात्रामें यहाँके निवासियोंमें पहलेसे ही मौजूद थे। किसीके लिए त्याग, सेवा, दया, क्षमा, उपकार आदि करनेकी वहाँ रत्ती भर भी गुंजाइश नहीं थी। वह दूसरोंके लिए नहीं, उल्टे दूसरे लोग उसके लिए त्याग, सेवा, दया, क्षमा आदि कर जाते थे। वे लोग इस बेचारी आत्माके मुकाबले बेहद अधिक भले थे। इस बेचारी आत्माका सारा उत्साह ठंडा पड़ गया और अपनी शक्तियोंको उपयोगमें लाने और लगानेका उसके लिए कोई अवसर ही न रह गया। उसका दिल एकदम टूट गया और उसका शरीर पशु-शरीरधारी आत्मासे भी पहले छूट गया।

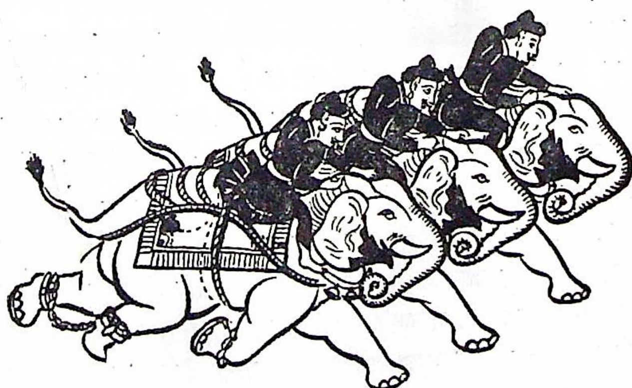
स्वर्गमें वापस पहुँचकर इन दोनों आत्माओंने 'बर्थ सिक्योरिंग एजेंसी' के विरुद्ध 'लिपिकाज एंड कम्पनी' पर दावा कर दिया कि उनकी एजेंसीकी असावधानीसे उनके पिछले जन्मका कोई भी उपयोग न हो सका और उनकी इतनी शक्ति और समय व्यर्थ ही नष्ट हुआ।

स्वर्गलोकके अधिकारियोंने जब मामलेकी जाँच की तो पता चला कि गलती सचमुच उस 'बर्थ सिक्योरिंग एजेंसी' की ही थी और इसका कारण

यह था कि उस समय जो बुकिंग आफीसर ड्यूटी पर था वह नया नया ही उस पद पर नियुक्त हुआ था और उसे योनि-निर्वाचनके नियमों और उनके प्रयोगकी पूरी जानकारी नहीं थी।

इस दुर्घटनाके फल-स्वरूप उसी समय एक आफीशल सर्कुलर (राजकीय गश्ती पत्र) बर्थ सिक्योरिंग एजेंसीके सभी शाखा-कर्मचारियोंके नाम भेजा गया कि किसी आत्माके लिए नये जन्मका प्रबन्ध करते समय उसकी पूर्वजन्मकी योनिको बदलनेका किसी कर्मचारीको अधिकार नहीं हैं; अलबत्ता वह आवश्यकतानुसार उसी योनिके अन्तर्गत पिछले जन्मके नर को मादा और मादा को नरका शरीर दे सकता है। जिन बिरली विशेष दशाओं में पूर्ण योनि-परिवर्तनकी आवश्यकता होगी, उनके सम्बन्धमें ऊंचे अधिकारियोंकी ओरसे स्वयं ही आदेश जारी किये जायँगे।

उस समयसे इस विज्ञप्तिके विपरीत कोई वैसी दुर्घटना घटनेकी सूचना अब तक नहीं मिली।



# दण्ड-विधान

उन दिनों मेरा निवास मंगल ग्रहमें था। पृथ्वी लोकके समयके हिसावसे यह चर्चा पिछली शताब्दीके अन्तिम चतुर्थांशके भीतरकी है।

एक सुबह संवाद-समितिने एक बड़ी ही सनसनीपूर्ण खबर ग्रह-मण्डल के घर-घरमें पहुँचा दी। अयूशा नामके नगर (मंगल-ग्रहकी भाषाके शब्दोंको भूमण्डलकी भाषाओंके शब्दोंमें ठीक-ठीक उच्चारित करना असम्भव है, फिर भी उस नगरके नामको आप अपनी भाषाके अयूशा शब्द द्वारा ही कुछ-कुछ उच्चारित कर सकते हैं) के एक व्यक्तिने अपने एक पड़ौसीकी हत्या कर दी थी।

यह समाचार इतना भयंकर और आश्चर्यजनक था कि संवाद-समितिने इसके वाद कोई दूसरा समाचार नहीं सुनाया। सभी लोग अपने-अपने रेडियो (वह रेडियोसे मिलता-जुलता यंत्र होता है और प्रत्येक घरका एक आवश्यक अंग होता है। सारे ग्रह-मण्डलमें होने वाले स्वरोंको घरका मालिक उस यन्त्र-द्वारा इच्छानुसार सुन सकता है और इसी यन्त्र-द्वारा जहाँ जो चाहे समाचार भेज सकता है) बन्द करके इस समाचारकी आपसमें चर्चा करनेके लिए सड़कों पर निकल आये। हम लोगोंने केवल किंवदन्तियोंमें ही सुना था कि लाखों वर्ष पहले हमारे ग्रहके निवासी इतने असभ्य और बर्बर थे कि एक दूसरेकी हत्या तक कर डालते थे। उन दिनों ग्रह-मण्डलमें विज्ञानकी जानकारी नहीं थी, लोग छोटी-छोटी बातोंके लिए आपसमें लड़ाई-झगड़े किया करते थे। वे इतने अज्ञानी थे कि अपने शरीरों को भी वरावर स्वस्थ नहीं रख पाते थे और अक्सर बीमार पड़ जाया करते थे। वे 'इयल्ला' (ईश्वर) नामकी किसी कल्पित वस्तुमें विश्वास करते थे। उस युगकी अज्ञानताओंका वहुत बड़ा कारण यह अन्धविश्वास ही था।

अयूशा नगरके विमोकुआ नामक जिस व्यक्तिने अपने पड़ौसीकी हत्या कर दी थी, उसके रेडियो सेटके बग़ल वाली मेज़, ग्रह-मण्डलके दूर-पासके कोनेसे आये हुए हत्यारे विमोकुआके प्रति समवेदना और आश्चर्यके लिखित सन्देशोंसे भर गई।

शासनकी ओरसे पहला दल डाक्टरोंका उसके घर पहुँचा। डाक्टरोंका अस्तित्व उस ग्रहमें मनुष्योंकी बीमारियाँ दूर करनेके लिए नहीं—क्योंकि मनुष्यकी बीमारियोंका अस्तित्व वहाँसे सहस्राब्दियों पहले मिट चुका है—बल्कि स्वास्थ्य और शक्तिकी सम्भावनाओंको प्रयोगमें लाने और बीमार पशुओंकी चिकित्सा करनेके लिए है। डाक्टरोंने विमोकुआके मस्तिष्क और शरीरका निरीक्षण किया। घृणा और क्रोधके उद्वेगजनक कुछ रंगोंके अतिरिक्त कोई और विषाक्त वस्तु उसके रक्तमें नहीं पाई गई।

सूर्यतापके कुछ चुने हुए रंगोंकी किरणें उसके शरीरमें पहुँचाई गईं और विमोकुआका वह विकार दूर हो गया।

विमोकुआको उसके कार्यालयसे एक मासकी छुट्टी दे दी गई। मामले की जाँच सरकारी अधिकारियों-द्वारा प्रारम्भ हुई। पहाड़ियोंके बीच बिररी बसी एकान्त बस्ती इलक्कुरीजामें विमोकुआको रखा गया। इस हत्याका मोटे तौर पर जो प्रत्यक्ष कारण था वह केवल इतना ही था कि विमोकुआकी पत्नी पड़ौसके युवक उरस्सासे, जिसकी अब विमोकुआ ने हत्या कर दी थी, प्रेम करने लगी थी और उन दोनोंका प्रेम-सम्पर्क स्थापित भी हो गया था। नियमानुसार उरस्सा और विलाशी (विमोकुआ की पत्नी) को अपने प्रेमको व्यावहारिक रूप देनेके लिए दो वर्ष ठहरना चाहिए था। विलाशी और विमोकुआका विवाह हुए अभी एक वर्ष ही हुआ था और लोकनियम तथा राजनियमके अनुसार उसकी यह ज़िम्मेदारी थी कि वह वैवाहिक जीवन प्रारम्भ होनेसे तीन वर्ष तक किसी भी नये प्रेमीसे प्रेम-सम्पर्क स्थापित न करती—यह आत्म-संयम नैतिक दृष्टिसे

उस लोकमें आवश्यक समझा जाता था। फिर भी ऐसे अपराधका निश्चित दण्ड यही था कि उरस्सा और विलाशीको छह वर्ष तक—नियमितसे दूने समय तक—किसी तीसरे प्रेमीसे प्रेम-सम्बन्ध स्थापित करनेकी आज्ञा न होती और उन दोनोंमें से जो भी इस आज्ञाका उल्लंघन करता उसको उन अपराध-नगरियोंमेंसे किसी एकमें आजीवन निवास करना पड़ता जिनमें एक महीनेसे अधिक किसी भी प्रेमीसे प्रेम-सम्पर्क—यहाँ तक कि बोल-चाल भी—रखनेकी अपराधियोंको आज्ञा नहीं है और उतने समयके पश्चात् दूसरा साथी ले लेना उनके लिए अनिवार्य है। प्रेम-सम्बन्धी अपराधोंके लिए यह दण्ड उस ग्रहमें सबसे अधिक कठोर और अवांछनीय समझा जाता है और यह उन लोगोंके लिए है भी अत्यन्त असह्य। ये अपराध-नगरियाँ एक तरहके बलात्कारपूर्ण वेश्यालयों-जैसी कही जा सकती हैं!

विलाशी और उरस्साके इस असामयिक प्रेम-सम्पर्कसे विमोकुआके हृदयमें एक या दोनोंके प्रति क्रोध एवं घृणाका उत्पन्न होना स्वाभाविक था; लेकिन उसकी प्रतिक्रियाका हत्याके कार्य-रूपमें प्रकट होना अत्यन्त अस्वाभाविक था। अवश्य ही इस अमानुषिक (वहाँ भी मनुष्यजातिके लोग बसते हैं) प्रेरणाका कारण कहीं और है और हत्याका उत्तरदायित्व किसी एक व्यक्तिपर न होकर समाजके कुछ अधिक व्यक्तियों पर है, राज्याधिकारियोंने सोचा; और विमोकुआके साथ-साथ उसके साथियों और परिचितों-सम्बन्धियोंके भी जीवन-इतिहासकी जाँच-पड़ताल आरम्भ कर दी।

लगभग पाँच सप्ताह बाद इस जाँचके फलस्वरूप उस हत्याका जो रहस्योद्घाटन हुआ उसकी लिखित विज्ञप्ति एक दिन प्रातः संवादके समय प्रत्येक घरकी रेडियो सेटके बग़ल वाली मेज़ पर पाई गई। उसमें लिखा था।

"पृथ्वीलोकके 'मृत्यु-दण्ड' नामक अमानुषिक दण्ड पाये हुए तीन मानव प्रेतोंने किसी तरह हमारे ग्रहके भी कुछ व्यक्तियोंसे अज्ञात सम्बन्ध स्थापित

कर लिया था और वे प्रेत पृथ्वीके साथ-साथ मंगलवासियोंको भी हत्या करनेकी प्रेरणा बराबर दे रहे थे। हत्या और मृत्यु-दण्डकी घटनाएँ पृथ्वी लोककी प्रचलित और नित्य प्रतिकी घटनाएं हैं। अनुसन्धानसे पता लगा है कि वहाँ मृत्युदण्ड पाने वाले ५२ प्रतिशत 'अपराधी' शरीरसे मुक्त होने पर दूसरे जीवित मनुष्योंको हत्या करनेकी प्रेरणा देनेका प्रयत्न करते हैं और उनमेंसे प्रत्येक औसतन तीन व्यक्तियोंको किसी-न-किसीकी हत्या करनेकी प्रेरणा सफलतापूर्वक दे देता है। हमारे ग्रहके पाँच व्यक्तियोंको ये पृथ्वी के मानव प्रेत प्रभावित कर पाये हैं और उनमेंसे सबसे दुर्बल-मन व्यक्ति विमोकुआ उनका पूरा शिकार बन पाया है। अन्य चार व्यक्ति निसज्जा, विगारो, सुयक्का और सुयक्काकी पत्नी उद्घाके मस्तिष्कोंमें भी इस प्रेरणा के धीरे-धीरे स्पष्ट होते हुए रंग पाये गये हैं। ग्रह-शासनने निश्चित किया है कि इन पाँचों 'प्रभाव-ग्रस्त' व्यक्तियोंको मानव वस्तियोंसे दूर अलग एक छोटी-सी वस्ती बनाकर जीवन पर्यन्त रखा जायगा और इनकी इच्छानुसार सभी आवश्यक सामग्रियाँ शासन अपने व्ययसे इन्हें देगा। मृत्युके बाद इन्हें पृथ्वी या किसी अन्य ग्रहमें जन्म लेनेके लिए विवश होना पड़ेगा; क्योंकि शासन, ग्रहकी सुरक्षाकी दृष्टिसे, इस ग्रहमें उन्हें शरीर धारण करनेकी सुविधाएं नहीं देगा।"

---

# जगदम्बाके आँसू

"गौरा-पार्वती एक रात दुनियाकी 'चिन्ताको' निकले।"—मेरी माँ गौरा-पार्वती यानी महादेव-पार्वतीकी चिन्ता-कथाओंको प्रारम्भ करती हुई कहतीं और उसके आगे बतातीं कि किस प्रकार तरह-तरहके दुखियोंको वे देखते, पार्वतीजी अपने हाथकी छिंगुनी (सबसे छोटी उँगली) ज़रा-सा चीरकर एक बूंद खून हर दुखियापर टपका देतीं और उसका दुःख दूर हो जाता।

उन पुराने, कथा-भरी रातोंके दिनोंको बीते पच्चीस वर्ष हो चुके थे और तबसे 'गौरा-पार्वती' की 'चिन्ताओं' का मुझे कोई समाचार नहीं मिला था। मेरी माँ इस समय मेरे पास नहीं हैं और न मेरे घरमें बच्चे ही हैं, जिन्हें 'गौरा-पार्वती' की 'चिन्ताओं' की कोई आवश्यकता हो या उनमें कोई रुचि हो। फिर भी पिछली रात मुझे मालूम हुआ है कि 'गौरा-पार्वती' की 'चिन्ताएँ' अभी तक जारी हैं और उनकी चिन्ताओंका जो नया समाचार मुझे मिला है, वह इस प्रकार है :

गौरा-पार्वती एक रात दुनियाकी चिन्ताको निकले। दुनियाके सब लोग सोये हुए थे और वे सबको ध्यानसे देखते हुए आसमानके रास्तेसे चले जा रहे थे। चलते-चलते उन्हें एक पेड़से किसीकी दुःख-भरी आवाज़ सुनाई दी।

गौरा-पार्वती ज़रा और नीचे उतरकर पेड़की चोटीके पास आ गये। उन्होंने सुना कि एक चिड़िया बड़ी दर्द-भरी आवाज़में कराह रही है।

पार्वतीजीने गौराजीसे पूछा—"यह चिड़िया इतनी रातको किस दुःखसे चिल्ला रही है? पक्षी तो साँझ होते ही सो जाया करते हैं।"

गौराजीने कहा—"अपने बच्चेके लिए दाना चुगते-चुगते इसे देर

हो गई। अँधेरा हो जानेके कारण यह अपने पेड़ तक नहीं पहुँच पाई और रास्तेमें इसी पेड़ पर रुक गई है। यह अपना पेड़ भूल गई है और बच्चेके वियोगमें दुःखी हो रही है।"

पार्वतीजीने अपनी छिंगुनीको ज़रा-सा चीर कर एक बूंद ख़ून उस चिड़िया पर छिड़क दिया और वह फुर्रसे उड़कर सीधे अपने पेड़पर जा पहुँची और अपने बच्चेसे लिपट गई।

आगे चलकर एक शहरकी सड़कके किनारे उन्हें एक आदमी कराहता हुआ पड़ा मिला। पार्वतीजीके पूछने पर गौराजीने उन्हें बताया कि यह एक भिखारी है और कोढ़-रोगसे इसका शरीर गल रहा है। इसे बहुत कष्ट है। पार्वतीजीने उसपर भी एक बूंद खून छिड़क दिया और वह अच्छा हो गया।

आगे चलकर इसी तरह पार्वतीजीने एक रोती हुई औरत पर ख़ून छिड़ककर उसके मरे हुए बच्चेके पास स्वर्गमें आने-जानेका रास्ता उसके लिए खोल दिया।

इसके बाद गौरा-पार्वतीकी 'चिन्ता' की उस रातकी मुख्य घटना आई। एक अच्छे-से घरमें एक सजी-सजाई सेजपर पड़ा हुआ एक नौजवान आदमी बुरी तरह छटपटाता और करवटें बदलता हुआ कराह रहा था और उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बह रही थी।

पार्वतीजीने गौराजीसे पूछा—"गौराजी, इस लड़केको क्या दुःख है?"

गौराजी कुछ मुसकराये और बोले—"पार्वतीजी, इसे एक लड़कीसे प्रेम हो गया है, उसीके वियोगमें यह दुःखी है।"

"दुःखी है!" पार्वतीजीने कुछ आश्चर्यके साथ कहा—"प्रेम हो गया है तो बहुत अच्छी बात है; लेकिन इससे इसे दुःख क्या है?"

गौराजीने हँसकर कहा—"प्रेममें भी कभी-कभी दुःख हो जाता है। इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं है।"

पार्वतीजीकी समझमें कुछ न आया। फिर भी उन्होंने अपनी छिगुनी चीरकर एक बूंद खून उस पर टपका दिया।

युवकका रोना-कराहना इससे बन्द न हुआ। पार्वतीजीको बड़ा आश्चर्य हुआ। उनके खूनकी बूंद अभी तक कभी भी बेअसर साबित न हुई थी।

पार्वतीजीने झुंझलाकर दूसरे हाथकी भी छिगुनी चीरकर दस-पाँच बूंदें उसके ऊपर छिड़क दीं; लेकिन युवककी दशामें कोई परिवर्तन न हुआ।

अब तो पार्वतीजीके आश्चर्यका कोई ठिकाना न रहा। वे हक्की-बक्की-सी गौराजीके मुँहकी तरफ़ ताकने लगीं। पार्वतीकी यह दशा देखकर गौराजी खिलखिलाकर हँस पड़े।

"तुम्हारा एक बच्चा इस तरह दुःखमें तड़प रहा है और तुम्हें हँसीकी सूझ रही है!" पार्वतीजीने झुंझलाकर कहा—"उस कलके कलयुग छोकरेका असर क्या तुम्हारे ऊपर भी आ गया है? तुम संसार भरके पिता होकर अपने एक बच्चेके दुःखके सामने इस तरह हँस रहे हो! या तो तुमने मुझे इस बच्चेका दुःख ठीक-ठीक नहीं बताया या अपनी किसी शक्तिसे मेरे खूनको व्यर्थ कर दिया है। जल्द बताओ..।" कहते-कहते पार्वतीजीका गला भर आया।

"पार्वतीजी, तुम नाहक़ घबरा रही हो। इसमें इतना दुखी होनेकी बात नहीं है। पहले पूरी बात समझ लो। इस लड़केको एक ऐसी लड़कीसे प्रेम हो गया है, जो इससे प्रेम नहीं करती।" —गौराजीने कहा।

"तो इसमें इस लड़केके लिए कष्टकी बात क्या है? यह उससे प्रेम करता है, तो करता रहे। वह इससे प्रेम नहीं करती, तो न करे। इससे इसे क्या कष्ट हो सकता है? ज़रूर बात कुछ और ही है, जिसे तुम मुझसे छिपा रहे हो।"—पार्वतीजी बोलीं।

गौराजीने कहा—"पार्वतीजी, यह बात आसानीसे तुम्हारी समझमें नहीं आ सकती। वैसे तो प्रेमका होना सुख और स्वास्थ्यका लक्षण है; लेकिन आजकल प्रेमने एक रोगका रूप धारण कर लिया है। वह इस

तरह कि लोग प्रेम करनेके साथ-साथ यह भी इच्छा करने लगे हैं कि जिससे प्रेम हो वह भी वदलेमें प्रेम करे और जो-कुछ वह प्रेमी चाहे, उसका प्रिय उसे दे। प्रेममें लोग अब देनेकी जगह लेने और पानेकी इच्छा करने लगे हैं, इसीलिए प्रेम करनेके सुखको भूलकर वे प्रेम पानेकी इच्छाके दुःखमें कष्ट पाने लगे हैं। प्रेममें इस स्वार्थके घुस आनेसे अब वह एक रोग बन गया है। इस रोगकी विशेषता यह है कि यह रोगीके भीतर किसी तरहकी औषधको धँसने-लगने नहीं देता।"

पार्वतीजीने देखा, सचमुच उनके ख़ूनकी बूंदें उस युवकके मुखपरसे, चिकने घड़े परसे पानीकी बूँदोंकी तरह, ढुलककर उसके वस्त्रोंपर आ जमी थीं और मुखपर उनका ज़रा भी चिह्न न था।

"तो फिर चलो, उस लड़कीके दिलमें ही इस लड़केके लिए प्रेम पैदा करके इसका दुःख दूर किया जाय।"—पार्वतीजीने एक ठंडी साँस लेकर कहा।

"यह तुम क्या कह रही हो, पार्वतीजी !" गौराजीने मानो चौंककर कहा—"आज तुम अपनी हदसे बाहर जानेकी बात कैसे सोच रही हो? अपने बच्चोंकी स्वतन्त्र इच्छामें दख़ल देने और उसमें हेर-फेर करनेका तुम्हें कोई अधिकार नहीं है—क्या तुम इस बातको भूल गईं?"

पार्वतीजी सोचमें पड़ गईं। उन्हें मालूम था कि वे और सब-कुछ कर सकती हैं; लेकिन किसीकी इच्छाको बदलनेका उन्हें भी कोई अधिकार नहीं है। इसका थोड़ा-बहुत अधिकार अगर किसीको है, तो केवल सरस्वतीजीको ही है।

"चलो, यहाँ देर करनेसे कोई लाभ नहीं। इस लड़केके दुःखकी जड़ मूर्खता और स्वार्थमें है। इसका इलाज इसीके हाथमें है, किसी दूसरेके नहीं।"—गौराजीने कहा और पार्वतीजीका हाथ पकड़कर चलनेका इशारा किया।

"तुम जाना चाहो, तो जाओ; लेकिन कुछ भी हो, मैं अपने एक बच्चेको

दुःखमें तड़पता छोड़कर कैसे जा सकती हूँ ।"—पार्वतीजीने रुँधे हुए गलेसे कहा और गौराजीसे अपना हाथ छुड़ाकर उस नवयुवकके पलंगपर बैठ गईं । उनकी आँखोंसे दो बूँद आँसू निकलकर उसके मुखपर जा गिरे ।

युवकने करवट बदली । "माँ मेरी !" उसके मुँहसे न-जाने कैसे एक आह-भरी पुकार निकल गई और उस रात-भरके लिए वह सुखकी नींद सो गया ।

सुना है, उस रातसे जगत्-माता पार्वतीजी अक्सर अकेली ही दुनियाकी चिन्ताको निकलती हैं और जहाँ उनकी छिगुनीके खूनसे दुखियोंका दुःख दूर नहीं होता, वहाँ उनके दो बूँद आँसुओंसे ज़रूर कुछ समयके लिए दुनियावालोंको आराम मिल जाता है ।



# जरारि फल

पहली मधुरात्रिके चन्द्रालोकमें युवराज नीलनयनने सधे, साभार हाथोंसे राजवधू सर्वम्माका मुखावरण उठाया।

इतना सुन्दर मुख और उसकी आंखोंमें छलछलाये इतने हृदय-द्रावक आँसू युवराजने पहले कभी नहीं देखे थे।

"इस घड़ी ये आँसू, रानी!" युवराजने अपनी नई हृदयेश्वरीकी आँखोंमें आँखें डालकर पूछा। सर्वम्माकी उदास, करुणामयी मुखमुद्रासे उन आँसुओंकी वेदना-मयतामें सन्देहका कोई स्थान नहीं रह गया था।

"स्वामी!" सर्वम्माने उसीके अनुरूप आकुल स्वरमें उत्तर दिया।

"माँका बिछोह, पिताकी याद.."

"नहीं, स्वामी! सर्वम्माने ढलके हुए आँसुओंको आँचलके छोरमें लेते हुए कहा—"माता-पिता तो सभीके छूटते हैं और यह छूटना कोई छूटना नहीं है। जीवन रहते उनका स्नेह और सम्पर्क जब चाहे प्राप्त किया जा सकता है। मेरी चिन्ता दूसरी ही है।"

"चिन्ता! दूसरी! तुम्हें क्या चिन्ता है, रानी?" युवराजने विस्मयके स्वरमें पूछा।

"आप या मैं या हम दोनों ही एक दिन वृद्ध-जर्जर-शरीर हो जायेंगे। तब आजके रूप और यौवनके उल्लाससे भरे इस दिनकी याद कितनी कटीली बनकर हमारे हृदयोंमें कसकेगी! आजकी रात क्या एक भयानक छलनापूर्ण स्वप्न बनकर हमारे यौवन-पारके दिनोंको नहीं ग्रसेगी?"

"ये कैसी बातें तुम कर रही हो, मेरी रानी!" युवराजने अपनी हथेलीपर सर्वम्माकी ठोंढीको सहारते हुए कहा,—"यौवन और प्रेमके प्रथम मिलनके अवसरपर ऐसी बातें भी कोई सोचता है! यौवन उपभोग

के लिए है। उसके आगेकी अभीसे चिन्ताका कोई अर्थ नहीं हो सकता !"

"और कोई नहीं सोचता, पर मेरे पास सोचनेके लिए कारण है, युवराज !"

"कारण है ?" युवराजने जिज्ञासापूर्ण स्वरमें दुहराया।

"मेरे पिताको एक देवर्षिने उनकी सेवासे प्रसन्न होकर तीन जरारि फल दिये थे। उस फलका माहात्म्य यह है कि उसे खा लेनेसे उसके खानेवाले पर तथा उसकी सन्तति-परम्परापर बुढ़ापेका आक्रमण जीवनभर नहीं हो सकता। मेरे पिताकी उस समय पहली सन्तान मेरी सबसे बड़ी बहिन ही जन्म ले पाई थी। पिताने उन तीनों फलोंमें से एक उसे विवाहके समय दे दिया। दूसरा फल उन्होंने मेरी दूसरी बहिनको विवाहकी बिदाईके समय दिया और उसी प्रकार तीसरा मुझे दे दिया है। मेरी बड़ी बहिनने यह फल अपने पतिको खिला दिया। परिणाम-स्वरूप वह पूर्ववत् युवा और रूपवान बने हुए हैं; लेकिन मेरी बहिन आयु पाकर अब सर्वथा बूढ़ी और जर्जर हो गई है। उसके दाम्पत्य जीवनकी सरसताकी ही नहीं; पतिके साथ साधारण पारिवारिक मैत्री-सम्बन्धकी भी समाप्ति हो गई है। उसके पतिका प्रेम-सम्पर्क दूसरी युवतियोंके साथ चल रहा है। मेरी दूसरी बहिनने उस फलको स्वयं खा लिया था। वर्षोंके बीतनेके साथ-साथ उसका दाम्पत्य जीवन भी दूसरे पार्श्वसे असह्य और असाध्य हो उठा है। उसका अक्षय यौवन और रूप उसके लिए आशीर्वादके बदले अभिशाप बन गया है। देवर्षिने मेरे पितासे कहा था कि इन फलोंका लोक-हितके लिए सबसे बड़ा उपयोग करना और इसी आदेशके साथ मेरे पिताने ये फल हम तीनों बहनोंको दिये थे।" राजवधूने बताया।

"तो इसमें सोचनेकी बात क्या है, रानी ! हम दोनों ही मिलकर उस फलको खा सकते हैं !"

"यही तो हो नहीं सकता, युवराज ! एक पूरा फल एक व्यक्तिके ही काम आ सकता है और फिर इसमें लोक या वंशका कोई स्थायी हित भी

नहीं है। हमारे जामातृ-गण और कुल-बन्धुओंपर तो उसका प्रभाव नहीं पड़ेगा।"

"फिर भी, इसमें इतनी चिन्ता और उदासीकी बात क्या है ? उस फलका प्रयोग फिर कभी, कोई अच्छा प्रयोग सूझने पर कर लिया जायेगा। सारी चिन्ताके लिए यही तो एकमात्र अवसर नहीं है !" युवराजने कुछ आतुरभावसे कहा।

"यही अन्तिम अवसर है, आर्यपुत्र ! फलका उपयोग या उसके उपयोगका निश्चित संकल्प हमें आजकी रात बीतनेसे पहले ही कर लेना चाहिए। दाम्पत्य-मिलनके प्रथम अवसरपर यदि इसका प्रयोग या संकल्प न किया गया तो इसका प्रभाव जाता रहेगा।" सर्वम्माने कहा और उसकी मुख-मुद्रा एकदम गम्भीर, विचार-मग्न हो गई।

युवराजने पत्नीकी ओर एक पैनी दृष्टि डाली, किन्तु उसकी आँखें अन्यत्र ही किसी बिन्दुपर केन्द्रित थीं।

थोड़ी देर तक निस्तब्धता छायी रही।

सर्वम्माकी आँखें जगीं, होठोंपर मुसकानकी एक रेखा आई और नव-दम्पति प्रथम प्रणयके रस-पानमें निमग्न हो गये।

× × ×

सर्वम्माकी इच्छापर एक दिन राज-दरबारकी सभी नर्तकियोंके नृत्यका विशेष आयोजन किया गया।

सभी नर्तकियोंने अपनी-अपनी कलाका प्रदर्शन किया। मदश्रवा नामकी नवयुवती नर्तकीपर राजवधू सर्वम्माकी आँखें जा अटकीं। निस्सन्देह यही उन सबमें सबसे अधिक सुन्दरी, कला-निपुण और सौम्य-हृदया थी।

मदश्रवापर राजवधू सर्वम्माका कृपा-भाव बढ़ता गया। धीरे-धीरे यह उसकी निकटतम सहेली और एक प्रकारसे प्रधान परिचारिका बन गई। दरबारमें नृत्यका प्रदर्शन भी धीरे-धीरे कम करके उसने छोड़ दिया।

सर्वम्माके अनुरोधपर उसे उस कार्यसे विना किसी आपत्तिके अवकाश दे दिया गया।

राजमहलोंके समीप ही मदश्रवाके लिए एक अलग भवन बनवा दिया गया। सर्वम्माकी सहचारिताके साथ-साथ राजपरिवारकी कन्याओंको नृत्य-संगीतकी शिक्षा देनेका कार्य भी उसे सौंप दिया गया। राजनर्तकियोंके लिए यह नियम था कि चालीस वर्षकी अवस्थातक उन्हें अविवाहिता रहकर अपनी कलाद्वारा राजदरबारका मनोरंजन करना पड़ता था। तदुपरान्त वे दरबारसे जीविका-वृत्ति और अवकाश पाकर विवाह करके गृहस्थ जीवन व्यतीत करने या कलावृत्ति अथवा इच्छानुसार वेश्या-वृत्तिके लिए स्वतन्त्र होती थीं। मदश्रवा उस आयुपर पहुँचनेके वहुत पहले ही दरबारसे अवकाश पा चुकी थी। उसके रूप और यौवनने छहों राजकुमारोंको—सातवें सबसे बड़े युवराज नीलनयन सर्वम्मा-जैसी अनुपम सुन्दरी भार्याको पाकर उस नर्तकीके रूप-पाशसे सहज ही मुक्त हो चुके थे—अपने आकर्षण-पाशमें बाँध रक्खा था। उस समयकी राज-समाजकी मर्यादाके अनुसार विवाहके पश्चात् नहीं, किन्तु विवाहके पहले राज-कुमारोंको सीमाके भीतर यथेच्छ प्रेम-सम्पर्क स्थापित करनेकी स्वतन्त्रता थी।

मदश्रवाका अंक, और अंककी राह उसका आँगन, द्रुत-गतिसे बाल-गोपालों—पुत्रों-पुत्रियोंसे भरने लगा। अगले पचास वर्षोंमें—खोजी इतिहासकारोंका कहना है—मदश्रवा एकसे एक सुन्दर उन्चास पुत्र-पुत्रियोंकी माता बन गई।

राजरानी सर्वम्माने—अपने पिताकी मृत्युके पश्चात् यथासमय युवराज नीलनयन राजगद्दीपर बैठ चुके थे—अपने राज्यके एक कोनेपर कुछ जागीर देकर मदश्रवाके लिए एक नया उपनिवेश बसा दिया और वह अपनी सन्ततिको लेकर वहीं जा बसी।

महाराज नीलनयनने सुखपूर्वक बावन वर्षतक राज्य किया। उनके

राज्यमें प्रजा और भी अधिक समृद्ध हुई। नब्बे वर्षकी आयुमें सफल वृद्धत्वको प्राप्तकर अपनी भार्यासहित उन्होंने इस संसारसे विदा ली। उनके बड़े पुत्र युवराज चक्रधर राज्यासनपर बैठे।

महाराज नीलनयनका वंश फला-फूला। प्रजाके सुख समृद्धिमें भी वृद्धि हुई। इसी प्रकार ढाई सौ वर्ष और बीत गये।

× × ×

महाराजा चक्रधरके पौत्रके पौत्र, महाराज नीलनयनके आगे पाँचवी पीढ़ीके युवराज शीलवदनके राज्याभिषेकका समारोह सारे राज्यमें हो रहा था। राजधानी कीर्तिपुरी नव-वधू-सी सजी हुई थी।

राज्याभिषेक-मण्डपके द्वारपर एक नवयुवक अश्वारोहीने घोड़ा रोका।

"राजगुरुके लिए एक पत्र है" नवयुवकने द्वारपालको सूचना दी।

नवयुवकको सभा-मण्डपमें बुला लिया गया।

मोहरबन्द पत्रपर राजगुरुका पता लिखा हुआ था। राजगुरुने पत्र खोला। राजप्रपितामह महाराज नीलनयनके हस्ताक्षरों सहित यह लगभग तीन सौ वर्ष पहलेका लिखा हुआ एक राजकीय आज्ञापत्र था। लिखा था:—

"पत्रका वाहक युवक हमारे वंशका, मेरे छः छोटे भाइयोंमेंसे किसी एकका अंश है। अपनी वंश-माता महारानी मदश्रवाकी पुरुष-सन्ततिमें आठवीं पीढ़ीका यह सर्व-ज्येष्ठ कुमार है। मदश्रवा-वंशकी इससे पहलेकी सात पीढ़ियोंकी सन्ततिने यथानियम, अपने वंशकी परिधिसे बाहर विवाह-सम्बन्ध किये हैं; किन्तु आठवीं पीढ़ीसे इस वंशकी सन्ततिके विवाह इसी वंशके भीतर होंगे और पहली बार यह कुमार अपनी भार्या अपने वंशके भीतर ही चुनेगा। मेरे वंशके राज्य-सिंहासनका अधिकारी अपने समयपर यह कुमार ही होगा। मेरी रक्त-परम्पराका तत्कालीन सिंहासनाधिकारी वंशज इसमें सहर्ष सहयोग देगा, ऐसी मेरी आशीर्वादपूर्ण आशा है, तथा मेरी इच्छा और नियमित राजाज्ञाका पालन उस समयके मेरे कुलगुरु यथाविधि करायेंगे, ऐसा उनके चरणोंमें इस राज-दम्पतिका अनुरोध है।"

यह पत्रवाहक तेजस्वी नवयुवक—उसे उस पत्रके भीतरके लेखका कुछ भी अनुमान नहीं था—राज्य-सिंहासनपर यथाविधि आरुढ़ कर दिया गया।

उन्हीं गुप्त इतिहासकारोंका कहना है कि इस कथाका प्रारम्भकाल चार सौ वर्षोंसे अधिक पुराना नहीं है। मदश्रवा वंशका यह कुमार वज्रपाणि मदश्रवा इस समय उस छोटे-से राज्यके सिंहासनपर विद्यमान है। मदश्रवावंशकी जनसंख्या इस समय पचास सहस्रके लगभग है। कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि इस वंशकी सातवीं पीढ़ीतकके दम्पती-जोड़ोंमें एक आजीवन युवा रहता था और दूसरा जो इस वंशके बाहरसे आया हुआ होता था, वृद्धत्वको प्राप्त होकर मरता था। लेकिन इस आठवीं पीढ़ीसे उनके विवाह वंशके अन्तर्गत ही होनेके कारण अब इसके सभी परिजन आजीवन युवा ही रहेंगे। उन्हीं इतिहासकारोंका कहना है कि मदश्रवाने एक सौ पैंतीस वर्षकी आयुमें, पूर्ण युवावस्थामें शरीर छोड़ा था। उनका अनुमान है कि मदश्रवा वंशके लोग ही संसारके शासक-वर्गके लोग बनेंगे और उनका ही राजवंश सफलतापूर्वक फूले-फलेगा। यह राज्य संसारके किस कोनेमें है, इसका अभीतक स्पष्ट संकेत नहीं मिला।

इसमें तो कोई सन्देह नहीं किया जा सकता कि राज-महिषी सर्वम्माने राजनर्तकी मदश्रवाको यह जरारि-फल खिला दिया था और मदश्रवाने पूरे साध्वी-भावसे, छः राजकुमारोंसे बाहर अपना शरीर-सम्पर्क नहीं बढ़ाया था।

क्या यह असम्भव है कि दस-बीस हजार या दो-चार लाख वर्ष बाद
[redacted] मदश्रवा वंशके रक्तके मिश्रणसे आजीवन स्वस्थ
[redacted] -जैसे कि देवता लोग शायद अभी भी होते हैं ?
[redacted] ामके साथ-साथ सर्वम्माको भी लोग किसी रूपमें

———

# ज्ञानपीठके सांस्कृतिक प्रकाशन

**श्री० सुमेरुचन्द्र दिवाकर**
- महाबन्ध [१] १२)
- जैन शासन [द्वि० सं०] ३)

**श्री० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री**
- महाबन्ध [२] ११)
- महाबन्ध [३] ११)
- सर्वार्थसिद्धि १२)

**श्री० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य**
- तत्त्वार्थवृत्ति १६)
- तत्त्वार्थराजवार्तिक [१] १२)
- न्यायविनिश्चयविवरण १ १५)
- न्यायविनिश्चयविवरण २ १५)

**पं० पन्नालाल जैन साहित्याचार्य**
- आदिपुराण [भाग १] १०)
- आदिपुराण [भाग २] १०)
- उत्तरपुराण [भाग ३] १०)
- धर्मशर्माभ्युदय ३)

**पं० हीरालाल शास्त्री**
- वसुनन्दि-श्रावकाचार ५)
- जिनसहस्रनाम ४)

**पं० राजकुमार जैन साहित्याचार्य**
- मदनपराजय ८)

**श्री० गुलाबचन्द्र जैन, व्याकरणाचार्य**
- पुराणसारसंग्रह [१] २)

**पं० नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य**
- केवलज्ञानप्रश्नचूड़ामणि ४)

**पं० के० भुजबली शास्त्री**
- कन्नडप्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थसूची १३)

**प्रो० हरिदामोदर वेलणकर**
- सभाष्य रत्नमंजूषा २)

**पं० शम्भुनाथ त्रिपाठी**
- नाममाला [सभाष्य] ३॥)

**प्रो० ए० चक्रवर्ती**
- समयसार [अंग्रेजी] ८)
- थिरुकुरल [तामिल] ५)

**प्रो० प्रफुल्लकुमार मोदी**
- करलक्खण [द्वि० सं०] ॥)

**श्री भिक्षु धर्मरक्षित**
- जातकट्ठकथा [पाली] ६)

**श्री० कामताप्रसाद जैन**
- हिन्दी जैन साहित्यका संक्षिप्त इतिहास २॥=)

**श्रीमती रमा जैन**
- आधुनिक जैन कवि ३॥)

**पं० शोभाचन्द्र भारिल्ल**
- कुन्दकुन्दाचार्यके तीन रत्न २)

T
on th
anna
book



पहला कहानीकार.

پہلا کہانی کار

5255 : 19-5-53

7347 - 18-6-53

D.P. 44 : 13.6.64

5255 - 17.7.67

7232 - 8.3.86

B - 18 - 2 - 68

T
on t
anna
book



पहला कहानीकार.
پہلا کہانی کار

5255 - 19-5-3
7347 - 18-6-3
D.P. 44! 13.6
5255 - 17.7.67
7232 - 8.3.86
B - 18-2-60

A book borrowed must be returned within one month of its issue. It may be reissued for fifteen days, if not requisitioned by another member. Members residing outside Srinagar may return books within forty days of their issue.



